

मध्यएसिया का इतिहास

खण्ड १

राहुल सांकृत्यायन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

प्रथम मस्करण, वि० स० २०१३, सन् १९५६ ई०
सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल्य १०।।। सजिल्द १२।।

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

समर्पण

परगत डा० काशीब्रसाद जायसवालको
जिनकी स्मृति अठारह वर्षोंके अनन्त वियोगके बाद भी
मेरे जीवनकी प्रिय निधि है

वैभक्त०

“विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम्”

बिहार-राज्य के शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत यह परिषद् एक साहित्यिक सस्था है। अबतक इसके द्वारा दो दर्जन महत्वपूर्ण पुस्तको का प्रकाशन हो चुका है। उन्हे समस्त हिन्दी-ससार ने पसद भी किया है।

सन् १९५४ ई० में, बिहार के तत्कालीन शिक्षासचिव श्री जगदीशचन्द्र माथुर आइ० सी० एस० के अनुरोध से, परिषद् ने इस पुस्तक का प्रकाशन स्वीकृत किया था। किन्तु परिषद् की स्वीकृति से पूर्व ही इसके दूसरे खण्ड के कई फार्म लखनऊ में छप चुके थे। तब भी, हिन्दी में ऐसी पुस्तक का अभाव और एक अधिकारी विद्वान् द्वारा उस अभाव की पूर्ति का सत्प्रयास देखकर, परिषद् ने अपने नियमों के अपवाद-स्वरूप, विशेष परिस्थिति में, वह स्वीकृति दी थी।

इसलिए कि लेखक ने इस पुस्तक के दूसरे खण्ड की छपाई पहले ही शुरू करा दी थी, इस पहले खण्ड की पाण्डुलिपि भी—दोनों खण्डों की एक-सी छपाई कराने के विचार से—लखनऊ भेज दी गई। परन्तु कुछ अनिवार्य कारणों से जब दूसरे खण्ड की ही छपाई में विलम्ब होने लगा, तब प्रस्तुत खण्ड को पहले ही प्रकाशित करना आवश्यक समझा, प्रयाग में इसकी छपाई का प्रबन्ध करना पडा, क्योंकि इसके लिए लखनऊ में खरीदा हुआ कागज भी प्रयाग भेजना था।

हम चाहते थे कि दोनों खण्ड एक साथ ही प्रकाशित हो। पर दूसरा खण्ड इससे कुछ बडा है। फिर भी हम उसे अविलम्ब प्रकाशित करने में प्रयत्नशील हैं। आशा है कि वह भी शीघ्र ही पाठको की सेवा में पहुँचेगा। तबतक इस खण्ड का पहले निकल जाना उचित ही हुआ।

इस पुस्तक में विभक्तियों के चिह्न सर्वत्र शब्दों के साथ लगे हुए हैं। परिषद् की अन्य पुस्तको में ऐसा नहीं है। किन्तु इस पुस्तक के दूसरे खण्ड के कई फार्म जैसे पहले छप चुके थे वैसे ही इस खण्ड के भी छपवाने पडे। कारण, दोनों खण्डों की छपाई में समता रखना आवश्यक प्रतीत हुआ। विभक्तियों को शब्दों से हटाकर या सटाकर लिखने-छापने की परिपाटी आज भी हिन्दी-जगत् में प्रचलित है। अतः पहले के छपे हुए पृष्ठों को नष्ट करके परिषद् की परम्परा के अनुसार पुनः नये सिरे से छपाई शुरू कराना हमने अनावश्यक समझा, क्योंकि पुस्तक के महत्त्व में इसमें कोई बाधा नहीं पडी है।

अस्तु। भारत का इतिहास पढने पर प्रायः ऐसा अनुभव होता है कि मध्य एशिया के इतिहास में भारत के इतिहास की कितनी ही घटनाएँ सम्बद्ध हैं। परन्तु हिन्दी में मध्य एशिया के कुछ देशों के भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विवरण तो मिलते हैं, सम्पूर्ण मध्य एशिया का क्रम-बद्ध इतिहास नहीं मिलता। इसलिए अनेक ऐतिहासिक जिज्ञासाओं का समाधान नहीं हो पाता था। आशा है कि अब यह पुस्तक भारत और उसके पड़ोसी देशों के इतिहास की शृंखला को अटूट सिद्ध करके पाठकों को सन्तुष्ट करेगी।

इस पुस्तक के समर्थ लेखक महापण्डित श्री राहुल माकृत्यायनजी अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् हैं। इस युग के आप एक धुरन्धर साहित्यकार हैं। साहित्यिक शोध का क्षेत्र आपके अनवरत अनुसन्धानात्मक परिश्रम एवं लेखनी-मंचालन से बहुत उर्वर हुआ है। आपकी अथक लेखनी ने किन्ने ही ऐसे विषयों को सनाथ किया है, जिनकी ओर हिन्दी-संसार के विद्वज्जनो का ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ था। अतः हिन्दी-साहित्य आपकी खोज की लगन और देन में बहुत लाभान्वित हो रहा है। विश्वास है कि यह पुस्तक भी हिन्दी-साहित्य के एक चिर-अनुभूत अभाव की पूर्ति करेगी तथा ऐतिहासिक शोध के कामों में भी सहायक होगी।

दीपावली, मवत् २०१३ वि०

शिवपूजन सहाय
(संचालक)



लेनिन

भूमिका

भारतके इतिहास की जगह मध्य एशियाके इतिहासपर मैंने क्यों कलम उठाई, यह प्रश्न हो सकता है। उत्तर आसान है। भारतके इतिहासपर लिखनेवाले बहुत हैं। जिसका अभाव है, उसकी पूर्ति करना जरूरी था, यही विचार इस प्रयासका कारण हुआ। अपनी यात्राओंमें मैं रूस और मध्य-एशियाके सम्पर्कमें आया, उनके ऊपर कितनी ही पुस्तके लिखी और अनुवादित की। उसी समय विचार आया, आधुनिक ऐतिहासिक घटनाओंको पिछले इतिहासकी पृष्ठभूमिमें देखना चाहिये। इस तरफ आगे बढ़ा, तो यह भी मालूम हुआ, मध्य-एशियाका इतिहास हमारे देशके इतिहाससे बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। द्रविड (फिनो-द्रविड) जाति—जिसने मोहनजोडरो और हड़प्पाके भव्य नगर और यशस्वी सिन्धु-सभ्यताको प्रदान किया—का सम्बन्ध मध्य-एशियासे भी था। हालके पुरातात्विक अनुसन्धान बतलाते हैं, कि आर्योंका सम्पर्क द्रविड जातिसे सबसे पहले सिन्धु-उपत्यकामें नहीं, बल्कि ख्वारेज़्ममें हुआ था। वहां पराजित करके उनका स्थान ले आर्य भारतकी ओर बढ़े। उनका बढ़ाव पिछली विजित भूमिको बिना छोड़े आगे की तरफ होता रहा, इसीलिये भारतीय आर्योंकी परम्परा में अपने-पुराने छोड़े हुये स्थानका उल्लेख नहीं पाया जाता। आर्योंकी अनेक लहरोंके बाद ग्रीक लोगोंने भी बास्त्रियासे आकर भारतके कुछ भाग पर शासन किया। शक-कुषाण भी वहांसे ही होकर आये। तथाकथित हूण—हेफ्ताल—भी मध्य-एशियासे भारतकी ओर बढ़े। तुर्क और इस्लाम भी वहांसे चलकर भारत आया। इन शासकों और उनकी जातियोंके इतिहासका एक भाग मध्य-एशियामें पडा रहा, जिसे जान बिना हम अपने इतिहासको समझनेमें गलती कर बैठते हैं। इस दृष्टि से भी मुझे इस पुस्तकके लिखनेकी प्रेरणा मिली।

यद्यपि मैं अपने इतिहासको मध्य-एशिया—अर्थात् मुख्य चीन, भारत-अफगानिस्तान, ईरान, कास्पियन समुद्र और रूस द्वारा घिरी हुई भूमि—तक ही सीमित रखना चाहता था, लेकिन इतिहासकी नदी बहुत ट्रेडी-मेडी बहती है, जिसके कारण मुझे इन सीमांत देशोंके इतिहास में भी कहीं-कहीं भटकना पडा। वैसे न करनेसे विषयके समझनेमें कठिनाई होती।

नामोंके उच्चारणमें हिन्दीमें अभी हमारी कोई परंपरा नहीं बनी है, विशेषकर उन नामोंके बारेमें, जो कि पहली बार इस पुस्तकमें आ रहे हैं। अग्रेजों और अंग्रेजोंका उच्चारण सबसे श्रेष्ठ होता है, इसलिये मैंने उससे बचनेकी कोशिश की है। जर्मन इसके बारेमें ज्यादा अच्छे रहते हैं, और अपनी अधिक उच्चारणानुरूप लिपिके कारण रूसी सबसे अच्छे हैं। पर, मूल भाषाओंकी लिपियोंमें जो दोष हैं, उसे वह कैसे दूर कर सकते हैं? मंगोल लिपिमें मुद्रिकलसे डेढ़ दर्जन अक्षर हैं। वहां क, ग, और ह में कोई अन्तर नहीं है। कगान, खगान, हगान, हकान चाहे जिस तरह एक ही लिखे शब्द को पढ़ लीजियें। चीनी नामोंके उच्चारणमें भी ऐसी कठिनाई है। इसके अतिरिक्त पुस्तककी छपाई जिस निराशाजनक परिस्थितियोंमें वर्षों तक-रुक

कर हांती रही, उसके कारण मैं नामोंके एक समान उच्चारणको बराबर इस्तेमाल नहीं कर सका । इस तथा दूसरी बातोंमें भी विषय-सूचिमें दिये गये रूपको अन्तिम मानना चाहिये ।

पुस्तककी सामग्रीका बहुत बड़ा भाग मैंने रूसमें अपने दो सालके प्रवास (१९४५-४७ ई०) में जमा किया । इसमें शक नहीं, मध्य-एशियाके इतिहासकी जितनी सामग्री रूस और रूसी भाषामें है, उतनी अन्यत्र नहीं मिल सकती । जिस तत्परतासे वहा ऐतिहासिक और पुरातात्विक अनुसन्धान हो रहे हैं, उनके कारण हर साल नई-नई सामग्री प्राप्त हो रही है । अफसोस है १९४७ के बादकी उपलब्ध सामग्रीमें बहुत कम हीका इस्तेमाल मैं कर सका । प्रो० तालस्तोफ कई वर्षोंसे पुरातात्विक अभियानोंके नेता होते रहे हैं । इस विषयमें—विशेषकर ख्वारेज्म, कसकुम और किजिलकुमकी भूमिके सम्बन्धमें—उनका ज्ञान अद्भुत है । सप्तनदके बारेमें डा० वेर्न्स्तामका अध्ययन मभीर है । इन दोनों विद्वानोंसे जब-जब मुझे मिलनेका मिला, उन्होंने समय और ध्रमका कुछ भी न खयाल करके दिल खोल कर अपने ज्ञानसे लाभ उठानेका मुझे अवसर दिया । इसका उल्लेख मैं अपनी यात्रा-पुस्तक “रूसमें पच्चीस मास” में कर चुका हू । मैं अपनी कुछ कल्पनाओंमें उतना आग्रहवान् न होता, यदि उनके साथ विचार-विनिमयके बाद उनमें सार न रता । मध्य-एशियाका इतिहास लिखनेके अधिकारी सोवियत् विद्वान् ही हो सकते हैं, लेकिन अभी वह भिन्न-भिन्न कालों और अशोपर ही अनुशीलन कर रहे हैं । न मालूम कब तक वह इस अनुशीलनको क्रमबद्ध इतिहासके महाग्रन्थके रूपमें परिणत करेंगे । उस ग्रन्थके तैयार होने तक मेरे इस प्रयासका मूल्य रहेगा ही ।

दो सालके बाद रूससे भारत चले आनेका एक बड़ा कारण सगृहीत सामग्री और अध्ययनको पुस्तकके रूपमें लानेका खयाल था । मैंने वहा चार-पाच मन पुस्तकें जमा की थी । इनके अतिरिक्त दो वर्षमें पढी पुस्तकोंसे बहुत से नोट लिये थे । वहा रहते पुस्तक लिखनेपर वह प्रेसका मुह देख सकती, इसमें पीछेके तर्जबेने भी सन्देह पैदा कर दिया । इन्हीं पुस्तकोंको सुरक्षित लानेके खयालसे मैं अफगानिस्तानके छोटे रास्तेको छोड़ इंगलैण्ड होते भारत लौटा । यदि सीधे रास्ते लौटा होता, ता अगस्त १९४७ में पश्चिमी पाकिस्तानमें आता, फिर न मालूम सामग्री और सग्राहक पर क्या बीतती ?

इतनी बड़ी पुस्तकको छापनेवाले मिलने मुश्किल थे । एक प्रकाशकने पहिली जिल्दके बीस-पचीस पृष्ठ कम्पोज कर लिये, और दूसरी जिल्दको नेशनल हेरल्ड प्रेसमें छापनेके लिये दिलवा दिया; पर अन्तमें यह भार उनको अपनी शक्तिसे बाहर मालूम हुआ । नेशनल हेरल्ड प्रेसने मेरी जिम्मेवारीपर उस जिल्दको छापना शुरू किया, जिसके लिये कागज भी मैं दे चुका था । पहलेवाले प्रकाशकके हाथ ढीला करनेपर यह सारा बोझ मुझे बर्दाश्त करना पडा—और वह पहला नहीं दूसरा खड था । श्री जगदीशचन्द्र माथुरने पुस्तककी पाण्डुलिपिको देखकर इसे बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्को देनेके लिये कहा । पर पहिले तो पहलेवाले प्रकाशकको तैयार करना था, जिन्हे मैं वचन दे चुका था । वह राजी हुये । बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्ने प्रकाशित करनेकी इच्छा प्रकट की, जिसमें श्री जगदीशचन्द्र माथुर और परिषद्के सचालक-मण्डल ने जो प्रयत्न किया, वह न होता, तो पुस्तककी सद्गति कीडे-मकोडे ही करते ।

पुस्तकका पहला जिल्द सम्मेलन मुद्रणालय प्रयागमें छपा है, और दूसरा नेशनल हेरल्ड प्रेस लखनऊमें । सम्मेलन मुद्रणालयके अध्यक्ष श्री सीताराम गुटे अपनी चुस्ती और कार्य-

CONTENTS

ix

xi

	Sloka	Sloka
समस्तव्यस्यरूपक (गङ्गास्य उद्वृत्तस्य द्वावृत्तस्य च)	67	146
सकलरूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तस्य उद्वृत्तं)	69	148
अवयवरूपक (अक्षय्यं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	71	150
अवयविरूपक (अक्षय्यं उद्वृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	72	152
पञ्जररूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	74	154
युक्तरूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	76	156
अयुक्तरूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	77	158
विषमरूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	78	160
सविशेषणरूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	80	162
विरुद्धरूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	82	164
हेतुरूपक (अक्षय्यं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	84	166
स्मिष्टरूपक (अक्षय्यं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	86	167
उपमाव्यतिरेकरूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	87	178
आक्षेपरूपक (अक्षय्यं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	90	180
समाधानरूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	91	182
रूपकरूपक (अक्षय्यं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	92	
नव्यापहरूपक (अक्षय्यं द्वावृत्तं गङ्गास्य उद्वृत्तं)	93	83

	Sloka
दीपक (गणना'सुद)	96
मालादीपक (सुद वरि गणना सुद)	106
विरुद्धार्थदीपक (गणना'वरी' र्क'सुी' गणना सुद)	108
एकार्थदीपक (र्क'गठिग गणना'सुद)	110
स्त्रिष्टार्थदीपक (सुद वरि' र्क'सुी' गणना सुद)	112
आवृत्तिभेद (वल्लेद वरि सुद व)	115
आक्षेपभेद (गणना'सुद सुद व)	119
धर्माक्षेप (क्क'गणना'व)	127
धर्म्याक्षेप (क्क'उव गणना व)	128
कारणाक्षेप (सु गणना व)	130
कार्याक्षेप (गणना सु गणना'व)	133
अनुज्ञाक्षेप (क्क'गणना'गणना'व)	134
प्रभुत्वाक्षेप (गणना'गणना गणना'व)	.. 136
अनादराक्षेप (ग'गणना'व गणना'व)	138
आशीर्वाचनाक्षेप (गणना वल्लेद'गणना' गणना व)	140
परुषाक्षेप (सुव क्क' गणना'व)	. 142
साचिन्व्याक्षेप (गणना'गणना'गणना' गणना'व)	... 144

	Sloka
यत्नाक्षेप (२२८'२२९' २३०'२३१'२३२')	146
परवशाक्षेप (२३३'२३४' २३५'२३६'२३७')	148
उपायाक्षेप (२३८'२३९' २४०'२४१'२४२')	150
रोपाक्षेप (२४३'२४४' २४५'२४६'२४७')	152
अनुक्रोशाक्षेप (२४८'२४९' २५०'२५१'२५२')	154
अनुशयाक्षेप (२५३'२५४' २५५'२५६'२५७')	156
संशयाक्षेप (२५८'२५९' २६०'२६१'२६२')	158
श्लिष्टाक्षेप (२६३'२६४' २६५'२६६'२६७')	160
अर्थान्तराक्षेप (२६८'२६९' २७०'२७१'२७२')	162
हेत्वाक्षेप (२७३'२७४' २७५'२७६'२७७')	164
अर्थान्तरन्यास (२७८'२७९' २८०'२८१'२८२')	166
अर्थान्तरन्यासभेद (२८३'२८४' २८५'२८६'२८७' २८८'२८९')	167
व्यतिरेक (२९०'२९१' २९२')	177
एकव्यतिरेक (२९३'२९४' २९५'२९६'२९७')	178
उभयव्यतिरेक (२९८'२९९' ३००'३०१'३०२')	180
सश्लेषव्यतिरेक (३०३'३०४' ३०५'३०६'३०७')	182
साक्षेपसहेतुव्यतिरेक (३०८'३०९' ३१०'३११'३१२' ३१३'३१४')	183
ग्री' श्लेषा'२९३')	

	Sloka
प्रतीयमानसाद्दृश्यव्यतिरेक (ह्येवमस्य च सत्त्वस्य च ह्येवमस्य च)	186
सादृश्यव्यतिरेकभेद (सत्त्वस्य च ह्येवमस्य च सत्त्वस्य च ह्येवमस्य च)	189
विभावना (ह्येवमस्य च)	196
समासोक्ति (सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च)	202
समासोक्तिभेद (सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च ह्येवमस्य च)	205
अपूर्वसमासोक्ति (ह्येवमस्य च सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च)	210
अतिशयोक्ति (सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च)	211
अतिशयोक्तिप्रशंसा (सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च ह्येवमस्य च)	217
उत्प्रेक्षा (सत्त्वस्य च)	218
उत्प्रेक्षाव्यञ्जकशब्द (सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च ह्येवमस्य च)	231
हेतुभेद (सत्त्वस्य च)	232
सूक्ष्म (सत्त्वस्य च)	257
लेश (सत्त्वस्य च)	262
क्रम (सत्त्वस्य च)	270
प्रेयरसवदूर्जखिलक्षण (सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च ह्येवमस्य च)	272
पर्यायोक्त (सत्त्वस्य च सत्त्वस्य च)	292

CONTENTS

xiii

	Sloka
समाहित (गुरुऽनुसङ्गः)	295
उदात्त (शुःके)	297
अपह्नुति (सङ्कोचऽङ्गः)	301
श्लेष (सुऽपः)	306
श्लेषभेद (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	311
विशेषोक्ति (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	320
तुल्ययोगिता (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	327
विरोध (सङ्गऽपः)	330
अप्रस्तुतप्रशंसा (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	337
व्याजस्तुति (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	340
निदर्शन (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	345
सहोक्ति (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	348
परिवृत्ति (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	348
आशिसु (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	354
संसृष्टि (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	356
संसृष्टिभेद (सुऽपऽङ्गीऽङ्गः)	357

	Sloka
भाविक (दशोदस'प उव)	360
भाविकभेद (दशोदस'प'उव'श्री' दसु'प)	361

CHAPTER III

यमक (उद उव)	1
गोमुत्रिका (व लद'प'उव)	78
अर्द्धभ्रम (सुदे लसे'प)	80
सर्वतोभद्र (गुण'दु वउद से)	80
स्वरस्थानवर्णनियम (दसुदस दद'प'उव दद यी'प'क'स'प'श्री' देस'प)	83
प्रहेलिका (पव के'प)	96
प्रहेलिकास्थान (पव के'प'प' प'उव'प)	97
समागता प्रहेलिका (गुण'दु'के'प'स'प'दे' प'व'के'प)	91
वञ्चिता प्रहेलिका (वसु'प'दे' प'व'के'प)	91
व्युत्क्रान्ता, (दे'प'प' सु'प'प)	99
प्रमुषिता (स'प'उव'स)	99
समानरूपा (लसु'प'प'दे' प'उव'प'स)	100
परुषा (सु'प'से)	100
सख्याता (सु'द'स'श्री'द)	101

CONTENTS

xv

	Sloka
•प्रकल्पिता (२५ वक्ष्यन्ति)	101
नामान्तरिता (श्री २५ २५ २५)	102
निवृत्ता (वक्ष्यन्ति)	102
समानशब्द (वक्ष्यन्ति)	103
समूह (वक्ष्यन्ति)	103
परिहारिका (वक्ष्यन्ति)	104
एकच्छन्ना (वक्ष्यन्ति)	104
उभयच्छन्ना (वक्ष्यन्ति)	105
संकीर्णा (वक्ष्यन्ति)	105
दोषविभाग (वक्ष्यन्ति)	125
अपार्थ (वक्ष्यन्ति)	128
व्यर्थ (वक्ष्यन्ति)	131
एकार्थ (वक्ष्यन्ति)	135
ससशय (वक्ष्यन्ति)	139
अपक्रम (वक्ष्यन्ति)	144
शब्दहीन (वक्ष्यन्ति)	148
यतिभ्रष्ट (वक्ष्यन्ति)	152

PREFACE

It is not without a feeling of joy that I am offering in the following pages a new edition of the *Kāvya-darśa* of D a n d i n . It is on the basis of a Tibetan manuscript, a portion of which was copied out by the late R a i S a r a t C h a n d r a D a s Bahadur, C I E I rejoiced not only to get hold of but to utilize D a s ' s manuscript preserved in the University Tibetan SeminaI . The *Kāvya-darśa* was translated into Tibetan by Ś r ī l a k s m ī k a i a and S o n s t o n . L o . t s ā b a and others in the great Sa-skya monastery of Western Tibet. It is collected in Tanjur, Mdo, Vol. Se of the Sde.dge. edition, C o r d e r , III, p 465. This xylograph contains both the transliteration of the Sanskrit text in the Tibetan script as well as its Tibetan translation . The Sanskrit text presented in this volume is taken from this xylograph. It is compared with the Tibetan version . There is also an independent Tibetan commentary on the text by M i p h a m . d g e l e g s r n a m r g y a l . As it came into my hands when the printing of the present text neared its completion, it could not be utilized by me .

Of the different editions of the Sanskrit text of the *Kāvya-darśa* I have mainly used that of the Bibliotheca Indica, 1863.

The manuscript from which the xylograph was made appears to have been written by more than one hand, so there is a lack of uniformity in the xylograph. In order to give an idea of the method of transcribing the Sanskrit text adopted by the scribe I have followed him excepting some cases noted below

In Buddhist Sanskrit texts at the end of a sentence *m* is generally changed to *anusvāra*. This is, however, not always found in the present work. The consonants after *r* are sometimes found doubled, e.g., I. 95 उद्गीर्ण , 103 मार्ग , II. 9 वरण , 10 घूर्णितेक्षणः , etc. Though such 'doubling of consonants is sanctioned by the rules of grammar, I have dispensed with it in this edition. Besides, there are several inaccuracies that have been corrected by me, e.g.

Chap I 30^a श्रुि for श्रुिः , 42^a एषा विपर्यय for एषाम्बिपर्यय , 83^a बध्नन्त्योजखिनीगिरि , for बध्नन्त्योजखिनीगिरि 90^a °पातधौत for °पात.धौत

Chap. II 5^a उत्प्रेक्षा for उत्प्रेक्षो , 6^a व्याज for व्यज , 11^a बध्नन्नेषु for वध्नन्नेषु , 14^a प्रपञ्चोर्यं for प्रपञ्चार्यं , 20^a पद्मन्तावत् for षड्मन्तावत् , 24^a ^b पद्मं सुभ्रु for पद्मसुभ्रू , 27^a निर्यायोपमा for निर्ल्योपमा , 28^b स्रज्ज for स्रज्जस्य , 38^a प्रभासारः for प्रभासार , 47^a पारिजातस्य for परिजात. , 49^a रक्षायै for राक्षायै , 49^a सावलेपा for सावलेया , 54^a सौभाग्यं for सौभग्यं . 58^a संवादि for सम्बादि ; 81^a स्रुिः for स्रुिः , 87^a रूपकद्वितयं for रूपकाद्वितयं , 100^a दैवतर्धयः for दैवतर्धय , 120^a पुष्यै for पौष्यै , 152^a अयतापि for अयातापि , 156^a सकलं वयः for सकलम्बयः ; 158^b किंवा for किम्बा , 159^a °संवादि for °सम्बादि , 165^a दिशान्येपि for दिशान्येपि , 188^a र्दृग् for र्दृग् , 234^a उद्विष्टं for हृष्टं , 274^b वृत्तिः for वृत्ति , 281^a स'त्य for स'त्यस्य ; 302^a मृगाक्षि for मृगाक्षि , 329^a मृगाक्षीणा for मृगाक्षीनान्.

Chap III 8^a किन्निवद for कीन्निद , 23^a दशा for देशां , 118^a कलभाषिणि for कलभाषिणी ; 134^a श्रुि for श्रुिः , 174^{a-b} संस्कृताभङ्ग [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for संस्कारभङ्गं सत्येन च क्षिताहिवै ; 176^{a-b} गतिर्न्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र

दृश्यते for न्यायावपि च विरोधमादर्शिता यमत्यं—which can in no way be supported The Tibetan text supports the reading in the printed text. 176°-¹ अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते for अथागमविरुद्ध ते प्रवेशावपि दर्शिता—which does not give any suitable sense, nor is correct grammatically

Sanskrit readings found in the Tibetan xylograph differ in many places from those known to us in the printed edition referred to, e g

Chap I 1° दीर्घं for नित्यं , 2^b उपलक्ष्य for उपलभ्य , 10^b अलंकार for अलंकारा , 12° विविचूणा for तित्तीर्षूणा , 13° अंश for अंग , 15° आयत्तं for उपेतं , 19¹ सर्गान्तै for वृत्तान्तै , 19^b रजनं for रज्जकं , 20^b वर्ज्यते for दुष्यति , 22^d कथनं for वर्णनं , 25^d कारण for लक्षणं , 26^b साश्वासत्वं for सोच्छ्वासत्वं ; 27¹ आश्वास for उच्छ्वास , 29¹ न ते for नैते , 32^d आप्ता. for आर्या , 36^b स्थिति for स्मृता , 35° शास्त्रे for शास्त्रेषु , 37^b स्कन्धकादि यत् for स्कन्धकादिक , 37¹ ओसरादीनि for आसारादीनि , 38¹ कथादि for कथाहि , 38^b पठ्यते for व-यते , 38° त्वाहु for प्राहु ; 39^a शाम्यादि for शल्यादि , 42^d लक्ष्यते for दृश्यते , 49¹ आननं for मुखं , 50° वृत्ते for वृद्धे ; 51^b स्थित for स्थिति ; 52° तद्रूपादि for तद्रूपाहि , 53° तदा for ततः , 54^d ईप्सितं for इष्यते , 57^d कर्तुं for हन्तु , 63¹ वैरस्यायैव कल्पते for वैरस्याय प्रकल्पते , 67^a परं for खरं ; 69° हि for तु , 71^d मुखं for मनः , 72¹ क्षपित for क्षयित . 78° अन्यच्च for अन्यत् , 85^d विद्यते for दृश्यते , 89^d यथा for जनाः , 97^d मतो for स्मृतो , 99° इह for इमे , 99¹ अन्यत् for अप्यत् .

Chap II 2° प्रतिसस्कर्तुम् for परिसस्कर्तुम् ; 3^d अद्य for अन्यत् ; 6^a श्लिष्ट for श्लेष , 7^b संसृष्टि. for सङ्कीर्णम् ; 10° परिक्षिप्य for परिभ्रम्य , 14^d प्रदर्शयते

for निदर्शयते , 15^d प्रकाशनात् for प्रदर्शनात् , 17^v त्वद् for तव , 28^d मता for स्मृता , 30¹ मता for स्मृता , 31^d इष्यते for उच्यते , 33^d उदिता for मता , 40^d प्रथयन्ती for बोधयन्ती , 42^d एव सा for मता , 48^v समाह्वय for समीकृत्य , 50^d स्मृता for मता , 54^a इत्येवमादि for इत्येवमादीं , 54^v च for एव , 56^b त्वत् for तत् , 60^b अन्यूनार्थवाचिन for अन्यूनार्थवादिनः , 62^a संरुन्धे for सन्धत्ते , 64^d सादृश्यसूचिन for सादृश्यसूचका , 65^b इष्यते for उच्यते , 71^a धर्म्माम्बु for धर्म्माम्भ' , 74^o मुग्धे for मुग्ध , 75^b च for अपि , 82^d पश्यति for कल्पते , 97^o नवाय च नताङ्गीना for स एवावनताङ्गीना , 100^d देवतर्धयः for दैवतर्धय , 105^a वर्णात्पल for नीलोत्पलं , 113^b अपि for तथा , 114^o अनुगति for अवगति , 115^b इत्यपि for एव च , 116^b कुटजोद्गमा for कुटजद्रुमा , 117^b वर्ग for वृन्द , 117^o अद्य for एष ; 118^a अद्य for अत्र , 128^d तत्र नाश्रय for न तदाश्रय , 129^o अत्र for एव and तद् for यद् , 132¹ न्वह for न्विदं , 137^a प्रत्याचक्ष्णाण्या for इत्याचक्ष्णाण्या , 137^b विबन्धिन for अनुबन्धिन , 137^d ईदृश for उच्यते , 144^d प्रतिबन्धिन for परिपन्थिनः , 145^d एकान्तरक्त्या for एवानुरक्त्या , 146^b मत्प्रियं for त्वत्प्रियं and त्वत्प्रियैषिणी for मत्प्रियैषिणी , 149^d उपसूचनात् for उपदर्शनात् , 153^d निवार्यते for निषिध्यते , 154^d जीर्ण for नीलं , 161^o दर्शयित्वेति for दर्शयित्वेह , 162^b तृप्यति for शाम्यति , 163^b अयं निवर्त्यते for यन्निवार्त्यते , 172^a आह्लादयति for आनन्दयति , 180^d च्छवि for द्युति ; 182^v इयता for अयन्तु , 182^d जलात्मा for जडात्मा , 186^d सोनुविधीयते for सोप्यभिधीयते , 190^d लोलदृष्टि for लोलनेत्र , 192^b वियदम्भसो' for चन्द्रहसयोः , 192^d चन्द्रहसयो for वियदम्भसो , 195^d अदर्शयत् for अदर्शयत् , 197^o सूक्ष्म for शुद्ध , 199^b हेतुकं for हेतुजं , 207^o सच्छाय for सुच्छायः

215^c अनुपपत्त्यैव for नोपपद्यते , 215^d स्थिते. for स्थिति , 219^d उत्सुक for उद्यत , 222^c चैवन्तु for चेत्येव , 222^d कथ्यते for वर्यते , 224^b जन्यते for जायते , 226^d अनुन्मत्तो for उन्मत्तो , 230^d उत्प्रेक्षित for उत्प्रेक्षत and इतीष्यते for इतीष्यता , 236^d मनोज्ञारोचके for मदनाग्न्यातुरे , 240^b कृता for भ्रिता , 243^d व्याक्रियन्ते for व्याह्रियन्ते , 245^d आश्रये for आश्रमे , 260ⁱ त्वदर्पित for मदर्पित , 266^c एव for एष , 276^d अनुगम्यता for अवगम्यता , 277^c सैवावन्ती for सैषा तन्वी , 283^c देवी for तन्वी , 291^d इति मुक्त for एवमुक्त्वा , 295^b दैवबलात् for दैववशात् , 296^a तस्या for अस्या , 296^b नमस्यतः for पतिष्यत , 300^c अतिव्यक्त for इति प्रोक्त , 302^d शीता क्लि for मयि शीता , 304^b नाम नो for नामतो , 311^c वा for च , 323^c कुलं for बल 325^d जगन्नयं for नभस्तल , 326^d कल्पयते for कल्पने , 327^d स्मृता for मता , 329^b अपि for च , 335^d लोचनम् for लोचने , 337^d अप्रकान्तेप्सिता for अप्रकान्तेषु या , 344^d प्रविस्तर for विस्तर , 346^c एव for एष , 348^b सह-भावस्य for सहभावेन , 348^d यथा for स्मृता , 349^c पारडरा for पारडुरा , 350^d अश्रुभि for असुभि , 352^d निरूपण for निदर्शनं , 353^d पारडर for पारडुरं , 355^d कीर्तितं for दर्शितं , 356^d संसृष्टि कथ्यते पुन for सङ्कीर्णान्तु निगद्यते , 360^d य. स्थित for संस्थित .

Chap III 6^b साम्प्रतं for सत्पतिं , 8^d किन्निवद for क्लि ते , 21^c वा for च , 38^b ईषिता for ईहिता . , 41^c आमोद for आनन्द , 41^d न मे फलं किञ्चन for प्रयोजनं नास्ति हि ; 55^d तापनेन for तायनेन , 63^d पिष्टपस्य for विष्टपस्य , 80^a आहु. for प्राहु , 111^d तायवो for वायवो , 117^a जन for नरं , 119^b र्षा for क्रुधा ; 127^b च for वा , 129^{a-b} सोयमहमद्य for देवैरहमस्मि , 129^d ऐरावत. for ऐरावण. ; 132^a कुलं for बलं , 132^c न च ते कोपि for तव नैकोऽपि , 137^d

अलङ्कृति for अलङ्किया , 145^b अजा for अमी , 146ⁱ न दोषं सूरयो यथा for सूरयो नैव दूयण , 153ⁱ एष for एव 156^c यत्र for तत्र , 158^d विसुक्ता for विसुक्ता , 158^e मदनबाणा for स्मरस्य बाणा , 158ⁱ मृगेक्षणा for वामेक्षणा , 160^d अस्मन्मनस्यपि for अस्मद्गुप्यपि , 161^a न्यक्त for न्यस्त , 165^a अस्पर्शा for अमर्श , 174^{a-b} सुगतै सस्कृताभङ्ग . [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for सत्यमेवाह सुगत . संस्कारानविनश्वरान् , 176^d प्रवेश उपदिश्यते for प्रस्थानमुपदिश्यते , 184^b सकल for सफल and निष्कल for निष्फल . , 185^b कन्यका for पुत्रिका

The differences between our readings of the text and those of Dr F W T h o m a s (JRAS , 1903, pp 349-354) are noted below for comparison —

Chap I 12^o विविक्षणा for तितीर्षणा , 13^o अंश for अग , 20^o उपात्तेषु सम्पत्ति for उपात्तार्थसम्पत्ति , 60^b नियच्छति for निगच्छति 62^o एन for एतं , 80^b एतद् for तद्

Chap II 2^o प्रतिसंस्कृतं for परिसंस्कृतं , 10^o परिक्षिप्य for परिवृत्त्य , 62^a संरुन्धे for सन्धत्ते , 64^d सूचिन for सूचक , 82^d पश्यति for यस्यति , 134^c यातव्यं for याहि त्वं , 142^a रन्ध्रावेक्षणा for रन्ध्रान्वेषणा , 148^o त्वं for ते , 149^d अस्यार्थस्य for तस्यार्थस्यैव , 155^b सानुकोशमिवोत्पले for सानुकोशोऽयमाक्षेप . , 182^c इयता for अय तु , 197^o सूक्ष्मम्बु for शुद्धाम्बु , 255^d रागबालातप for रविबालातप , 300^o अतिव्यक्त for प्रोक्त , 310^b यद् for यत्तु ; 343^a संसक्ता for संक्रान्ता , 350^d अश्रुभि for असुभि* , 364^a एष for एव

Chap III 38^d वर्यन्ते for वक्ष्यन्ते , 41^c आमोद for आनन्द ; 70ⁱ तस्यापि for तत्रापि , 158^e मदनबाणा for स्मरस्य बाणा

With reference to the xylograph used by Dr F W Thomas he himself observes that in some cases (viz II 155, 362, and III 128) it is scarcely decipherable. Sometimes he has given the Tibetan readings only, and not also the Sanskrit ones, as for instance, II 109, 118, III 141.

There is a peculiar word in the Tibetan transliteration which should be noted here. In II 116^b we read कुटजोत्तमा for कुटजद्रुम. It seems that *ungama* in *Kutojongama* is from Sanskrit *udgama* through Prakrit *uggama* owing to spontaneous nasalisation. Cf *pungala* in Buddhist Sanskrit for *pudgala*. The word *udgama*, literally 'shootingforth' appears to mean 'a bud'.

Asterisks are put to indicate the difference between the two texts, Sanskrit and Tibetan. According to the printed Sanskrit text, one line in II 56 and another in II 65 are not to be found in the Tibetan xylograph, and consequently the number of the ślokas has differed in the two. Thus the śloka II 65 in our text is II 66 in the printed Sanskrit text, and so on. Again, ślokas II 155, 156 and 362 are omitted in our xylograph. Discrepancy is also noticed in the arrangement of some of the ślokas, e.g. II. 156, 160 and 161 in our text are II 161, 159 and 160 respectively in the printed text. Again according to the printed Sanskrit text, both the Sanskrit and Tibetan of a line in III. 161 are missing, but the Sanskrit has been adjusted in our text omitting the Tibetan and consequently there have been put some dots in the Tibetan portion to indicate the omission. In a rare instance, e.g., in śloka III. 64, the second line

in the xylograph stands as third, and the third line as second in the printed Sanskrit text.

Incidentally it may be observed here that the *Kāvyaśāstra* is not the only Sanskrit text transliterated in Tibetan script, it is just one of the many. The study of the remaining works may prove equally useful and interesting.

Before concluding this preface, I have to fulfil the agreeable duty of acknowledging my indebtedness to Mahāmahopādhyāya Professor V i d h u s h e k h a r a B h a t t a c h a r y a, Asutosh Professor of Sanskrit, Calcutta University, who initiated me into Tibetan Studies and has provided me with facilities for work in various ways. Thanks are due to Lama Lobzang Mingyur Dorje, Instructor in Tibetan, Calcutta University, for kindly revising the text in proofs. I must also thank my friends Mr Durgadas Mookerjee, M A, and Mr Ajit Ranjan Bhattacharya, M A, for their occasional assistance.

Lastly I must also express my thanks to Mr J C Saikhel, Manager, Calcutta Oriental Press and his staff who have never been found lacking in courtesy while this work was being seen through the press.

The University of Calcutta,
July, 1939

ANUKUL CHANDRA BANERJEE

KĀVYĀDARŚĀ

ॐ । । स्तुतये नमः । नमो भगवते वासुदेवाय ।
स्तुतये नमः । नमो भगवते वासुदेवाय ।
स्तुतये नमः । नमो भगवते वासुदेवाय ।
स्तुतये नमः ॥

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

[1b] नम आद्यर्ममञ्जुश्रीकुमारभूताय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

चतुर्मुखमुखाम्भोजवनहसवधूर्मम ।
मानसे रमतां दीर्घं सर्वशुक्ला सरस्वती ॥१॥

गङ्गा-पत्नीं गङ्गा-नीं च चण्डिकां च ।
दत्ता-त्रयीं च शैल-शक्तिं च नमस्कृत्य ।
नमस्कृत्य च नमः किं विद्महे ॥ १ ॥

पूर्वशास्त्राणि संहृत्य प्रयोगानुपलक्ष्य च ।
यथासामर्थ्यमस्माभिः क्रियते काव्यलक्षणं ॥२॥

वन्द्यं चण्डिकां च शैल-शक्तिं च नमस्कृत्य ।
शुद्धं च नमस्कृत्य च नमः किं विद्महे ॥ १ ॥

ॐ ह्युत्कृष्टं वल्लिख्यं वदन्तं मीमांसकं ।
 कृष्णं च दन्तं मीमांसकं कर्तव्यं त्रिदश ॥ २

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टानामपि सर्व्वथा ।
 वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्त्तते ॥३॥

अद्वैतं गुरुं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं ।
 कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं ।
 कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं ।
 अद्वैतं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं ॥ ३

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयं ।
 यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ॥४॥

मया ते कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं ।
 अद्वैतं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं ।
 अद्वैतं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं ।
 कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं ॥ ८

आदिराजयशोबिम्बमादर्शं प्राप्य वाङ्मयं ।
तेषामसन्निधानेपि न स्वथम्पश्य नश्यति ॥५॥

स्त्रोत्रं श्रुत्वा चोत्सृज्य चतुर्भुजम् ।
तदा शोभते चतुर्भुजं चतुर्भुजम् ।
ते तदा शोभते चतुर्भुजं चतुर्भुजम् ।
तदा शोभते चतुर्भुजं चतुर्भुजम् ॥ ५

गौर्गोः कामदुघा सम्यक् प्रयुक्ता स्मर्यते बु[2a]धै ।
दुष्प्रयुक्ता पुनर्गोत्वं प्रयोक्तुः सैव शंसति ॥६॥

सामस्य चतुर्भुजं चतुर्भुजम् ।
तदा शोभते चतुर्भुजं चतुर्भुजम् ।
ते तदा शोभते चतुर्भुजं चतुर्भुजम् ।
तदा शोभते चतुर्भुजं चतुर्भुजम् ॥ ६

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथञ्चन ।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्मगं ॥७॥

དེ་སྤྱིར་ ལྷན་ངག་ དག་ལ་ ལྷོན།
 ལྷང་བར་གྱར་ ཀྱང་ ཅི་ཞིག་ ལྷར།
 བདང་ ལྷོམས་ མི་བྱ་ ལུས་མཛོས་གྱང།
 ལྷོན་ བཅིག་ བྱིས་ནི་ ལྷལ་ངན་འགྱུར། ॥ ७

गुणदोषानशास्त्रज्ञ. कथं विभजते जनः ।
 किमन्धस्याधिकारोस्ति रूपभेदोपलब्धिषु ॥८॥

ལྷོ་བོ་ བསྟན་བཅོས་ མི་ཤེས་བས།
 ཡོན་དན་ ལྷོན་དག་ ཅི་ ལྷར་དབྱེ།
 བཞུགས་ ཀྱི་ དབྱེ་བ་ དམིགས་ པའི་ ལྷབས།
 ཡོང་བ་དག་ལ་ ཡོད་དམ་ ཅི། ॥ ८

अत. प्रजानां व्युत्पत्तिमभिसन्धाय सूरयः ।
 वाचां विचित्रमार्गाणा निबबन्धुः क्रियाविधिम् ॥९॥

དེ་སྤྱིར་ ལམས་ པས་ ལྷོ་དག་ནམས།
 བྱེ་བྱག་ ཉོགས་ ལ་ མངོན་དགོངས་ནས།

ལྷ་བཀྲ་ལམ་ལྷན་ ཚོག་ལྷ་ས་ ཀྱི །

བྱ་བའི་ཚོག་ དེས་པར་སྐྱར ། ༡

तैः शरीरं च काव्यानामलंकारश्च दर्शितः ।

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥१०॥

དེ་དག་གིས་ རི་ ལྷན་ངག་གི །

ལུས་དང་ རྒྱན་ ཡང་ རབ་བྱ་བསྟན །

ལུས་ རི་ དེ་ཞིག་ འདོད་པ་ཡི །

དོན་གྱི་ལྷ་ས་ བཅད་ ཚོག་གི་ སྤང་ ། ༡༠

पद्यं गद्यञ्च मिश्रञ्च तन्निश्चैव व्यवस्थितम् ।

पद्यञ्चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा ॥११॥

དེ་ཡང་ ཚོགས་བཅད་ ལྷུག་པ་ དང་ །

སྐྲུབ་ས་ ལྷ་ས་གསུམ་ ཉིད་དུ་ གནས །

ཚོགས་བཅད་ ཀྱང་བཞི་པ་ དེ་ཡང་ །

གྲི་ རྒྱ་ རི་ ཞེས་ ལྷ་ས་གཉིས ། ༡༡

छन्दोविधित्यां स[2b]कलस्तत्प्रपञ्चो निदर्शितः ।
सा विद्या नौर्विविक्षूणां गम्भीरं काव्यसागरं ॥१२॥

देहि श्लोकां वः सप्रदं दम वै ।
श्लोकां श्लोकां मग्नं तु देस दमं वसुत ।
दम दे श्लोकां मग्नं मग्नं वै ।
मग्नं मग्नं मग्नं मग्नं मग्नं ॥ १२

मुक्तकं कुलकङ्कष संघात इति तादृशः ।
सर्गबन्धांशरूपत्वादनुक्तः पद्यविस्तरः ॥१३॥

श्लोकां व दमं वै दमं वै दमं वै ।
दमं व दमं वै दमं वै ।
दमं व दमं वै दमं वै ।
दमं व दमं वै दमं वै ॥ १३

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणं ।
आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखं ॥१४॥

སྐྱུ་ལྟེ་ བཅོལ་ས་ བ་ ལྷན་ལག་ཆེ །
 དེ་ཡི་ མཚན་ཉིད་ བཟོད་པར་བྱ །
 ལྷིས་ བཟོད་ ལྷག་བྱ་ དངོས་པོ་ ཉི །
 དེས་ བར་ བསྟན་ བའང་ དེ་ཡི་སྒྲོ་ ॥ ༡༧

इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयं ।
 चतुर्वर्गफलप्राप्तं चतुरोदात्तनायकं ॥१५॥

ལྷན་བྱུང་གཏམ་ ལས་ ལྷུང་པའམ །
 ཅིག་ཤོས་ ལེགས་པ་ ལ་ བརྟེན་པ །
 ལྷེ་བཞི་ འབྲས་བུའི་ དབང་ལྷུང་ དང་ །
 མཁས་ཤིང་ ལྷ་ཆེའི་ འབྲེན་པ་ཅན ། ॥ ༡༥

नगरार्णवशैलर्तुचन्द्रार्कोदयवर्णनैः ।
 उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः ॥१६॥

ལྷོང་ལྷུང་ ལྷ་མཚོ་ རི་དང་ ཏུས །
 ཉི་ལྷ་འཆར་བའི་ བསྟན་ལས་པ དང་ །

སྐྱོད་ཚལ་ཚུ་ཡི་ རོལ་ཅེད་ དང་ ।

ཚང་འཕྲང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དང་ ॥ १८

विप्रलम्भैर्विवाहैश्च कुमारोदयवर्णनैः ॥

मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयैरपि ॥१७॥

བསྐྱུ་བ་ དང་ བྱི་ བག་མ་ དང་ ।

གཞིན་ལྷ་སྐྱི་ དང་ འཕེལ་བ་ དང་ ।

གྲོས་ དང་ མོ་ཉ་ བགྲོད་པ་དང་ ।

གཡུལ་དང་ འདྲེན་བ དར་བས་ ཀྱང་ । १९

अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरं ।

सर्गैरनतिविस्तीर्णैः श्रव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ॥१८॥

བརྒྱན་པར་གྱུར་ ཅིང་ མདོར་བསྐྱུས་ མིན་ ।

ཉམས་དང་ འགྱུར་བ་ དག་གིས་ གཏམ་། २०

སཀ་ཤིན་ཏུ་ བྱ་ཆེ་ མིན་ ।

མཉམ་འོས་ སྤྱིད་ ལེགས་མཚམས་ སྐྱར་ ॥ २०

सर्वत्र भित्तसर्गान्तै[3a]रूपेत लोक.रञ्जनं ।

काव्यं कल्पान्तरस्थायि जायते सदलंकृति ॥१६॥

गुण'दु' सक्'दवा'गी' सप्र' ।

प्र'दद'प्र'व'स' र'द'द'क' स'स' ।

शु'द'द' द'स'प'द'क'प्र'व'क' ।

व'प्र'व'प'द' व'द'द' म'द'स' व'द'र'द'स' ॥ १८

न्यूनमप्यत्र यैः कैश्चिदंगैः काव्यं नः वज्यंते ।

यद्युपान्तेषु सम्पत्तिराराधयति तद्विद. ॥२०॥

म'द'द'व' व'द'व'म' र'म'स' द'स'क' व'द' ।

म'व'द' श'द'क'स'स' व'द'क'स'ग' ।

द'द'व' स'म'व'द'प'द' व' ।

र'द'द'क' श'द'द'म'क' स'v'v' ॥ २०

गुणतः प्रागुपन्यस्य नायकं तेन विद्विषां ।

निराकरणमित्येष मार्गः प्रकृतिसुन्दरः ॥२१॥

श्रीमन्मन्त्रं मन्त्रं च यत्किञ्चिद् गीतम् ।

श्रीमन्मन्त्रं मन्त्रं च यत्किञ्चिद् गीतम् ।

दत्तं च यत्किञ्चिद् गीतं तेषां च ।

मन्त्रं च यत्किञ्चिद् मन्त्रं च यत्किञ्चिद् ॥ ४२

वशवीर्यश्रुतादीनि वर्णयित्वा रिपोरपि ।

तज्जयान्नायकोत्कर्षकथनञ्च धिनोति नः ॥२२॥

द्विगणं दत्तं यत्किञ्चिद् गीतं तेषां च ।

दत्तं च यत्किञ्चिद् गीतं तेषां च ।

द्विगणं दत्तं च यत्किञ्चिद् गीतं तेषां च ।

द्विगणं दत्तं च यत्किञ्चिद् गीतं तेषां च ॥ ४४

अपादपदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा ।

इति तस्य प्रभेदौ द्वौ तयोराख्यायिका किल ॥२३॥

गद्यं च यत्किञ्चिद् गीतं तेषां च ।

द्विगणं दत्तं च यत्किञ्चिद् गीतं तेषां च ।

ཞེས་པ་ དེ་ཡི་ རབ་དབྱེ་ གཉིས།
 དེ་ལ་ འདྲིན་ པ་ ཉིད་ ཀྱིས་ བློ། ॥ ३३

नायकेनैव वाच्यान्या नायकेनेतरैर्ग वा ।
 स्वगुणाविष्क्रिया दोषो नात्र भूतार्थशंसिनः ॥२४॥

བརྗོད་པར་བྱ་བ་ བརྗོད་ པ་ ལོ།
 གཞན་ནི་ འདྲིན་པའམ་ གཞན་ ཀྱིས་ ཀྱང་ །
 རང་གི་ ཡོན་ ཏན་ བསྐྱབས་ ལྷོན་ འདིར།
 ཡང་ དག་དོན་ བསྐྱབས་ ལྷིར་ ཡོད་མིན་ ॥ ३४

अपि त्वनियमो द्रष्टस्तत्राप्यन्यैरुदीरणात् ।
 अन्यो वक्ता[3b] स्वयं वेति क्रीद्वत्त्वा भेदकारणं ॥२५॥

འོན་ཀྱང་ ཇིས་ པ་ མ་ མཐོང་སྟེ།
 དེར་ཡང་ གཞན་གྱིས་ བརྗོད་པའི་ལྷིར།
 གཞན་གྱིས་བརྗོད་ དེ་ རང་གིས་ ཞེས།
 དབྱེ་བའི་ལྷོ་ བློ་ ཅི་འདྲ་ཞིག ॥ ३५

वक्रञ्चापरवक्रञ्च साश्वासत्वञ्च भेदकं ।
चिह्नमाख्यायिकायाश्चेत्प्रसङ्गेन कथास्वपि ॥२६॥

मा० १९ ३० १९ ३० ।
१९ ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ॥ ३७

आर्यादिवत्प्रवेशः किं न वक्रापरवक्रयोः ।
भेदश्च दृष्टो लम्भादिराश्वासो वास्तु किन्ततः ॥२७॥

१९ ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ॥ ३८

तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञाद्वयाद्धिता ।
तत्रैवान्तर्भविष्यन्ति शेषास्त्वाख्यानजातयः ॥२८॥

དེ་ཕྱིར་ གཏམ་ དང་ བཟོད་པ་ ཞེས། །
 མིང་ གཉིས་ དག་གིས་ རིགས་གཅིག་ མཚོན། །
 ལྷག་ས་ བཟོད་པའི་ རིགས་ རྣམས་ ཀྱང་། །
 འདི་ཉིད་ བང་དུ་ འདུས་པར་ འགྱུར། ॥ ༢༤

कन्याहरणसंग्रामविप्रलम्भोदयादयः ।

सर्गबन्धसमा एव न ते वैशेषिका गुणाः ॥२६॥

བྱ་མོ་འཕྲོག་ དང་ གཡུལ་ དང་ བློ། །
 བསྐྱུ་བ་ དར་བ་ ལ་སོགས་ པ། །
 སྐྱུ་ས་བཅིངས་ པ་ མཚུངས་ པ་ཉིད། །
 དེ་དག་ ལྷན་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ མིན། ॥ ༢༥

कविभावकृतं चिह्नमन्यत्रापि न दुष्यति ।

मुखमिष्टार्थसंसिद्धौ किं हि न स्यात्कृतान्मनाम् ॥३०॥

ལྷན་ངག་མཁམ་གྱི་ བསམ་བྱས་ ཏུགས། །
 གཞན་དུ་ དང་ བློ་ ལྷན་མི་ འགྱུར། །

འདོད་དོན་ གྲུབ་ལ་ ལྷོ་ཅུ་ འི།
 མཁས་པ་རྣམས་ལ་ ཅིས་ མི་འགྲུར། ॥ ३०

मिश्राणि नाटकादीनि तेषामन्यत्र विस्तरः ।
 गद्यपद्यमयी कापि चम्पूरित्यभिधीयते ॥३१॥

སྤེལ་མ་ ལྷོས་ གར་ལ་ རོགས་དེ།
 དེ་དག་ རྣམས་ འི་ གཞན་ན་ སྤྱིས།
 ལྷུག་པ་ རོགས་བཅད་རང་བཞིན་ ཡང་།
 ཅས་ ཞེས་ པར་ མངོན་པར་ བརྗོད། ॥ ३१

तद्वैतद्वाङ्मयम्भूयः संस्कृतम्प्राकृतन्तथा ।
 [4a]अपभ्रंशश्च मिश्रश्चत्याहुःरासाश्चतुर्विधं ॥३२॥

དག་གི་ རང་བཞིན་ དེ་དག་ གྲུང་།
 ལྷིགས་སྦྱར་ དེ་བཞིན་ རང་བཞིན་ དང་།
 རྗེར་རྒྱག་ འདྲེས་མ་ ཞེས་བྱ་བ།
 རྣམ་པ་བཞི་ཅུ་ མཁས་པས་ གསུངས། ॥ ३२

सस्कृतं नाम देवी ब्रागन्वाख्याता महर्षिभिः ।
तद्भवन्तत्समन्देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः ॥३३॥

येषां श्रुतं तेषां च क्लृप्तिं च ।
ज्ञानं च नृपं च क्लृप्तं च ।
देवैः च देवैः च क्लृप्तं च ।
नृपं च नृपं च क्लृप्तं च ॥ ३३

महाराष्ट्राश्रयाम्भाषां प्रकृष्टम्प्राकृतं विदुः ।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयं ॥३४॥

पुत्रं च पुत्रं च क्लृप्तं च ।
येषां च क्लृप्तं च क्लृप्तं च ।
नृपं च नृपं च क्लृप्तं च ।
नृपं च क्लृप्तं च क्लृप्तं च ॥ ३४

सौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी ।
याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेषु सन्निर्यि ॥ ३५॥

स्य रसोक्तं शोभते नृणः ।
 अत्र च गणकं यत् नोदयति ।
 अत्र च नोदयति च उदयति ।
 अत्र च नोदयति च उदयति ॥ ३५

आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्थितिः ।
 शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितं ॥३६॥

अत्र च नोदयति च उदयति ।
 अत्र च नोदयति च उदयति ।
 अत्र च नोदयति च उदयति ।
 अत्र च नोदयति च उदयति ॥ ३६

संस्कृतं सर्गबन्धादि प्राकृतं स्कन्धकादिः *यत् ।
 ओसरादन्यपभ्रंशो नाटकादि तु मिश्रकं ॥३७॥

अत्र च नोदयति च उदयति ।
 अत्र च नोदयति च उदयति ।
 अत्र च नोदयति च उदयति ।

རྒྱུ་ཆག་ ལོ་ས་ར་ སོགས་ཏེ།

རྒྱུ་གར་ ལ་སོགས་ འདྲེས་བའོ། ། ༣༩

कथादि सर्वभाषामिः संस्कृतेन च ष्यते ।

भूतभाषामयी त्वाहुरद्भुतार्थां बृहत्क[4b]थां ॥३८॥

གཏམ་ སོགས་ སྐད་ རྣམས་ བསམ་ཅད་དང་།

ལོགས་ སྐར་གྱིས་ ཀྱང་ བཅིངས་བ་སྟེ།

མད་བྱང་ དོན་ཅན་ གྱུ་ཆེད་གཏམ།

འབྱུང་བོད་སྐད་ཀྱི་ རང་བཞིན་ བརྗོད། ། ༣༧

लास्यच्छलितशाम्यादि प्रेक्ष्यार्थमितरत्पुनः ।

अव्यमेवेति सैषापि द्वयी गतिरुदाहृता ॥३९॥

སྐྱེག་ དང་ རོལ་ དང་ སྐབས་ ལ་སོགས།

ལྷ་བའི་དོན་ ཡིན་ ཅིག་ཤོས་ ཀྱང་།

མཉན་བར་བྱ་བ་ཉིད་ ཅེས་བ།

འདི་ཡང་ ལྷགས་གཉིས་ དག་ཏུ་ བརྗོད། ། ༣༩

अस्त्यनेको गिरां मार्गाः सूक्ष्मभेदः परस्परं ।
तत्र वैदर्भगौडीयौ वण्येते प्रस्फुटान्तरौ ॥४०॥

यवः॒ऊक् ॑ द्रु॒वः ॑ ध्र॒वो॒ऊक् ।
ऊँ॒वा॒वी॒ल॒वा॒ वी॒ द्रु॒वा॒ ध्र॒वः ।
दी॒वा॒ वी॒ द्रु॒वः ॑ द्रु॒वः॒ वी॒ ।
वी॒र॒वा॒ द्रु॒वः ॑ वा॒वा॒वा॒ व॒वः॒ वी॒ ॥ ॐ

श्लेषः प्रसादः समता माधुर्यं सुकुमारता ।
अर्थव्यक्तिरुदारत्वमोजःकान्तिसमाधयः ॥४१॥

सु॒व॒ वः ॑ व॒वः॒द॒वा॒ व॒वः॒ वी॒ वः॒ वः॒ ।
सु॒वः॒ वः॒ वी॒ वः॒ वः॒ वः॒ वः॒ वः॒ ।
दी॒वः ॑ वा॒वा॒वा॒ वः॒ वः॒ वः॒ वः॒ ।
व॒वः॒ वः॒ व॒वः॒ वः॒ वः॒ वः॒ वः॒ ॥ ॐ

इति वैदर्भमार्गस्य प्राणा दशगुणाः *स्मृताः ।
एषां विपर्ययः प्रायो लक्ष्यते गौडघर्त्मनि ॥४२॥

ཡོན་ཏན་ འདི་ བཅུ་ བོ་དལྱའི།
 ལམ་གྱི་ སྲོག་ཏུ་ བཤད་པ་ ཡིན།
 འདི་དག་ གལ་ཆེར་ བརྗོག་པས་ ལོ།
 ལོ་འདི་ ལམ་ དག་ མཚོན་པ་ ཡིན། ॥ ༧༩

त्रिष्टमस्पृष्टशैथिल्यमल्पप्राणाक्षरोत्तरं ।

शिशिलं मालतीमाला लोलालिकलिला यथा ॥४३॥

ལྷུང་བ་ ལྷོད་པས་ མ་ རིག་པའོ།
 སྲོག་ཆུང་ ཡི་གི་ མང་བ་ ལོ།
 ལྷོད་པ་ ལྷུང་ལྷུང་ ལྷུང་ལྷུང་།
 ལོ་ལྷུང་ལི་ཀ་ ལི་ལྷུང་ འདོད། ॥ ༧༩

अनुप्रासधिया गौडैस्तद्विष्टं बन्धगोरवात् ।

वंदमैर्मालतीदाम लंघितं भ्रमरैरिति ॥४४॥

ལོ་འདི་བ་ ཡིས་ རྗེས་བྲིད་རྗེས།
 དེ་ འདོད་ ལྷུང་ལྷུང་ ལྷུང་ལྷུང་།

ཡི་གྲི་ཏོ་ ལྷ་མ་ རིེ་ ཞེས།

ཤེ་དུ་ ཡིས་ ལྷོར་ ལྷེ་བྱེད། ॥ ८०

प्रसादवत्प्रसिद्धार्थमिन्दोरिन्दीवरद्युति ।

लक्ष्म लक्ष्मीन्तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः ॥४५॥

རབ་དངས་ལྷན་ བ་ ལྷགས་ དེན་ ཅན།

ལྷ་བའི་མཚན་མ་ ལྷུ་ལྷ་ ལྷི།

འོད་ ལྷིས་ མཚོས་ བ་ ལྷས་ ཅས་ བ།

འོགས་ བའི་ ལྷལ་ བཟང་ ལྷན་ བའི་ ཚོག། ॥ ८१

व्युत्पन्नमिति गौडोयैर्नातिरूढमपीष्यते ।

यथानत्यर्जुनाब्जन्मस[5a]दृक्षाङ्को बलक्षगुः ॥४६॥

ངས་ཚོག་ ཡོད་ ལྷིར་ ལོ་ར་ བ།

ལིན་ ལྷ་ ལྷགས་ བ་ ལིན་ ལང་ འདོད་ བ།

ལིན་ ལྷ་ དཀར་ ལིན་ ལྷ་ལས་ ལྷིས།

དེ་འདྲས་ མཚན་ བ་ འོད་ དཀར་ ཅན། ॥ ८२

समं बन्धेष्वविषमन्ते मृदुस्फुटमध्यमाः ।

बन्धा मृदुस्फुटोन्मिश्रवर्णविन्यासयोनयः ॥४७॥

मङ्गल वः श्लोक व शीःमङ्गलः ३५ ।

देविः मङ्गलः तुवः वरःमः श्ले ।

श्लोक वः मङ्गलः तुवः वरःमः यी ।

यीःमो वगैरः वरिःश्लुःमङ्गलः उक् ॥ ८७

कोकिलालापवाचालो मामेति मलयानिलः ।

उच्छलच्छीकराच्छाच्छनिर्भरामःकणोक्षितः ॥४८॥

मृदुमृग उ उरःश्लोकः श्ले उरः उरः ।

मःयःयःश्लुः वरःमःयः उरः ।

श्लुःमः वरःमःश्लुः वरःश्लुःवः ।

श्लुःश्लुःश्लुःश्लुःश्लुःश्लुःश्लुःश्लुः ॥ ८८

चन्दनप्रणयोद्गन्धिर्मन्दो मलयमारुतः ।

स्पर्द्धते रुद्धमद्धैर्यो वररामाननानिलैः ॥४९॥

ཅནྟན་ གྱིས་ བསྐྱོས་ རྩི་ ལྷང་ ཞིང་ །
 འཇམ་ པ་ མ་ ལ་ ཡ་ ཡི་ ལྷུང་ །
 བདག་གི་ བདྟན་ འགོག་ དགའ་མ་ བློ་ །
 མཚོག་གི་ །ཁ་ཡི་ ལྷུང་ དང་ འགྲན་ །། ༧༧

इत्यनालोच्य वैषम्यमर्थालंकारडम्बरौ ।
 अपेक्षमाणा *ववृते पौरस्त्या काव्यपद्धतिः ॥५०॥

ཞེས་པ་ མི་མཉམ་ མ་ བདྟགས་པར་ །
 རོན་གྱི་ གྱུན་ དང་ ཚོགས་ དག ལ།
 རྩོམ་ བས་ ཤར་ རྩོགས་པ་ དག ལ།
 ལྷན་ དག་ ལམ་ བློ་ ལྷུང་བར་ ལྷུང་ །། ༧༠

मधुरं रसवद्वाचि वस्तुन्यपि रसः स्थितः ।
 येन माद्यन्ति धीमन्तो मधुनेव मधुव्रताः ॥५१॥

ལྷན་པ་ ཉམས་ལྷན་ ཚོག་ དང་ བློ་ །
 དངོས་ བོ་ ལ་ ལྷང་ ཉམས་ གནས་པ།

श्रुत्वाऽऽर्च्यं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च ।
 मन्त्रं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च मन्त्रं च ॥ ५२

यथा कथापि श्रुत्या यत्समानमनुभूयते ।
 तद्रूपादिपदासक्तिः सानुप्रासा रसावहा ॥५२॥

श्रुत्वाऽऽर्च्यं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च ।
 मन्त्रं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च मन्त्रं च ।
 श्रुत्वाऽऽर्च्यं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च ।
 श्रुत्वाऽऽर्च्यं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च ॥ ५३

एष राजा यदा लक्ष्मीम्प्राप्तवान् ब्राह्मणप्रियः ।
 तदा[5b]प्रभृति धर्मस्य लोकेस्मिन्नुत्सवोऽभवत् ॥५३॥

मन्त्रं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च मन्त्रं च ।
 श्रुत्वाऽऽर्च्यं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च ।
 श्रुत्वाऽऽर्च्यं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च ।
 मन्त्रं च श्रुत्वाऽऽर्च्यं च मन्त्रं च ॥ ५३

इतीदं *नादृतं गौडैरनुप्रासस्तु तत्प्रियः ।

अनुप्रासादपि प्रायो वेदभैरिदमीप्सितं ॥५४॥

उस २२ीं वीं ७ वं वीं २२ीं ।

वे २२ वं वीं ७ वं वीं २२ीं ।

स २२ वं वीं ७ वं वीं २२ीं ।

वे २२ वं वीं ७ वं वीं २२ीं ॥ ५७

वर्णावृत्तिरनुप्रासः पादेषु च पदेषु च ।

पूर्वानुभवसंस्कारबोधिनी यद्यद्दूरता ॥५५॥

ग २२ वं वीं ७ वं वीं २२ीं ।

वीं ७ वं वीं २२ वं वीं २२ीं ।

स २२ वं वीं ७ वं वीं २२ीं ।

वे २२ वं वीं ७ वं वीं २२ीं ॥ ५४

चन्द्रे शरन्निशोत्तंसे कुन्दस्तवकविभ्रमे ।

इन्द्रनोलनिभं लक्ष्म सन्ध्यात्यलिनः श्रियम् ॥५६॥

ལྷོན་མཚན་ དབུ་གྲུན་ ལྷོ་བ་ ཉི །
 ཀྲུའི་ ཐོན་ ཐོར་ འབྲུལ་བ་ ལ །
 མཚན་མ་ ཡིན་ཉི་ལ་ མཚུངས། །
 བྱང་བའེ་ དཔལ་ ཉི ཡང་དག་ འཇིན། ॥ ༡༩

चारु चान्द्रमसं भीरु विम्बम्पश्येदमम्बरे ।
 मन्मनो मन्मथाक्रान्त निर्दयं *कर्तुमुद्यतं ॥५७॥

མཇོས་མ་ མཁའ་ལ་ ལྷོ་བ་ཡི །
 དཀྲིལ་འཁོར་ མཇོས་པས་ བདག་གི་ཡིད། །
 ཡིད་སྐྱབ་ ཀྲིས་ མཉན་ བརྗེ་མེད་དུ། །
 འཇོམས་བར་ བརྗེན་བ་ འདི་ ལ་ ལྷོས། ॥ ༡༧

इत्यनुयासमिच्छन्ति नातिदूरान्तरश्रुतिम् ।
 न तु रामामुखाम्भोजसदृशश्चन्द्रमा इति ॥५८॥

ཅེས་པ་ ཡིན་དུ་ མི་རིང་བར། །
 ཐོས་པ་ དག་ ཉི་ ཇོས་ཁྲིད་ འདོད། །

दमदसं वलिनं प्रीकृच्छ्रुसं दं ।
 अकृदसं वं वं वं वं वं ॥ ५८

स्मरः खरः खलः कान्तः कायः कोपश्च नः कृशः ।
 च्युतो मानोधिको रागो मोहो जातोसवोगताः ॥५९॥

दमदसं वं वं वं वं वं ।
 वं वं वं वं वं वं वं ।
 वं वं वं वं वं वं वं ।
 वं वं वं वं वं वं वं ॥ ५९

इत्यादि बन्धपारुष्यं शैथिल्यञ्च नियच्छति ।
 अतो नैव[6a]मनुप्रास दाक्षिणात्याः प्रयुञ्जते ॥६०॥

वं वं वं वं वं वं ।
 वं वं वं वं वं वं ।
 वं वं वं वं वं वं ।
 वं वं वं वं वं वं ॥ ६०

आवृत्तिमेव सघातगोचरं यमकम्बिदुः ।
तन्तु नैकान्तमधुरमतः पञ्चाद्विधास्यते ॥६१॥

कौमल्यं वदन् श्लोकं प्रुथं वक्ष्यन् वदन् ।
सिद्धं च्छन्दो नन्दं वृत्तं च्छन्दो नन्दम् ।
ये यान् गच्छन्तुः श्लोकं च्छन्दो नन्दम् ।
ये श्लोकं च्छन्दो नन्दं वक्ष्यन् वदन् ॥ ७१

काम सर्वोप्यलंकारो रसमर्थे निषिञ्चति ।
तथाप्यग्रास्यतेवैनम्भारम्बहति भूयसा ॥६२॥

दैन्यं च्छन्दो नन्दं वृत्तं च्छन्दो नन्दम् ।
दैन्यं च्छन्दो नन्दं वृत्तं च्छन्दो नन्दम् ।
ये वृत्तं च्छन्दो नन्दं वृत्तं च्छन्दो नन्दम् ।
दैन्यं च्छन्दो नन्दं वृत्तं च्छन्दो नन्दम् ॥ ७२

कान्ये कामयमान मान्त्वं न कामयसे कथं ।
इति ग्राम्योयमर्थात्मा वेरस्यायैव कल्प्यते ॥६३॥

འདོད་ལྷན་ བདག་ལ་ གཞོན་ཀྱི་ མ།
 ཁྱོད་ནི་ཅི་ལྟར་ འདོད་མི་ བྱེད།
 ཅེས་ འདི་ ལྟོང་ བའི་དོན་ བདག་ ཉིད།
 ཉམས་ དང་ བྲལ་བ་ ཁོ་ནར་བྱེད། ॥ 63

कामं कन्दर्पचण्डालां मयि वामाक्षि निर्दयः ।
 त्वयि निर्मत्सरो दिष्ट्येत्यप्राम्योर्थो रसावहः ॥६४॥

གཞོན་མིག་ འདོད་བ་ གཏུམ་ བོ་ནི།
 དེས་ བར་ བདག་ ལ་ བརྗེ་བ་ མེད།
 ཁྱོད་ ལ་ ཁྱོ་མེད་ དགའ་ ཅེས་བ།
 ལྟོང་ བའི་ དོན་མེད་ ཉམས་ དང་ ལྷན། ॥ 64

शब्देपि ग्राम्यतास्त्येव सा सम्येतरकीर्तनात् ।
 यथा यकारादिपदं रत्युत्सवनिरूपणे ॥६५॥

ལྷ་ལའང་ ལྟོང་ བ་ཉིད་ ཡོད་ དེ།
 དེ་ནི་ ལོགས་ བའི་ ཅིག་ཤོས་ ལྷགས།

དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་བརྗོད་པ་ལ།
 ཇི་ལྟར་ ཡ་ཡིག་ལ་སོགས་བཞིན། ॥ 57

पदसन्धानवृत्त्या च वाक्यार्थत्वेन वा पुनः ।
 दुष्प्रतीतिकरं ग्राम्यं यथा या भवतः प्रिया ॥६६॥

ཚོག་གི་མཚམས་སྟོར་གྱིས་ ལྷགས་ དང་།
 སྟོར་ཡང་ ངག་རོན་དག་གིས་ ཀྱང་།
 ཉེས་པར་དོགས་བྱེད་ གོང་བ་སྟེ།
 ཡ་ ལྟ་བ་དེ་ གྱི་ཡ་ བཞིན། ॥ 58

परं प्रहृत्य विश्रान्तः पुरुषो वीर्यवानिति ।
 एव[6b]मादि न शंसन्ति मार्गयोरुभयोरपि ॥६७॥

བཞེན་ལ་ བསྐྱུན་ནས་ སྐྱེས་བུ་ བློ།
 གྱི་སྟེ་ ལུན་པའི་ གི་ལྟ་བུ་།
 དེ་ལྟ་བུ་ སོགས་ ལས་དག་ བློ།
 བཞེས་ཀ་ལ་ ཡང་ བསྐྱུགས་མ་ཡིན། ॥ 59

भगिनीभगवत्यादि सर्वत्रैवानुमन्यते ।
विभक्तमिति माधुर्यमुच्यते सुकुमारता ॥६८॥

सुभा'स'रु' सुभा'रु' ।
लेख'लेख'स' गुरु'रु'स'लेख'रु' ।
ने'रु' सुभा'स' रु'स'स' ।
-लेख'रु'स'लेख'स' स'स'स'स' ॥ ७८

अनिष्टुराक्षरप्रायं सुकुमारमिहेष्यते ।
बन्धशोधित्यदोषो हि *दर्शितः सर्वकोमले ॥६९॥

सुभा'लेख'स'स'स'स' रु' ।
-लेख'रु'स'लेख'स' रु'स'स' ।
स'स'स'स' सुभा'स'स'स'स' रु' ।
सुभा'स'स'स'स'स'स'स'स' ॥ ७९

मण्डलीकृत्य वर्हाणि कण्ठैर्मधुरगीतिभिः ।
कलापिनः प्रनृत्यन्ति काले जीमूतमालिनि ॥७०॥

ལྷིན་གྱི་སྤྱིང་བ་ལྷན་ ཏུས་སུ །
 ལྷན་པར་སྒྲིགས་པའི་མཁྱིན་ལྷན་པ །
 མ་བྱ་ཡི་ ཉི་ མཇུག་མ་དག །
 ལྷུས་པོར་བྱས་ནས་ བར་བྱེད་དོ །། ༧༠

इत्यनूर्जित एवार्थो नालंकारोपि तादृशः ।
 सुकुमारतथैवैतदारोहति सतां मुखं ॥७१॥

ཞེས་པ་ དོན་གྱིས་ཉིད་མ་ཡིན །
 ལྷན་ ཡང་ དེ་འདྲ་ ཡོད་མེད་ཏེ །
 ཤིན་ཏུ་གཞིན་པ་ཉིད་གྱིས་ དེ །
 དམ་པ་རྣམས་ཀྱི་ །ཁ་ ན་ བཞས་ །། ༧༡

दीप्तमित्यपरैर्भूम्ना कृच्छ्रोद्यमपि बध्यते ।
 न्यक्षेण पक्षः क्षपितः क्षत्रियाणां क्षणादिति ॥७२॥

བསལ་ ལྷིང་ བཞན་དག་ སལ་ཆེར་ ཉི །
 བརྗོད་པར་ དཀའ་བ་དག་ ཀྱང་ ལྷིང་ །

གྲུལ་རིགས་རྣམས་ཀྱི་ རློགས་མཐའ་དག །

སྐད་ཅིག་གིས་ བྱི་ ཉམས་པར་བྱས །། ༧༢

अर्थव्यक्तिरनेयत्वमर्थस्य हरिणोद्धृता ।

भूः खुरभ्रुण्णनागासृग्लोहितादुदधेरिति ॥७३॥

དོན་གསལ་ དོན་བདག་མི་དགོས་ཉིད །

འཕྲོག་བྱེད་ ཀྱིས་ བྱི་ ས་གཞི་དག །

མིག་པས་ བཅད་པའི་ལྷ་ཁྲག་གིས །

དམར་བ་ རྩ་ཡི་གཏེར་ ལས་ལྷུང་ །། ༧༣

मही महावराहेण लोहितादुद्धृतोदधेः ।

इतीयत्ये[7a]व निर्दिष्टे नेयत्वमुरगासृजः ॥७४॥

ཕག་བ་ཆེན་པོ་ དག་གིས་ ས །

རྩ་གཏེར་དམར་ པོ་དག་ ལས་ལྷུང་ །

ཞེས་བ་ འདི་ཉིད་ བསྟན་བ་ནི །

བྲང་འགོའི་ཁྲག་ བྱི་ བདག་དགོས་ཉིད །། ༧༤

नेहशम्बहु मन्यन्ते मार्गयोरुभयोरपि ।

न हि प्रतीतिः सुभगा शब्दन्यायविलङ्घिनी ॥७५॥

ལས་ རྟེན་ བཞིས་ ཀ་ ནག་ ལ་ ཡང་ །
 རྟོགས་ བའི་ སྐལ་ བཟང་ མི་ ལྷན་ ལོང་ །
 སྐྱ་ ཡི་ ཚུལ་ ལས་ འགོངས་ གུར་ བ །
 འདི་ འདྲ་ སལ་ ཆེར་ བཞེད་ མ་ ཡིན་ །། ༧༣

उत्कर्षवान्गुणः कश्चिदुक्ते यस्मिन्प्रतीयते ।
 तदुदाराल्हायं तेन सनाथा काव्यपद्धतिः ॥७६॥

གང་ ཏུ་ འགའ་ ལྷིག་ བཞོད་ བ ལ །
 རྒྱད་ འཕགས་ ལྷན་ བའི་ ཡོན་ ཏན་ རྟོགས་ །
 དེ་ རྟེན་ སྐྱ་ ཆེར་ བཞོད་ དེ་ དེས་ །
 སྐྱན་ འག་ ལས་ ཀུན་ མགོན་ ནང་ བཅས་ །། ༧༤

अर्थिनां कृपणा दृष्टिस्त्वन्मुखे पतिता सकृत् ।
 तदवस्था पुनर्देव नान्यस्य मुखमीक्षते ॥७७॥

སྐྱོང་ བ་ རྣམས་ ཀྱི་ བཀོན་ བའི་ མིག་ །
 ལན་ ཅིག་ བྱོད་ བའོང་ ལ་ ལྷུང་ བ །

ལྷ་ཅེག་གནས་སྐབས་དེ་ཡིས་སྤྲོད།
གཞན་གྱི་གདོང་ལ་ལྷ་མ་ཡིན། །། ༧༧

इति त्यागस्य वाक्येस्मिन्नुत्कर्षः साधु लक्ष्यते ।
अनेनैव पथान्यच्च समानन्यायमूह्यताम् ॥७८॥

ཅེས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚོག་འདི་ལ།
གདོང་བ་བྱད་འཕགས་ལེགས་པ་མཚོན།
ལས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་གཞན་དག་ཀྱང་།
རིགས་པ་མཚུངས་པས་དབག་བར་བྱ། །། ༧༨

श्याभ्यैर्विशेषणैर्युक्तमुदारं कैश्चिदिष्यते ।
यथा लीलाम्बुजक्रीडासरोहेमाङ्गदादयः ॥७९॥

བསྐྱབས་པར་འོས་པའི་བྱད་བར་དང་།
ལྷན་པ་སྐྱེས་འབའ་ཞིག་འདོད།
རོལ་པའི་ཚུ་སྐྱེས་ཅེ་དགའི་མཚོ།
གསེར་གྱི་སྐྱེན་ལ་སོགས་པ་བཞིན། །། ༧༩

ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम् ।
पद्येप्यदाक्षिणात्यानामिदमेकप्ररायणम् ॥८०॥

वङ्गिन् व ङ्गिन् श्रुन् श्रुन् वं वं श्रुन् ।
दन्दिं द्दिन् द्दिन् द्दिन् द्दिन् द्दिन् ।
ङ्गिन् द्दिन् द्दिन् द्दिन् द्दिन् द्दिन् ।
दन्दिन् द्दिन् द्दिन् द्दिन् द्दिन् द्दिन् ॥ ८०

तद्गुरुणां लघू[7b]नाञ्च बाहुल्याल्पत्वमिश्रणैः ।
उच्चावचप्रकारं सदृश्यमाख्यायिकादिषु ॥८१॥

द्वे व द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे ।
द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे ।
द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे ।
द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे द्वे ॥ ८१

अस्तमस्तकपर्यस्तसमस्तार्कांशुसंस्तरा ।
पीनस्तनस्थिताताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी ॥८२॥

རྒྱུ་གྱི་རི་མགོར་ ལྷུང་བ་ ཡི།
 མཐའ་དག་ ཉི་འོད་ མལ་སྟན་ཅན།
 མཁྲིགས་བའི་རྒྱ་མ་ ལ་ གནས་བའི།
 ལོས་ དམར་ མཛོས་ བཞིན་ རྩ་ལྡན་མ། ॥ ༤༢

इति पद्येपि पौरस्त्या बभ्रन्त्योजस्विनीर्गिरः ।
 अन्ये त्वनाकुल हृद्यमिच्छन्त्योजो गिरां यथा ॥८३॥
 ཅེས་ བ་ བརྗིད་དང་ལྡན་བའི་ཚོག།
 ཚོགས་ བཅད་ལ་ ཡང་ ཤར་བ་ སྦྱོར།
 གཞན་ དག་ འབྲུགས་ མིན་ མཛོས་ བ་ ཡི།
 ཚོག་རྣམས་ བརྗིད་བར་ འདོད་ དེ་ དཔེར། ॥ ༤༣

पयोधगतटोत्संगलग्नसन्ध्यातपांशुका ।
 कस्य कामातुरं चेतो वारुणी न करिष्यति ॥८४॥
 རྩ་འདོན་ རོས་གྱི་ སང་ ན་ གནས།
 མཚམས་ གྱི་ཉི་ འོད་ ལོས་ དང་ ལྡན།

ཐུ་ལྷན་མ་ཡིས་ སུ་ཡི་ཡིད།

འདོད་པས་གཟེར་བར་བྱེད་མི་འགྱུར། ॥ ༤༧

।

कान्त सर्वजगत्कान्तं लौकिकार्थानतिक्रमात् ।

तच्च वार्ताभिधानेषु वर्णनास्वपि विद्यते ॥८५॥

མཛེས་པ་ འཇིག་རྟེན་ རོན་དག་ ལས།

མ་འདས་ འགྲོ་ཀུན་ ལ་ མཛེས་པ་འོ།

དེ་ཡང་ གཏམ་གྱི་མངོན་བརྗོད་ དང་།

བསྐྱབས་པ་ ལ་སོགས་རྣམས་ལ་འང་ *སྦྱར། ॥ ༤༥

गृहाणि नाम तान्येव तपोराशिभवाद्भूशः ।

सम्भावयति यान्येव पावनैः पादपांशुभिः ॥८६॥

དཀའ་ཐུབ་པར་བོ་ བྱིད་འདྲ་ཡི།

ཞབས་ཀྱི་རྒྱལ་ ནི་ གཙམ་མ་ དག།

ཡང་དག་ བཏབ་པ་ གང་ ཡིན་པ།

དེ་དག་ ཁོ་ན་ དེས་བར་ བྱིས། ॥ ༤༦

अनयोरनवद्याङ्गि स्तनयोजृम्ममाणयोः ।
अवकाशो न पर्याप्तस्तव बाहुलतान्तरं ॥८७॥

स्त्रिंशद्भेदस्य तत्र प्रोक्तं किं ।
अत्र चत्वारिंशद्भेदवत्त्वम् ।
तुभ्यं च त्रिंशद्भेदवत्त्वम् ।
सोऽप्यत्र चत्वारिंशद्भेदवत्त्वम् ॥ ८७ ॥

इति [४a]संभाव्यमेवैतद्विशेषाख्यानसंस्कृतं ।
कान्त भवति सर्वस्य लोकयात्रानुवर्तिनः ॥८८॥

त्रिंशद्भेदवत्त्वम् ।
अत्र चत्वारिंशद्भेदवत्त्वम् ।
तुभ्यं च त्रिंशद्भेदवत्त्वम् ।
सोऽप्यत्र चत्वारिंशद्भेदवत्त्वम् ॥ ८८ ॥

लोकातीत इवात्यर्थमध्यारोप्य विवक्षितः ।
योर्यस्तेनातितुष्यन्ति विदग्धा नेतरे यथा ॥८९॥

इदमत्युक्तिरित्युक्तमेतद्गौडोपलालित ।

प्रस्थानं प्राक् प्राणीतन्तु सारमन्यस्य वर्त्मनः ॥६२॥

अदि किं नू उत वदित्वं वदि ।

नो त्वायं मत्सं वदं त्वदित्वं ।

अहं व त्वायं मत्सं वदि किं ।

वदं वत्सं त्वं वत्सं वत्सं वत्सं ॥ ७३

अन्यधर्मस्ततो न्यत्र लोकसीमानुरोधिना ।

सम्यगाधीयते यत्र स समाधिः स्मृतो यथा ॥६३॥

मत्सं वत्सं त्वं वत्सं वत्सं वत्सं ।

अदित्वं त्वं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं ।

तद्वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं ।

तद्वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं ॥ ७३

कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च ।

इति नेत्रक्रियाध्यासाल्लब्धा [8b]तद्वाचिनी श्रुतिः ॥६४॥

गृह्णन् वीः शिवाः अह्मः जित् ।
 यद्गन्तव्यं गृह्णन् शिवाः अह्मः उत ।
 शिवाः शिवाः वः वः यः यः ।
 येः येः यः यः यः यः ॥ ७८

निष्कृतोद्गीर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रय ।
 अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते ॥६५॥

वीः यः यः यः यः ।
 शिवाः शिवाः यः यः यः यः ।
 येः येः यः यः यः यः ।
 यः यः यः यः यः यः ॥ ७९

पद्यान्यर्काशुनिष्कृताः पीत्वा पावकविपुषः ।
 भूयो वमन्तीव मुखैरुद्गीणारुणरेणुभिः ॥६६॥

यद्गन्तव्यं शिवाः शिवाः यः यः ।
 यद्गन्तव्यं यः यः यः यः यः ।

ཁ་ཡིས་དག་བྱེད་ ཟེར་མ་ དག །
 འིན་ཏུ་ སྐྱུགས་པར་བྱེད་པ་ བཞིན །། ༧༩

इति हृद्यमहृद्यन्तु निष्ठीवति बधूरिति ।
 युगपन्नैकधर्माणामध्यासञ्च मतो यथा ॥६७॥

ཅེས་པ་ མཛོས་ཏེ་ མི་མཛོས་པ་ །
 ཚུང་མ་ སྐྱུགས་པར་བྱེད་ཅེས་པའོ།
 ཅིག་ཅར་ ཉིད་ཏུ་ མོས་ ཏུ་མ།
 བཞོད་པ་ དག་ གྲང་ འདོད་དེ་ དཔེར །། ༨༠

गुरुगर्मभराक्लान्ताः स्तन्र्त्योःमेघपङ्क्तयः ।
 अत्रलाभित्यकोत्सङ्गमिमाः समधिरोरते ॥६८॥

སྐྱི་བའི་མང་ལ་ ཁར་གྱིས་ངལ་ ཞིང་ །
 འཁུན་པར་བྱེད་པ་ སྐྱིན་གྱི་སྤོང་ །
 འདི་དག་ གཡོ་མེད་སྤོང་གི་ ནི།
 མང་བ་དག་ཏུ་ ཡང་དག་ཉལ་ །། ༨༡

उत्संगशयनं सख्याः स्तननं गौरवक्लमः ।

इतीह गर्भिणीधर्मा बहवोन्यत्र दर्शिताः ॥६६॥

श्रीमशः श्रैर्षि सन्धनः शुभः सन्धनः ।

वाम्भुः सन्धुः श्री सन्धुः सन्धुः सन्धुः ।

उभयः सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः ।

ऊर्षः श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः ॥ ७७

तदेतत्काव्यसर्वस्वं समाधिर्नाम यो गुणः ।

कविसार्थः समग्रोपि तमेनमनुगच्छति ॥१००॥

श्रीमशः श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः ।

श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः ।

श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः ।

ऊर्षः श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः ॥ १००

इति मार्गद्वयं भिन्नं तत्संज्ञापित्वाणात् ।

तद्भेदास्तु न शक्यन्ते वक्तुम्[9a]तिकवि स्थिताः ॥१०१॥

श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः ।

श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः श्री सन्धुः ।

दे दमा दग्रे वः श्रुव दमाः सपत्र ।
 शोः शोः लः मवसः वहेदः मी वस ॥ १०१

इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्थान्तरमहत् ।
 तथापि न तदाख्यातुं सरस्वत्यापि शक्यते ॥१०२॥

सुदः श्रैदः रेः सः सुदः शोः मसः ग्री ।
 सदः वः श्रैदः श्रैः श्रुदः वदः के ।
 देः श्रुः श्रैदः ग्रीः देः वहेदः वदः ।
 दग्रे दसः सवः ससः ग्रेदः वसः सपत्रिक ॥ १०३

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतञ्च बहु निर्मलं ।
 अमन्दश्चाभियोगोस्याः कारणं काव्यसम्पदः ॥१०३॥

ददः वल्लिः श्रुिः सुवः श्रैवसः वः ददः ।
 सदः द्रुः श्रैवसः वः श्रैः श्रैदः ददः ।
 सदः श्रैवसः श्रैवः वः श्रै दसवः वः ।
 श्रुव दमाः सवः सुसः श्रैवसः वदः श्रु ॥ १०३

न विद्यते यद्यपि पूर्ववासना गुणानुबन्धि प्रतिभानमद्भुतं ।
श्रुतेन यत्नेन च वागुपासिता ध्रुवङ्करोत्येव कमप्यनुग्रहं ॥१०४॥

मम ११ श्लोकं च मम कर्मणः यत् ११ श्लोकं ।
हेतुं मया श्लोकं च मया मया मया मया मया ।
मया मया मया मया मया मया मया मया मया ।
हेतुं मया मया मया मया मया मया मया मया ॥ १०८

तदस्ततन्द्रैरनिश सरस्वती क्रमादुपास्या खलु कीर्त्तिमीप्सुभिः ।
कुरो कवित्वेपि जनाः कृतश्रमा विदग्धगोष्ठीषु विहर्तुमीशने ॥१०५॥

हेतुं मया मया मया मया मया मया मया मया ।
मया मया मया मया मया मया मया मया मया ।
मया मया मया मया मया मया मया मया मया ।
मया मया मया मया मया मया मया मया मया ॥ १०९

दण्डिनः कृतौ काव्यादर्शे मार्गविभागो नाम प्रथमः परिच्छेदः ॥

मया मया मया मया मया मया मया मया मया ।
मया मया मया मया मया मया मया मया मया ॥

CHAPTER II

काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते ।

ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कान्स्वय्येन [9b]वक्ष्यति ॥१॥

श्लोकं च स्यात् सङ्घेस्य च स च यी ।

कस्य कस्य चोक्तं तेषां स्वयं च सङ्घे ।

देवैः च सङ्घे कस्य चोक्तं च ।

देवस्य च सङ्घे कस्य चोक्तं च ॥ १ ॥

किन्तु बीजं विकल्पानां पूर्वाचार्यैः प्रदर्शितं ।

तदेव प्रतिसंस्कर्तुमयमस्मत्परिश्रमः ॥२॥

देवैः च सङ्घे कस्य चोक्तं च स च यी ।

श्लोकं च स्यात् सङ्घेस्य च स च यी ।

देवैः च सङ्घे कस्य चोक्तं च स च यी ।

देवस्य च सङ्घे कस्य चोक्तं च स च यी ॥ २ ॥

काश्चिन्मार्गविभागार्थमुक्ताः प्रागप्यलंक्रिया ।

साधारणमलंकारजातः मद्य प्रदर्श्यते ॥३॥

ଘଷା କି କ୍ଷୟ ସଂସ୍ତୁ ଚିତ୍ତେ ।
 ଶ୍ରୁତ ଯଦ୍ଵାଦ୍ଵିତୀୟା କିଂ ହୃଦଂ ଧ୍ୟାତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ।
 ସ୍ତୁତ ଶ୍ରେୟଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ଶ୍ରୁତଂ ଶ୍ରୀଂ କି ।
 ଶ୍ରେୟଂ ଯଦିଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ॥ ୩

स्वभावाख्यानमुपमा रूपक दीपकावृती ।

आक्षेपोर्थान्तरन्यासो व्यतिरेको विभावना ॥୪॥

ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ କି ।
 ସଂସ୍ତୁତଂ ଶ୍ରୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ।
 ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ।
 ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ॥ ୯

समासातिशयोक्त्येक्षा हेतु सङ्गमो लघु क्रम ।

प्रेयो रसवद्भूजंस्त्रि पर्यायोक्तं समाहितम् ॥५॥

ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ।
 ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ସଂସ୍ତୁତଂ ।

दण्ड दण्डं श्रुत्वा श्रुत्वा च त्रिंशत् ।
 क्वचिद्दण्डं च त्रिंशत् च त्रिंशत् ॥ १ ॥

उदात्तापह्नुतिश्चिष्टविशेषास्तुल्ययोगिता ।
 विरोधाप्रस्तुतस्तोत्रे व्याजस्तुतिनिदर्शने ॥६॥

श्रुतिं च त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् ।
 त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् ।
 त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् ।
 त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् ॥ २ ॥

सहोक्तिः परिवृत्त्याशीः ससृष्टिरथ भाविकं ।
 इति वाचामलंकारा दर्शिताः पूर्वसूरिभिः ॥७॥

श्रुत्वा त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् ।
 त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् ।
 त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् ।
 त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् च त्रिंशत् ॥ ॥

नानावस्थ पदार्थानां रूपं साक्षाद्विवृण्वती ।

[10a] स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालङ्कृतिर्यथा ॥८॥

ददेषां चोक्तमसंग्रहं सत्त्वैकं दत्तं ।

मात्रसंज्ञासंज्ञा चोक्तमसंग्रहं सत्त्वैकं दत्तं ।

देवैकं सत्त्वैकं सत्त्वैकं दत्तं ।

संग्रहं चोक्तं सत्त्वैकं सत्त्वैकं दत्तं ॥ ८

तुण्डैराताम्रकुटिलैः पक्षैर्हरितकोमलैः ।

त्रिवर्णराजिभिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः ॥९॥

सकुं वै दत्तं चोक्तं सत्त्वैकं दत्तं ।

मात्रसंज्ञासंज्ञा चोक्तं सत्त्वैकं दत्तं ।

संग्रहं चोक्तं सत्त्वैकं सत्त्वैकं दत्तं ।

देवैकं सत्त्वैकं सत्त्वैकं दत्तं ॥ ९

कलकणितगर्भेण कण्ठेनाघूर्णितेक्षण ।

पारावतः परिक्षिप्य रिरसुश्रुम्बति प्रियाम् ॥१०॥

सचीव-सदी-वद-वस- श्रुत-श्लेष-स- पीद- ।
 शीमा- वै- गुरु-तु- अश्रु-स-स- यी- ।
 स्या-स- वै- श्रे-अ-द-द- द-स-स-स-स- ।
 यो-स-स- श्रु-स-श्लेष-व-स- स-स-द-स-स-स- ॥ १०

वपुःश्लेषे रोमाञ्चं कुर्वन्मनसि निर्वृति ।
 नेत्रे चामीलयन्नेष प्रियास्पर्शः प्रवर्तते ॥११॥

द-स-स-स-स- वै- स-स-स- अ-दी- ।
 श्रु-स-स- श्रु-स-स- श्रु-स-स-स- ।
 यी-द- वै- स-स-स- स-स-स-स- ।
 शी-स-स- श्रु-स-स-स- स-स- अ-स-स- ॥ ११

कण्ठे कालः करस्थेन कपालेनेन्दुशेखरः ।
 जटाभिः स्निग्धताम्राभिराविरासीद् वृषध्वजः ॥१२॥

सचीव-श्लेष- स-स-व-स-स-व-व- ।
 स-स-स-स- स-स-स-स- स-स-स-स- ।

श्रुत्वा त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ।
 त्रुत्वा त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ॥ २३

जातिक्रियागुणद्रव्यस्वभावाख्यानमीदृशम् ।
 शास्त्रेष्वस्यैव साम्राज्यं कान्येष्वप्येतदीप्सितम् ॥१३॥

त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ।
 त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ।
 त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ।
 त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ॥ २३

यथा कथंचित्सादृश्य यत्रोद्भूतम्प्रतीयते ।
 उपमा नाम सा तस्याः प्रपञ्चोय' ।प्रदर्श्यते ॥१४॥

त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ।
 त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ।
 त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ।
 त्रिंशत्संवत्सरेण सत्यं च ॥ २४

अम्भोरुहमिवाताम्रं मुग्धे करत[10b]लन्तव ।

इति धर्मोपमा साक्षात्तुल्यधर्मप्रकाशनात् ॥ १५॥

सङ्घेस स भ्रुं गृं यम सघेयं नै ।

कुञ्जिष सवेकं दु उरः च न सस ।

उस स क्कस नये नदसं सु नै ।

सकुदसः सवे क्कस नमः सङ्घं सु नै ॥ १५ ॥

राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव ।

इति प्रतीयमानेकधर्मा वस्तूपमैव सा ॥१६॥

भ्रुं गृं यदं सङ्घं नै सवेकं ।

सैमः नमः सुदुयं सुवेकं सवेकं ।

वेसः स क्कस सवेकं सुवेकं सुवेकं ।

नै नै नदसः सवेकं नये सुवेकं नै ॥ १६ ॥

त्वदाननमिवोन्निरुमरविन्द्रमभूदिति ।

सा प्रसिद्धिविपर्यासाद्धिपर्यासोपमेयते ॥१७॥

རྩོད་ཀྱི་གདོང་བཞིན་བདུ་ནི།
 རྣམ་པར་རྒྱས་པར་གྱུར་ཅེས་པ།
 དེ་ནི་གྲགས་པ་བརྗོད་པའི་སྤྱིར།
 བརྗོད་པའི་དཔེ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད། ॥ १७

तवाननमिवाम्भोजमम्भोजमिव ते मुखं ।
 इत्यन्योन्योपमा सेयमन्योन्योत्कर्षशंसिनी ॥१८॥

རྩོད་ཀྱི་གདོང་བཞིན་ཅུ་སྟེམ་ཏི།
 ཅུ་སྟེམ་བཞིན་དུ་རྩོད་ཀྱི་ཞལ།
 ཞེས་པ་ཕན་ཚུན་ཁྱད་འཕགས་ནི།
 བརྗོད་པར་བྱེད་འདི་ཕན་ཚུན་དཔེ། ॥ १८

त्वन्मुखं कमलेनैव तुल्यं नान्येन केनचित् ।
 इत्यन्यसाम्यव्यावृत्तेरियं सा नियमोपमा ॥१९॥

རྩོད་ཞལ་བདུ་ཉིད་དང་མཚུངས།
 གཞན་ནི་འགའ་ཞིག་དང་ཡང་མིན།

ཞེས་པ་ མཚུངས་པ་ གཞན་ བརྗོད་ སྟེང་ །
 འདི་ནི་ རེས་པ་ ཉིད་ ཀྱི་ དཔེ་ ། ༡༠

पद्मन्तावत्तवान्वेति मुखमन्यथ तादृशं ।
 अस्ति चेदस्तु तत्कारीत्यसावनियमोपमा ॥२०॥

དེ་ཞིག་ ཟྱོད་ གདོང་ བརྗོད་ །
 རྗོད་ འགྲོ་ གཞན་ཡང་ དེ་འདྲ་བ་ །
 གཡ་དེ་ ཡོད་ན་ དེ་ ཟྱོད་འགྲུང་ །
 ཞེས་པ་ འདི་ནི་ རེས་པེད་དཔེ་ ། ༡༠

समुच्चयोपमाप्यस्ति न कान्त्यर्थे मुखनन्य ।
 ह्यादनाख्येन चान्वेति कर्मणेन्दुमिनीदृशी ॥२१॥

ཟྱོད་ གདོང་ མཚོས་པ་ ཁོ་ན་ཡིས་ །
 རྗོད་པའི་ རྗོད་སྟེ་ འགྲོ་སྟེད་ དེ་ །
 དགའ་སྟེད་ ལས་ཀྱིས་ ཀྱང་ ཞེས་པ་ །
 འདི་འདྲ་ བརྗོད་པའི་ དཔེ་ ཡང་ ཡོད་ ། ༡༡

त्वय्येव त्वन्मुखं हृष्टं दृश्यते दिवि चन्द्रमाः ।
इयत्येव भिदा[।।a]नान्येत्यसावतिशयोपमा ॥२२॥

सुन्दरं ग्रीवम् क्विं सुन्दरं च ।
अश्विनं चिं च्चिं च्चिं च्चिं च्चिं ।
अश्विनं चिं च्चिं च्चिं च्चिं च्चिं ।
अश्विनं चिं च्चिं च्चिं च्चिं च्चिं ॥ २२

मय्येवास्या मुखश्रीरित्यलमिन्दोर्विकथनैः ।
पद्मेपि सा यदस्त्येवेत्यसावुत्प्रेक्षितोपमा ॥२३॥

देव्यं यत्नेन दत्तम् न च्चिं च्चिं ।
अश्विनं चिं च्चिं च्चिं च्चिं च्चिं ।
अश्विनं चिं च्चिं च्चिं च्चिं च्चिं ।
अश्विनं चिं च्चिं च्चिं च्चिं च्चिं ॥ २३

यदि किञ्चिद्भवेत्पद्मं सुष्ठु विभ्रान्तलोचनं ।
तत्तं मुखश्रियन्धत्तामित्यसावद्भुतोपमा ॥२४॥

गण्यते चन्द्रं नमो नैव ।
 श्रेष्ठं चोत्तमं कृत्वा नमो नैव ॥ २५ ॥
 सुन्दरं चोत्तमं नमो नैव ।
 श्रेष्ठं चोत्तमं नमो नैव ॥ २६ ॥

शशीत्युत्प्रेक्ष्य तन्वाङ्गि त्वन्मुखन्तन्मुखाशया ।
 इन्द्रमप्यनुधावामीत्येषा मोहोपमा स्मृत्या ॥२५॥

सुन्दरं चोत्तमं नमो नैव ।
 श्रेष्ठं चोत्तमं नमो नैव ।
 सुन्दरं चोत्तमं नमो नैव ।
 श्रेष्ठं चोत्तमं नमो नैव ॥ २६ ॥

किम्पद्म-द्वर्भ्रान्तालि कित्ते लोलेक्षणं मुञ्ज ।
 मम दोलायते विसमितीयं संशयोपमा ॥२६॥

सुन्दरं चोत्तमं नमो नैव ।
 श्रेष्ठं चोत्तमं नमो नैव ।

वदमः शिः शेषसः किं क्वः वदः मयि ।
 तेषः वः २३ किं शिः क्वः वदः ॥ २७

न पद्मस्येन्दुनिग्राहस्येन्दुलजाकरी द्युतिः ।
 अतस्तवन्मुखमेवेदमित्यसौ निर्णयोपमा ॥२७॥

वः वः शिः शिः शिः शिः वः २३ ।
 वः वः शिः शिः शिः शिः वः २३ ।
 वः वः शिः शिः शिः शिः वः २३ ।
 वः वः शिः शिः शिः शिः वः २३ ॥ ३०

शिशिरांशुप्रतिद्वन्द्वि श्रीमत्सुरभिगन्धि च ।
 अम्मोजमिथ ते वक्त्रमिति श्लेषोपमा मता ॥२८॥

वः वः शिः शिः शिः शिः वः २३ ।
 वः वः शिः शिः शिः शिः वः २३ ।
 वः वः शिः शिः शिः शिः वः २३ ।
 वः वः शिः शिः शिः शिः वः २३ ॥ ३२

सरूपशब्दवाच्यत्वात् सा समानोपमा यथा ।

[11b] बालेवोद्यानमालेयं सालकाननशोभिनी ॥२६॥

बहुदस्य वदं क्षुभ्यस्य वदं वदं वदं ।

बहुदस्य वदं वदं वदं वदं वदं ।

बहुदस्य वदं वदं वदं वदं वदं ।

बहुदस्य वदं वदं वदं वदं वदं ॥ २८

पद्मं बहुदस्य वदं वदं वदं वदं वदं ।

समानमपि सौत्सेकमिति निन्दोपमा मता ॥३०॥

वदं वदं वदं वदं वदं वदं ।

वदं वदं वदं वदं वदं वदं ।

बहुदस्य वदं वदं वदं वदं वदं ।

वदं वदं वदं वदं वदं वदं ॥ ३०

ब्रह्मणोप्युद्भवः पद्मश्चन्द्रः शम्भुशिवोद्भूतः ।

तौ तुल्यौ त्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोपमेप्यते ॥३१॥

བརྒྱུ་སྐྱོད་མཛེས་པ་དུག་གུང་སྐྱེད།
 ལྷ་པ་བདེ་འགྲུང་གུལ་ན་འཛིན།
 དེ་དག་ཁྱོད་གདོང་མཛེས་ཞེས་པ།
 དེ་ནི་བསྐྱེད་པའི་དཔེར་བརྗོད་དོ། ॥ ३१

चन्द्रेण त्वन्मुखं तुल्यमित्याचिख्यासु मे मन ।
 सगुणो वास्तु दोषो वेत्याचिख्यासोपमां विदुः ॥३२॥

ཡིན་དུ་ལྷ་ན་ནས་སྐྱོན་འགྲུང་ཡང་།
 ཁྱོད་གདོང་ལྷ་པ་མཛེས་ཞེས་པ།
 བརྗོད་འདོད་བདག་གི་ཡིད་ལ་ཡིད།
 ཞེས་པ་བརྗོད་འདོད་དཔེ་ཞེས་རིག་། ॥ ३२

शतपत्रं शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम् ।
 परस्परविरोधीति सा विरोधोपमोदिता ॥३३॥

འདབ་བཟུ་པ་དང་སྐྱོན་ལྷ་དང་།
 ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་དང་གསུམ་པོ་ནི།

མན་ཚུན་ རྣམ་པར་ འགལ་ ཞེས་པ། །

དེ་ནི་ འགལ་བའི་དཔེར་ བཟོད་དོ། ། 22

न जातु शक्तिरिन्द्रोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम ।

कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा ॥३४॥

དེ་མ་ལྟར་ ཞིང་ ལྷན་གུར་པ། །

ལྷ་པ་ལ་ རི་ རྩོད་ བཞོང་ དང་། །

འགྲུན་བའི་ རྣམ་པ་ རྣམ་ཡང་ བེད། །

ཅེས་ པ་ དགག་བའི་དཔེ་ ཉིད་དོ། ། 23

मृगोक्षणाङ्कत्त्वद्वत्प्रमृगोणैवांकितः शशी ।

तथापि सम एवास्मौ नोत्कर्षीति अद्रुपमा ॥३५॥

རྩོད་ བཞོང་ རི་དྲུགས་མིག་གིས་མཚན། །

ལྷ་པ་ རི་དྲུགས་ཉིད་ཀྱིས་ མཚན། །

དེ་ལྟར་ ཡང་ འདི་ མཚུངས་ཉིད། །

ལྷ་དཔགས་ མིག་ ཞེས་ བཟོས་བའི་དཔེ། ། 24

न पद्यं मुष्ममेवेदं न भृङ्गौ चक्षुषी[12a] इमे ।
इति विस्पष्टसाहचर्यात्तत्वाख्यानोपमैव सा ॥३६॥

रुद्रे'रे' वने'न' छिन्द' यद्' शि' ।
रुद्रे'न'य' सुन्द'य' स'यि'न' शि'य' ।
रुद्रे'य' रु'स'य'स'य' स'रु'द'स'य' य'स' ।
रु'द्रे' रु'द्रे'न'य'रु'द्रे'न'य'रु'द्रे'न'य' ॥ ३७

अन्वयविन्द्योः कान्तिमतिक्रम्य मुखन्तव ।
आत्मनेप्राभयस्तुत्यमित्यसाधारणोपमा ॥३७॥

रु'द्रे'य' य'द्रे'न' य'द्रे'न' य'द्रे'न' ।
रु'द्रे'न'य' य'द्रे'न' य'द्रे'न' य'द्रे'न' ।
रु'द्रे'न'य' रु'द्रे'न' य'द्रे'न' य'द्रे'न' ।
रु'द्रे'न'य' रु'द्रे'न' य'द्रे'न' य'द्रे'न' ॥ ३७

सर्वपद्यप्रभासारः समाहृत इव कवित् ।
स्वदाननं विभालोति तामभूतोपमां विदुः ॥३८॥

བསྐྱེ་མཚེས་བའི་སྒྲིང་པོ་ཀུན།
 འགའ་ཞིག་དག་དུ་བསྐྱེས་པ་བཞིན།
 རྒྱུད་ཀྱི་གདོང་ནི་རྣམ་མཚེས་ཞེས།
 དེ་ནི་ཡུང་མིན་དཔེ་ཞེས་རིག། ༢༤

इन्दुविम्बादिव विषं चन्द्रनादिव पावकः ।
 परुषा वागितो वक्त्रादित्यसम्भावितोपमा ॥३६॥

རྒྱ་བའི་གཟུགས་ལས་དུག་བཞིན་དང་།
 ཅན་ལས་ནི་མེ་བཞིན་དུ།
 ཞལ་འདི་ལས་ནི་རྒྱ་བ་མཚེས་ཚོག།
 ཅེས་པ་སྒྲིང་བ་མིན་བའི་དཔེ།

चन्दनोदकचन्द्रांशुचन्द्रकान्तादिशीतलः ।
 स्पशस्तवेत्यतिशयं प्रथयन्ती बहूपमा ॥३७॥

ཅན་ལས་རྒྱ་བའི་དང་།
 རྒྱ་བའི་སོགས་བཞིན་རྒྱུད་ཀྱི་ནི།

རེག་པ་ བསིལ་ ཞེས་ བྱུང་བར་ དག །
གསལ་བར་བྱེད་པ་ མང་བའི་དཔེ །། ༧༠

चन्द्रविम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धृतम् ।
तव तन्वङ्गि वदनमित्यसौ विक्रियोपमा ॥४१॥

ལྷ་ས་མ་ བྱོད་ གདོང་ བཞིན་རས་ བློ་
རྒྱ་བའི་ དགྲིལ་འཁོར་ ལས་ བདོན་ བཞིན་ །
བསྐྱེད་ ཉང་ནས་ སྤྱང་བ་ བཞིན་ །
ཞེས་པ་ འདི་ བློ་ རྣམ་འགྱུར་དཔེ །། ༧༡

पुष्पयातप इवाह्वीव पूषा व्योम्नीव वासरः ।
विक्रमस्त्वय्यघाल्लक्ष्मीमिति मालोपमैव सा ॥४२॥

འོད་གྲིས་ ཉི་བཞིན་ ཉི་མ་ ཡིས་ །
ཉིན་བཞིན་ ཉིན་གྲིས་ མཁའ་ལ་ བཞིན་ །
རྣམ་པར་གཞོན་པས་ བྱོད་ལ་ དབལ་ །
འཛོན་ ཞེས་ དེ་བུ་ སྤྱང་བའི་དཔེ །། ༧༢

वाक्यार्थेनैव वाक्यार्थः [12b]कोपि यद्युपमीयते ।
एकानेकेवशब्दत्वात् सा वाक्यार्थोपमा द्विधा ॥४३॥

माद षदः दमा देवः छेदः गृहः वै ।
माद ५ दमा देवः छेदः ददः ५ ।
दमा देवः दमे छेदः वदेवः ५ वै ।
मादेवः ददः ५ ददः देवः ददः ५ ॥ ८३

त्वदाननमधोराक्षमाविर्दानदीधिति ।
अमद्भृङ्गमिवालक्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥४४॥

सिद्धः मादेवः वैवः वैवः ददः वैवः ।
सिद्धः देवः वैवः ददः मादेवः ।
ददः वैवः सुदः ददः मादेवः वैवः ।
मादेवः ददः वैवः वैवः वैवः वैवः ॥ ८४

नलिन्या इव तन्वद्भ्रथास्तस्याः पद्ममिवाननम् ।
मया मधुव्रतेनेव पायम्पायमरम्यत ॥४५॥

वद्म उक्त्वा वल्लिङ्गं श्रुत्वा ह्यसौ ।
 वद्मं वल्लिङ्गं तु तेऽपि मर्दितं ।
 श्रुत्वाऽपि श्रुत्वाऽपि वल्लिङ्गं वै ।
 वदन्नामोऽसौ ममोऽसौ ममोऽसौ ॥ ८४ ॥

वस्तु किञ्चिदुपन्यस्य न्यसनात् तत्सधर्मणः ।
 साम्यप्रतीतिरस्तीति प्रतिवस्तूपमा यथा ॥४६॥

ददन्नामोऽसौ ममोऽसौ ममोऽसौ ॥ ८५ ॥
 ददन्नामोऽसौ ममोऽसौ ममोऽसौ ॥ ८६ ॥
 ददन्नामोऽसौ ममोऽसौ ममोऽसौ ॥ ८७ ॥
 ददन्नामोऽसौ ममोऽसौ ममोऽसौ ॥ ८८ ॥

नैकोपि त्वाद्दृशोद्यापि जायमानेषु राजसु ।
 ननु द्वितीयो नास्त्येव पारिजातस्य पादपः ॥४७॥

कृत्वाऽपि कृत्वाऽपि कृत्वाऽपि ॥ ८९ ॥
 कृत्वाऽपि कृत्वाऽपि कृत्वाऽपि ॥ ९० ॥

ཡོངས་འདུ་དག་གི་ཀང་འཕུང་ནི།
གཉིས་པ་ ཇིས་པར་ ཡོད་མ་ཡིན། ॥ ༧༧

अधिकेन समाहृत्य हीनमेकक्रियाविधौ ।
यद्ब्रुवन्ति स्मृता सेयन्तुल्ययोगोपमा यथा ॥४८॥

ལྷག་པས་ དམན་པ་ བྱ་བ་ཡི།
ཚོག་ གཅིག་ ལ་ རབ་བསྐྱས་ནས།
གང་ ལྷན་ དེ་ནི་ མཚུངས་པ་ དག།
སྤོར་བའི་དཔེ་ཅུ་ བཤད་དེ་ དཔེར། ॥ ༧༨

दिवो जागर्ति रक्षायै पुलोमारिर्भुवो भवान् ।
असुरास्तेन हन्यन्ते सावलेपा नृपास्त्वया ॥४९॥

སུ་ལོ་མའི་དགུ་ མཐོ་རིས་ དང་།
ཁྱོད་ནི་ ས་སྤྱང་ མེལ་ཚོ་བྱེད།
དེ་ཡིས་ དྲིགས་ལྷན་ ལྷ་མིན་ དང་།
ཁྱོད་ཀྱིས་ མི་ཡི་ བདག་ བོ་ འཛོམས། ॥ ༧༩

कान्त्या चन्द्रमसं [13a] धाम्ना सूर्यन्धेर्येण चार्णवम् ।
राजन्ननुकरोषीति सैषा हेतूपमा स्मृता ॥५०॥

क्रुप षो ऋँस'वस'क्ल'व' द' ।
म'त्रि'प्रि'प्रि'स' किं' किं' स' द' ।
व'द'व'व'स' क्रु'अ'के'रे' हे'स'सु'प्रि'द' ।
ते'स' व' र'दि' किं' क्रु'द'व'र' द'व' ॥ ५०

न लिङ्गवचने मिश्रे न हीनाधिकतापि वा ।
उपमादूषणायालं यत्रोद्वेगो न धीमतां ॥५१॥

क्ल'भ'व' ऋ'द'प्रि'स' षे'द' म'द'व' ।
द'स'व'र' द'व'पि'क्ल'व' द'म' किं' ।
म'द'द' द'म'स' द'द' क्ल'व'व'षे'द' ।
द'व'व' द'द' क्ल'व'व' किं'द' व'द'द'षे'द' ॥ ५१

स्त्रीव गच्छति षण्ढोयं वक्तैथषा स्त्री पुमानिव ।
प्राणा इव प्रियोयम्मे विद्या धनमिवाजिता ॥५२॥

स किं नदि नदीं सुद भेदं वल्लि ।
 सुद भेदं नदि सु सुसि स वल्लि ।
 वदय वी श्लोकास नदि श्लोका कसस वल्लि ।
 शिवा स कसस वल्लि वस वरं वल्लि वरं ॥ १३

भवानिव महीपाल देवराजो विराजते ।
 अलमंशुमतः कक्षामारोढुन्तेजसा नृपः ॥५३॥

स वल्लि सुद व श्लिं वल्लि सु ।
 सु यी सुय व कस वरं ससि ।
 क वरं उव सु सुस व य ।
 शि वदय व श्लि यीस नदीं वरं सुस ॥ १३

इत्येवमादि सौभाग्यं न जहात्येव जातुचित् ।
 अस्ति च क्वचिदुद्वेगः प्रयोगे वाग्विदां यथा ॥५४॥

लेश य दे सु सु य श्लोका ।
 सुय वरं कस यद वरं सु सु सु ।

ལྷོ་ལ་ འགའ་ ལ་ འག་ རིག་ རྣམས་ །
 མི་ དགུམ་ བ་ ཡོད་ རི་ ལྷོ་ རྣ་ ། ༡༥

हसीव धवलश्चन्द्रः सरासीवामल नभः ।
 भर्तृभको भटः श्वेव खद्योतो भाति भानुवत् ॥५६॥

འང་མོ་ བཞིན་ ཏུ་ ལྷོ་ བ་ དགའ་ །
 མཚོ་ རྣམས་ བཞིན་ ཏུ་ མཁའ་ རི་ མེད་ །
 བྱི་ བཞིན་ དཔའ་ བོ་ རི་ ལ་ ལྷོ་ མ་ །
 ཉི་ མ་ བཞིན་ ཏུ་ མི་ ལྷོ་ བ་ ལས་ ལ་ ། ༡༦

ईदृशं वर्ज्यते सद्भिः कारण त्वत्र चिन्त्यताम् ।
 इववद्वायथाशब्दाः समाननिभ[13b]सन्निभाः ॥५६॥

འདི་ འདྲ་ སྤངས་ ཉེ་ མཁའ་ རྣམས་ ཀྱིས་ །
 ལྷོ་ ལང་ འདིར་ ཉི་ བསམ་ བར་ ལྷོ་ མ་ །
 བཞིན་ ལྷོ་ ལྷོ་ ལྷོ་ ལྷོ་ ལྷོ་ ལྷོ་ །
 མལུན་ མཚུངས་ ལང་ དག་ མཚུངས་ དང་ མཉམ་ ། ༡༧

तुल्यसंकाशनीकाशप्रकाशप्रतिरूपका ।
प्रतिपक्षप्रतिद्वन्द्विप्रत्यनीकविरोधिनः ॥५७॥

ཡང དག གསལ་དང ཇིས བར་གསལ །
རབ་གསལ་གཞུགས ཀྱི་ལྷ་པོ་དང་ །
གཉེན པོ་དང ཉི་དག ལྷ དང །
སོ་སོར རྟོག དང འགལ དང་འདྲ ॥ ५७

सदृक्सदृशसंवादिसजातीयानुवादिनः ।
प्रतिविम्बप्रतिच्छन्दसरूपसमसम्मिताः ॥५८॥

བལྟ བཅས དང་ཉི་བསྐྱུ་བ དང །
རིགས མཐུན རྗེས ལྷ་སྐྱུ་བ དང་ །
གཞུགས་བརྟན་དང་ཉི་སོ་སོར ལྷེལ །
གཞུགས་མཚུངས མཉམ་དང་ཡང དག་འདྲལ ॥

सलक्षणसदृक्षाभसपक्षोपमितोपमा ।
कल्पदेशीयदेश्यादिः प्रख्यप्रतिनिधी अपि ॥५९॥

མཚན་ཉིད་མཐུན་འདྲ་མཚུངས་པ་དང་།
 མཐུན་སྤྱོད་སྤྱོད་དཔེར་བྱས་དཔེ་དང་དོག་།
 དམན་དང་ཚུང་ཟེན་དམན་སོགས་དང་།
 རབ་ཏུ་སྐྱེ་དང་སོ་སོར་བསྐྱོད་། ། ༥༦

सवर्णतुलितौ शब्दौ ये चान्यूनार्थवाचिनः ।
 समासश्च बहुव्रीहिः शशाङ्कवदनादिषु ॥६०॥
 རིགས་མཐུན་མཉམ་བྱས་སྐྱེ་དག་དང་།
 བཤང་ཡང་དམན་མིན་དོན་ཅན་ཚོག་།
 འབྲུ་མང་པོ་ཡི་ཚོག་སྐྱེད་དང་།
 རི་བོང་མཚན་མའི་བཤོང་ཅན་སོགས་། ། ༦༠

स्पर्धते जयति द्वेषि द्रुह्यति प्रतिगर्जति ।
 आक्रोशत्यवजानाति कदर्थयति निन्दति ॥६१॥

འབྲུན་དང་རྐྱལ་དང་སྐྱང་བ་དང་།
 འཁྲུ་དང་མི་མཐུན་སྤྱོད་སྤྱོད་པ་དང་།

ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ।
 ॐ॒ ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒सु॒त॒ः ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॥ ७१

विडम्बयति सरुन्धे हसतीर्ष्यत्यसूयति ।
 तस्य मुष्णाति सौभाग्यं तस्य कान्तिं विलुम्पति ॥६२॥

ॐ॒ॐ॒सु॒ ॒व॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ।
 ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ।
 ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ।
 ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॥ ७२

तेन सार्धं विगृह्णाति तुलान्तेना] 14a] धिरोहति ।
 तत्पदव्यां पदं धत्ते तस्य कक्षां विगाहते ॥६३॥

॒द॒न् ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ।
 ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ।
 ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ।
 ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॒ॐ॒स॒व॒स॒ ॒द॒न् ॥ ७३

तमन्वेत्यनुबध्नाति तच्छीलन्तन्निषेधति ।

तस्य चानुकरोतीति शब्दाः सादृश्यसूचिन ॥६४॥

दे'यी'इस'र'सो' इ'स'सु'र'की'र' ।

दे'यी'र'र'कु'र' दे'र'सो'स' र'र' ।

दे'यी'इ'स'सु'सु'दे' उ'स' स'र' ।

इ'र' क'स'स' स'कु'र'स' स' स'स'स'सु'दे' यी'क ॥ ७८

उपमैव तिरोभूतभेदा रूपकमिष्यते ।

यथा बाहुलता पाणिपद्मञ्चरणपल्लवम् ॥६५॥

स र'र' इ'र'स'स'सु'र'स' यी' ।

र'स' इ'र' र'स' री' स'कु'स'स' उ'र' र'र'र' ।

र'सु'र'स' र'सु'र'स'स'स'स' री' ।

स'स'स'स'स'स'स'स'स' ॥ ७९

अगुल्यः पल्लवान्यासन् कुसुमानि नखाचिषः ।

बाहुलते वसन्तश्रीस्त्वन्नः प्रत्यक्षचारिणी ॥६६॥

ལག་བའི་འབྲི་ཤིང་ སོར་མོ་ རྣམས།
 ཡལ་འདབ་ སེན་མོའི་ འོད་ཟེར་ བློ།
 མེ་ཏོག་དུ་གུར་ དམྱིད་ཀྱི་དབལ།
 བྱིད་ནི་ དེད་ལ་ མངོན་སུམ་གྱི། ༦༩

इत्येतदसमस्ताख्यं समस्तं पूर्वरूपकं ।
 स्मितम्मुखे-दोर्ज्योत्स्नेति समस्तव्यस्तरूपक ॥६॥ १॥

ཞེས་པ་ འདི་ནི་ མ་བསྐྱུགས་ཏེ།
 ལྷ་མ་ བསྐྱུས་པའི་ གཟུགས་ཅན་ལོ།
 བཞིན་ ལྷ་ འཇུག་པའི་ ལྷ་འོད་ཅེས།
 གཟུགས་ཅན་ བསྐྱུས་ དང་ མ་བསྐྱུས་པའོ། ༦༧

ताम्राङ्गुलिदलश्रेणि नखदीधितिकेसरं ।
 ध्रियते मूर्ध्नि भूपालैर्भवच्चरणपङ्कज ॥६८॥

སོར་མོ་དམར་བའི་ འདབ་སྤེང་དང་།
 སེན་མོའི་འོད་ཀྱི་ ལོ་སར་ཅན།

རྩོད་ཀྱི་ ལབས་ཀྱི་ རྩུ་སྐྱེས་ནི།
 ས་སྐྱོང་རྣམས་ཀྱི་ ལྷོ་པོར་ འཛིན། ॥ ༤༧

अगुल्यादौ दलादित्वं पादे चारोप्य पद्यताम् ।
 तद्योग्यस्थानविन्यासादेतत्सकलरूपकम् ॥६६॥

སོར་མོ་ ལ་སོགས་ འདབ་སོགས་ དང།
 ཀང་བས་ པརྒྱ་ཉིད་ བྱས་ནས།
 དེ་ལོས་ བཀས་སུ་ རྣམ་བཀོད་པ།
 འདི་ནི་ མཐའ་དག་ བཟུགས་ཅན་ཉིད། ॥ ༤༨

[14b] अकस्मादेव ते चण्डि स्फुरिताधरपल्लवम् ।
 मुखं मुक्ताहचो धत्ते घर्मात्मःकणमञ्जरी ॥७०॥

བཀྲུས་མོ་ ལྷོ་བྱུར་ ཉིད་དུ་ནི།
 རྩོད་བཀོད་ མཚུ་ཡི་ཡལ་འདབ་ བཀོ།
 རྒྱལ་གྱི་རྩུ་ཡི་ཐོག་པ་ཡི།
 དོག་པ་ ལྷོ་དུག་ ལོད་ཅན་ འཛིན། ॥ ༧༠

मञ्जरीकृत्य घर्मांशु पल्लवीकृत्य चाधरं ।

नान्यथा कृतमत्राप्यस्योद्यत्तरूपकं । ७१॥

अदिसंके दृष्यं कुरु रोगं वरं सुखं ।

अकुरु यत् अथ अदिसंकेदं सुखं गृही ।

यदिसंकेदं कुरु यत् यत् अकुरु यत् सुखं ।

देष्टुं कुरु कुरु यत् यत् अकुरु यत् सुखं ॥ ७१ ॥

वल्लितभ्रु गलद्धर्मजलमालोहितेक्षणम् ।

विवृणोति मदावस्थामिदं वदनपङ्कजम् ॥७२॥

यदिसंकेदं अदिसंकेदं अकुरु यत् सुखं ।

दृष्यं कुरु रोगं वरं सुखं ।

अकुरु यत् अथ अदिसंकेदं सुखं गृही ।

देष्टुं कुरु कुरु यत् यत् अकुरु यत् सुखं ॥ ७२ ॥

अविकृत्य सुखाङ्गानि सुखमेवारविन्दताम् ।

आसीद्गमितमत्रेदमतोवयविरूपकम् ॥७३॥

འདིར་ནི་ བཞིང་བའི་ཆ་ཤས་དག །
 རྣམ་འགྲུར་ མ་བྱས་ བཞིང་བ་ཉིད །
 བསྐྱར་ བཞིང་བྱས་ དེས་ན་ འདི །
 ཆ་ཤས་ ཅན་གྱི་ བཟུགས་ཅན་ལོ། ། ༧༢

मदपाटलगण्डेन रक्तनेत्रोत्पलेन ते ।

मुखेन मुग्धे सोप्येष जनो रागमयः कृतः ॥७४॥

མཛེས་ མ་ མུམ་ བའི་ འཁྲུང་ཚོས་དམར་ །
 མེག་གི་ ཞུ་བྱལ་ དམར་ བོ་ཅན་ །
 མུང་གི་ བཞིང་གིས་ མུ་བོ་ནི་ །
 འདི་ཡང་ དམར་བའི་ རང་བཞིན་ བྱས་ ། ༧༣

एकाङ्गरूपकञ्चैतदैवं द्विप्रभृतीनि च ।

अङ्गानि रूपयन्त्यत्र योगायोगौ भिदाकरौ ॥७५॥

དེ་ལྟར་ འདིར་ནི་ བཞིང་ས་ མེག་ས་གྱི་ །
 ཡན་ལག་ རྣམས་ གྲང་ བསལ་བྱེད་བ་ །

འདི་ནི་ ཡན་ལག་གཅིག་གཟུགས་ཅན་ །
 ལྷན་དང་མི་ལྷན་ བ་དད་བྱེད་ །། 214

स्मितपुष्पोज्ज्वलं लोलनेत्रभ्रूंगमिद मुख ।
 इति [15a] पुष्पद्विरेफाणां सङ्गत्या युक्तरूपक ॥७२॥

གདོང་ འདི་ འཇུག་ བའི་ མེ་དོག་འབར་ །
 གཡོ་བའི་ མིག་གི་ བྱང་བ་ཅན་ །
 ཞེས་བ་ མེ་དོག་ བྱང་བ་ དག་ །
 འགྲོགས་ བས་ ལྷན་ བའི་ གཟུགས་ ཅན་ལོ་ །། 72

इदमाद्रस्मितज्योत्स्नं स्निग्धनेत्रोत्पलं मुखं ।
 इति ज्योत्स्नोत्पलायोगादयुक्तञ्चाम रूपकम् ॥७३॥

གདོང་ འདི་ འཇུག་ གཡོང་ རླེད་དང་ །
 ལྷན་ བའི་ མིག་གི་ རླེད་ལ་ཅན་ །
 རླེད་ རླེད་ མི་འཇུག་ བས་ །
 འཇུག་ མིག་ཞེས་ བའི་ གཟུགས་ ཅན་ལོ་ །། 73

དོན

रूपणादङ्गिनोङ्गानां रूपणारूपणाश्रयात् ।
रूपक विषम नाम ललित जायते यथा ॥७८॥

यङ्'लमा'उक्'मत्तुमास' यङ्'लमा' ङ्'सस' ।
मत्तुमास'गुस' मत्तुमास'सु'स'गुस' ल' ।
मत्तुमास' व' ङ्'स'स'स'स' ल'स' म'स' ।
मत्तुमास' उक्' स'स'स'स' य'ङ्'ङ' न'स'स' ॥ ७८

मदरक्तकपोलेन मन्मथस्त्वन्मुखेन्दुना ।
नतिते भ्रूलतेनाल मर्दितुम्भुवनत्रय ॥७९॥

सु'स'स'स' स'स'स' स'स' स'स' स'स' ।
सु'स'स'स' स'स'स' स'स' स'स' ।
सु'स' स'स'स' स'स'स' स'स'स' स'स' ।
स'स'स'स' स'स'स'स' स'स'स' स'स' ॥ ७९

हरिपादः शिरोलम्बनजहुकन्याजलाशुकः ।
जयत्यसुरनि.शकसुरानन्दोत्सवध्वजः ॥८०॥ •

རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། །
 རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། །
 རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། །
 རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། ། །

विशोषेणसमग्रस्य रूपं केतोर्यदीदृश ।
 पादे तदर्पणादेतत् सविशोषणरूपकं ॥८१॥
 རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། །
 རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། །
 རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། །
 རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། །

न मील्यति पद्मानि न नभोप्यवगाहते ।
 त्वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणायैव प [15b] श्यति ॥८२॥

རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། །
 རྩོམ་ལྷན་གྱི་སྐབས་ལྷན་པོ་ལྷན་པོ། །

ཁྱིེ་གཏོང་ལྷ་བས་ བདག་གི་ནི།
 སྲོག་ལྷ་མས་ འཕྲོག་པ་ ཉིད་དུ་ བལྟ། ॥ ༤༤

अक्रिया चन्द्रकार्याणामन्यकार्यस्य च क्रिया ।
 अत्र सन्दर्श्यते तस्माद्विरुद्धज्ञानं रूपकं ॥८३॥

ལྷ་བའི་ བྱ་བ་ བྱ་མིན་ དང།
 བཞུན་ བྱི་བྱ་བའི་ བྱ་བ་ འདྲིང།
 ཡང་དག་ བལྟན་ ཉི་ དེ་ ཡི་ ལྱིར།
 འགལ་བ་ ཞེས་བྱའི་ བཞུགས་ཅན་ནོ། ॥ ༤༢

गाम्भीर्येण समुद्रोसि गौरवेणासि पर्वतः ।
 कामदत्वाच्च लोकानामसि त्व कल्पपादपः ॥८४॥

ཁྱིེ་ནི་ ཟབ་ བས་ བྱ་མཚོ་དང།
 བརྗེང་བ་ ཉིད་ ཀྱིས་ སི་ བོ་ ཡིན།
 འཇིག་རྟེན་ ལྷ་མས་ ལ་ འདོད་པ་ནི།
 ལྷེར་ ལྱིར་ དབག་ བསམ་ཀླང་འབྱུང་ངོ་ ॥ ༤༥

गाम्भीर्यप्रमुखैरत्र हेतुभिः सागरो गिरिः ।
कल्पद्रुमश्च क्रियते तदिदं हेतुरूपकं ॥८५॥

२६८ ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ॥ ८५

राजहसापभोगार्हं भ्रमरप्रार्थ्यसौरभ ।
सखि वक्ताम्बुजमिदन्तवेति स्मिष्टरूपकं ॥८६॥

३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ।
३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ॥ ८६

इष्टं साधर्म्यवैधर्म्यदर्शनाद्गौणमुख्ययोः ।
उपमाव्यतिरेकाख्यं रूपकद्वितयं यथा ॥८७॥

गच्छेत् नृन् क्विं सत्यं च ।
 क्विं सत्यं क्विं सत्यं क्विं सत्यं ।
 नृन् नृन् क्विं सत्यं क्विं सत्यं ।
 गच्छेत् नृन् क्विं सत्यं क्विं सत्यं ॥ ८७

अयमालोहितच्छायो मदेन मुखचन्द्रमा ।
 सन्नद्धोदयरागस्य चन्द्रस्य प्रतिगर्जति ॥८८॥

कुर्वन् सत्यं गच्छेत् नृन् क्विं सत्यं ।
 गच्छेत् नृन् क्विं सत्यं क्विं सत्यं ।
 नृन् नृन् क्विं सत्यं क्विं सत्यं ।
 क्विं सत्यं क्विं सत्यं क्विं सत्यं ॥ ८८

चन्द्रमाः पीयते देवैर्मया त्वन्मुखचन्द्रमाः ।
 असमग्रोप्यसौ [16a] शश्वदयमापूर्णमण्डलः ॥८९॥

क्विं सत्यं क्विं सत्यं क्विं सत्यं ।
 गच्छेत् नृन् क्विं सत्यं क्विं सत्यं ।

འདི་ནི་གང་ག་མ་ཡིན་ཡང་།
 འདི་ནི་རྟག་དུ་དགུལ་འཁོར་རྫོགས་༥༥

मुखचन्द्रस्य चन्द्रत्वमित्थमन्योपतापिनः ।
 न ते सुन्दरि सवादीत्येतदाक्षेपरूपकं ॥६०॥

མཚོ་མ་མཚོ་གཏོང་གཏོང་རྒྱ་བ་ནི་།
 འདི་ལྟར་གཞན་དག་ག་དུང་བྱེད་པས་།
 རྒྱ་བ་ཉིད་དུ་བརྗོད་མིན་ཞེས་།
 དེ་ནི་སྐད་པའི་གཞུགས་ཅན་ནོ་༥༥

मुखेन्दुरपि ते चरिड मां निदहति निदय ।
 भाग्यदोषान्ममैवेति तत्समाधानरूपकं ॥६१॥

ག་དུ་མ་མོ་མཚོ་གཏོང་རྒྱ་བས་ཀྱང་།
 བརྗེ་བ་མེད་པར་བདག་སྲིག་བ།
 བདག་ཉིད་སྐལ་བ་ཉིད་ཀྱི་སྐྱོན་།
 ཞེས་འདི་མཉམ་འཛོག་གཞུགས་ཅན་ནོ་༥༥

मुखपङ्कजरङ्गेस्मिन् ध्रुवतानर्तकी तव ।
लीलानृत्यं करोतीति स्म्यं रूपकरूपक ॥६२॥

छिन् गदेन् अन्मञ्जुष द्दंरं अदिन् ।
झीव्मदिन् अस्त्रे यिन् गन्माम्ब म ।
द्वेय झीमं द्दमात् मस गन्मुदे द् ।
वेसंय मञ्जुमस उवग्नी मञ्जुमस उव ॥ ७३

नैतन्मुखमिदम्पद्मं न नेत्रे भ्रमराविमौ ।
पतानि केसराण्येव नंता दन्तार्चिषस्तव ॥६३॥

अदि वे गदेन्मिन् अदि यद्म ।
अदि द्दमां मीमंमिन् अदि सुद म ।
अदि क्कसस म्मंमन् उदि यिन् अदि ।
छिन् ग्नीं स्येयि द्दं म्मंमिन् ॥ ७३

मुखादित्वं निवर्त्यैव पद्मादित्वेन रूपणात् ।
उद्भावितगुणोत्कर्षन्तत्त्वापह्ववरूपकं ॥६४॥

བཤོང་ ལ་སོགས་ བ་ཉིད་ བསྐྱོག་སྟེ། །
 བད་ ལ་སོགས་ བརྒྱལ་ས་བས་ །
 ཡོན་ཏན་ བྱད་ འཕགས་ བས་ལ་བྱེད་པ། །
 དེ་ཉིད་ བསྐྱོན་ དོར་ བརྒྱལ་ས་ཅན་ལོ། ། ༧༯

न पर्यन्तो विकल्पानां रूपकोपमयोरतः ।
 दिङ्मात्रं दर्शित धीरैरनुक्तमनुमीयताम् ॥६५॥
 བརྒྱལ་ས་ཅན་ དཔེ་ཡི་ རྣམ་ ཉོག་ རྣམས་ །
 མཐུང་ཡོད་མ་ཡིན་ དེ་ཡི་སྤྱིར། །
 རྫོང་ལྷན་ རྣམས་ ཀྱི་ རྫོགས་ ཅམ་ བསྐྱོན། །
 མ་བརྐྱོད་ རྫོས་ སྲུ་ དབག་ བར་བྱ། ། ༧༠

[16b] जातिक्रियागुणद्रव्यवाचिनैकत्र वर्तिना ।
 सर्ववाक्योपकारश्चेत् तमाहुर्दीपकं यथा ॥६६॥

རིགས་ དང་ བྱ་ བ་ ཡོན་ཏན་ རྫོས། །
 རྫོགས་ བཤོག་ ལ་ལོ་ བཀས་པ་ ཡིས། །

གལ་ཏེ་ ངག་ ཀུན་ལ་ མཚན་ན།
 དེ་ནི་ གསལ་བྱེད་དུ་བརྗོད་ དཔེར །། ༡༩

पवनो दक्षिणः पर्णं जीर्णं हरति वीरुधाम् ।
 नवाय च नताङ्गीनाम् मानभङ्गाय कल्पते ॥६७॥

ལྷོ་ཡི་རྒྱང་ གིས་ འཁྲི་ཤིང་གི།
 འདབ་མ་རྗེད་པ་ ལྷགས་པར་བྱེད།
 དུད་པའི་ ལུས་ཙན་མ་ རྣམས་ཀྱི།
 ཁྱེད་པ་ གསར་དུ་ འཛོམས་པར་བྱེད། །། ༡༧

चरन्ति चतुरम्भोधिबेलोद्यानेषु दन्तिनः ।
 चक्रवालद्रिकुञ्जेषु कुन्दभासो गुणाश्च ते ॥६८॥

སྐྱུ་འོ་ ལུ་གཏེར་ བཞི་ ངོགས་ཀྱི།
 ལྷེད་མེས་ཚལ་དུ་ སོ་ཙན་ཏེ།
 ཁྱེད་ལུག་ རི་བོའི་ ཁྱེད་སྐྱུ་ ཡང་།
 ལྷེད་ཀྱི་ ཡོན་ཏན་ ཀུན་ལྷོ་ འོད། །། ༡༨

ଚକ୍ରଂ ପ୍ରସାଦଂ କ୍ରୁରଂ ଧରଂ ।
 ଶକ୍ତିଂ କ୍ରୁରଂ ମାତ୍ରାଶୟଂ କ୍ରମାଶଂ ଧରଂ ॥ ୧୦୩

जलं जलधरोद्गीर्णकुलङ्कहशिखण्डिनां ।
 चलञ्च तडितान्दाम बलं कुसुमधन्वनः ॥१०४॥

କୁ ଧରଂ କ୍ରୁରଂ ଧରଂ ଧରଂ କ୍ରୁ ।
 କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ ।
 କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ ।
 କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ ॥ ୧୦୪

त्वया कर्णोत्पलं कर्णं स्मरेणास्त्रं शरत्सने ।
 मयापि मरणे चेतस्त्रयमेतत्सम कृतं ॥१०५॥

କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ ।
 କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ ।
 କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ ।
 କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ କ୍ରୁରଂ ॥ ୧୦୫

शुक्लः श्वेताचिषो वृद्धयै पक्षः पञ्चशरस्य सः ।

स च रागस्य रागोपि यूनां रत्युत्सवश्रियः ॥१०६॥

दगर सुवास गृहस कौ देव दगर उव ।

दशेव सुदे दे शिस बदन लु व ।

देस गुर हवास बदन हवास बदन गृहस ।

व कुट दगर वदे दगर सुव दसव ॥ १०७

इत्यादिदीपकत्वेपि पूर्वपूर्वव्यपेक्षिणी ।

वाक्यमाला प्रयुक्तेति तन्मालादीपकं मतं ॥१०७॥

लेस शोवास वासव सुदे शिक सेव गुर ।

सुव सुव व सुव वदे ।

दग वी सुव व दग सुव सुव ।

दे वी सुव वदे वासव सुदे दे ॥ १०८

अवलेपमनङ्गस्य वर्धयन्ति वलाहकाः ।

कर्शयन्ति तु धर्मस्य मारुतोद्भूतशीकराः ॥१०९॥

ལྷོང་གིས་ གཙུབས་པའི་ཚུ་ཐིགས་ཅན།
 སྦྲིན་གྱིས་ ལུས་མེད་དག་གི་ བློ།
 ཨ་བ་ལེ་བ་ འཕེལ་བར་བྱེད།
 རྩལ་གྱི་ དག་ཅི་ སེལ་བར་བྱེད། ॥ ༡༠༥

अवलेपपदेनात्र वलाहकपदेन च ।

क्रिये विरुद्धे सयुक्ते [176]तद्विरुद्धार्थदीपकं ॥१०६॥

འདིར་ཅི་ སྦྲིན་གྱི་ཚོག་དག་དང་།
 ཨ་བ་ལེ་པའི་ ཚོག་དག་གིས།
 བྱ་བ་ འགལ་བར་ལྷན་བ་ རེ།
 འགལ་བའི་དོན་གྱི་གསལ་བྱེད་དོ། ॥ ༡༠༦

हरत्याभोगमाशानां गृह्णाति ज्योतिषां गणम् ।

आदत्ते वाद्य मे प्राणानसौ जलधरावली ॥११०॥

ཚུ་འཛོལ་ དག་གི་ སྦྲེང་བ་ འདིས།
 སྦྲོགས་རྣམས་ཀྱི་ ཅི་ ལོ་སྐབས་ འཕྲོག།

क्षर सः यीं किं क्लेशः क्लेशः अक्षिण ।
 देवः यत्तः वदन्तः शीघ्रं क्लेशः अक्षिण ॥ ११०

अनेकशब्दोपादानात् क्रियैवैकात्र दीप्यते ।
 यतो जलधरावल्यास्तस्मादेकार्थदीपकः ॥१११॥

गत्तुं श्रुतः क्लेशः श्रुतः वः यी ।
 सुः वः गच्छन्तः श्रुतः गच्छन्तः श्रुतः अक्षिण ।
 सुः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः वः ।
 देः श्रुतः श्रुतः गच्छन्तः गच्छन्तः श्रुतः ॥ १११

हृद्यगन्धवहास्तुङ्गास्तमालश्यामलत्विष ।
 दिवि भ्रमन्ति जीमूता भुवि चैते मतंगजाः ॥११२॥

श्रुतः श्रुतः वः यीं श्रुतः अक्षिण ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः यीं श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ।
 श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः श्रुतः ॥ ११२

अत्र धर्मैरभिज्ञानामभ्राणां दन्तिनामपि ।
भ्रमणेनैव सम्बन्ध इति श्लिष्टार्थदीपक ॥११३॥

२२२ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ।
३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ।
४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ।
४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० ॥ ११३

अनेनैव प्रकारेण शेषाणामपि दीपके ।
विकल्पानामनुगतिर्विधातव्या विवक्षणे ॥११४॥

११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० ।
१२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० ।
१३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० ।
१४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० ॥ ११४

अर्थावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि ।
दीपकस्थान एवेष्टमलंकारत्रयं यथा ॥११५॥

वासवः सुतः ॥ १० ॥ वासवः सुतः ।
 दैवः सङ्घः ॥ १० ॥ दैवः सङ्घः ॥ १० ॥
 वासवः ॥ १० ॥ वासवः ॥ १० ॥
 सुतः ॥ १० ॥ सुतः ॥ १० ॥ ॥ १० ॥

विकसन्ति कदम्बानि स्फुटन्ति कुटजोद्गमाः ।
 उन्मीलन्ति च [18a] कन्दल्यो दलन्ति ककुभानि च ॥११६॥

वासवः ॥ १० ॥ वासवः ॥ १० ॥
 सुतः ॥ १० ॥ सुतः ॥ १० ॥
 वासवः ॥ १० ॥ वासवः ॥ १० ॥
 सुतः ॥ १० ॥ सुतः ॥ १० ॥ ॥ १० ॥

उत्कण्ठयति मेघानां माला वर्गङ्गलापिनां ।
 यूनां चोत्कण्ठयत्यद्य मानसम्मकरध्वजः ॥११७॥

सुतः ॥ १० ॥ सुतः ॥ १० ॥
 सुतः ॥ १० ॥ सुतः ॥ १० ॥

རྒྱ་སྤྱིན་ རྒྱལ་མཚན་ ཅན་ རྒྱིས་ དེང་ །
 ན་ རྒྱང་ རྣམས་ ཡིད་ འདོད་ ལྷན་བྱེད་ ॥ ११७

जिह्वा विश्वम्भवानद्य विहरत्यवरोधनै ।
 विहरत्यप्सरोभिस्ते रिपुवर्गो दिवं गतः ॥११८॥

ཀྱུན་ལས་ རྒྱལ་ནས་ དེ་རིང་ རྒྱོད་ །
 བཅུན་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད་ །
 རྒྱོད་ཀྱི་དབྱ་སྤེ་ མཐོ་རིས་ སོང་ །
 ལྷ་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད་ ॥ ११८

प्रतिषेधोक्तिराक्षैपत्रैकाल्यापेक्षया त्रिधा ।
 अथास्य पुनराक्षेप्यभेदानन्त्यादनन्तता ॥११९॥

དགག་པ་ བརྗོད་པ་ འགོག་པ་ ལྟེ་ །
 དུས་གསུམ་ལ་ལྟོས་ རྣམ་པ་ གསུམ་ །
 ཅེ་སྟེ་ དེ་ཡང་ དགག་བྱ་ཡི་ །
 དབྱེ་བ་ མཐའ་ཡས་ ལྗིང་ མཐའ་ཡས་ ॥ ११९

अनङ्गः पञ्चभिः पुष्पैर्विश्वं व्यजयतेषुभिः ।

इत्यसंभाव्यमथवा विचित्रवस्तुशक्तयः ॥१२०॥

सुखं खेदं चैव किं खेदोपायं च ।

खेदं ह्यसंख्यं गुणं यथा कुरुते च ।

उत्सवः खेदोपायं यथा चैव ।

इत्यसंभाव्यं यथा चैव ॥ १२० ॥

इत्यनङ्गजयायोगबुद्धिर्हेतुबलादिह ।

प्रवृत्तैव यदाक्षिप्ता वृत्ताक्षेपस्तदीदृशः ॥१२१॥

लेशं चैव नैव किं सुखं यथा च ।

सुखं खेदं चैव यथा चैव चैव ।

ये ह्यसंख्यं यथा चैव यथा चैव ।

सुखं चैव नैव यथा चैव ॥ १२१ ॥

कुतः कुवलयं कर्णे करोषि कलभाषिणि ।

किमपाङ्गमपर्याप्तमस्मिन्कर्मणि मन्यसे ॥१२२॥

ལྷོན་རྫོགས་ས་ ནག་ ཅི་ཡི་སྤྱིར་ །
 རྣ་བ་ལ་ནི་ ཡུའུལ་ འཇུག་ ། རྣ་བ་
 ལས་ འདི་ལ་ རི་ རྣ་བ་མིག་དག་ །
 ཡོངས་རྫོགས་ རིན་བར་ སེམས་སམ་ ཅི ། १३३

स वर्तमानाक्षेपोयं कुर्वत्ये [186] वासितोत्पलं ।
 कर्णे कावित्प्रियेणैव चाटुकारेण रुध्यते ॥१२३॥

འགའ་ཞིག་ དཀར་མིན་ ཡུའུལ་ །
 རྣ་བར་འཇུག་ལ་ མཇོའ་བོ་ཡིས་ །
 དེ་རྣམ་ བརྟོད་པས་ མཇོས་བྱེད་བ་ །
 འདི་ནི་ མཇོན་གྱིར་ འགོག་པ་འོ ། १३३

सत्यं ब्रवीमि न त्वम्मान्द्रष्टुं बल्लभं लप्स्यसे ।
 अन्यचुम्बनसंक्रान्तलाक्षारत्नेन चक्षुषा ॥१२४॥

ཇོ་བོ་ བདེན་བར་ རྫོ་འོ་ བདག་ །
 བཞུན་ དང་ཚུ་སྤྱོད་པས་ འཕྲོས་པ་འི་ །

सु श्लेषासः श्लेषः दसः श्लेषः श्लेषः ।
 श्लेषः श्लेषः श्लेषः दसः श्लेषः ॥ १२८

सोय भविष्यदाक्षेपः प्रागेवातिमनस्विनी ।
 कदाचिदपराधोस्य भावीत्येवमरुन्ध यत् ॥१२५॥

श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः ।
 श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः ।
 श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः ।
 श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः ॥ १३४

तव तन्वाङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवं ।
 यदि सत्यमृदून्येव किमकाण्डे रुजन्ति मां ॥१२६॥

श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः ।
 श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः ।
 श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः ।
 श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः श्लेषः ॥ १३५

धर्माक्षेपोयमाक्षितमङ्गनागात्रमार्दव ।
कामुकेन यदत्रैवं कर्मणा तद्विरोधिना ॥१२७॥

मार्त्तुः र्दे भ्रूः र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे ।
दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे ॥ १२७ ॥
सुद भेदे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे ।
रर्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे ।

सुन्दरी सा नवेत्येष विवेकः केन जायते ।
प्रभामात्रं हि तरल दृश्यते तत्र नाश्रयः ॥१२८॥

दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे ।
रर्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे ।
दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे ।
रर्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे र्दे ॥ १२८ ॥

धर्म्याक्षेपोयमाक्षितो धर्मो धर्मं प्रभाह्वयं ।
अनुज्ञायात्र तद्रूपमत्याश्चर्यं विवक्षता ॥१२९॥

॥ १३० ॥
 ॥ १३१ ॥
 ॥ १३२ ॥
 ॥ १३३ ॥

चञ्चुषी [19a] तव रज्येते स्फुरत्यधरपल्लवः ।
 ध्रुवौ च भुम्भे न तथाप्यदुष्टस्यास्ति मे भयं ॥१३०॥
 ॥ १३१ ॥
 ॥ १३२ ॥
 ॥ १३३ ॥

स एष कारणाक्षेपः प्रधानं कारणं भियः ।
 स्वापराधो निबिद्धोत्र यत्प्रियेण पट्टीयसा ॥१३१॥

१- ॥ १३० ॥
 ५ ॥ १३१ ॥

ॐ अङ्गिणस्य च योऽङ्गिः श्रुत्वा मर्त्तुः ।
 ॐ सन्धीः श्रेयस्य च अङ्गीर्वापुः ॥ १३१

दूरे प्रियतमः सोयमागतो जलदागमः ।
 दृष्टाश्च फुल्ला निचुला न मृता चास्मि किं न्वहं ॥१३२॥

अहं यो दम्यं किं सन्धिः श्रेयस्य ।
 श्रुत्वा अङ्गीर्वापुः श्रेयस्य च ।
 किं श्रुत्वा यत् श्रेयस्य च अङ्गीर्वापुः ।
 सन्धीर्वापुः श्रेयस्य च अङ्गीर्वापुः ॥ १३३

कार्याक्षेपः स कायस्य मरणस्य निवर्त्तनात् ।
 तत्कारणमुपन्यस्य दारुणं जलदागमं ॥१३३॥

श्रेयस्य श्रेयस्य च अङ्गीर्वापुः ।
 श्रेयस्य च अङ्गीर्वापुः श्रेयस्य च ।
 अङ्गीर्वापुः श्रेयस्य च अङ्गीर्वापुः ।
 श्रेयस्य च अङ्गीर्वापुः श्रेयस्य च ॥ १३३

न चिरं मम तापाय तव यात्रा भविष्यति ।

यदि यास्यसि यातव्यमलमाशंकयात्र ते ॥१३४॥

गल'रु' ग'वेगल'क' ग'वेगल'दर' खईर ।

रुि'रुि' वरुि'द'दल' वदग'ल' री ।

गरुद व डुरु'रि' रुरु'रि'रुरु' ।

रुि'ल' रुि'रु' र'गल'रि'रु'ल' ॥ १३८

इत्यनुष्ठामुखेनैव कान्तस्याश्लिष्यते गतिः ।

मरणं सूचयन्त्येव सोनुष्ठाक्षेप उच्यते ॥१३५॥

रेल'द' रु'रि'व' गल'ल'रुि'द'दल' ।

रेल'गल'द' रुि'रु'रु'रु'रु'रु' री ।

खईर'द'द'रि' वरुि'द'द' र'गल'रुि'द'द' ।

रुि'रु'रु' रेल' गल'द' र'गल'रु'द'द' वईर ॥ १३५

धनञ्च बहु लभ्यन्ते सुख क्षेमं च वर्त्मनि ।

न च मे प्राणसं[19b]देहस्तथापि प्रिय मास्म गाः ॥१३६॥

རྗེ་ཉི་མང་པོ་རྗེད་ འགྲུར་ ཞིང་ །
 ལམ་དུ་ ཡང་ནི་ བདེ་ ཞིང་ དག།
 བདག་སློབ་ལ་ ཡང་ ཐེ་ཚོམ་མེད་ །
 འོན་ཀྱང་ མཇའ་ བོ་ འགྲོ་མི་བུ ། १३५

प्रत्याचक्ष्णया हेतून् प्रिययात्राविबन्धिनः ।
 प्रभुत्वेनैव रुद्धस्तत्प्रभुत्वाक्षेप ईदृशः ॥१३७॥

མཇའ་ བོ་ འགྲོ་བར་ སློབ་བ་ ཡི།
 སྐྱུ་ རྣམས་ དག་ ཉི་ རབ་ བཤད་ནས།
 དབང་ཉིད་ ཀྱིས་ ཉི་ དེ་ འགྲོག་ བ།
 འདི་འདྲ་ དབང་གིས་ འགྲོག་བ་འོ། १३७

जीविताशा बलवती धनाशा दुर्बला मम ।
 गच्छ वा तिष्ठ वा कान्त खावस्था तु निवेदिता ॥१३८॥

བདག་ཉི་ གསོལ་རེ་ སློབས་ དང་ ལྡན།
 རྗེར་གྱི་ བསམ་ བ་ སློབས་ལྡན་ མིན།

सङ्घर्षो मापेयस्य सस्य वल्लुगस्य लयस्य सस्य ।
 रर मी मायस्य सस्य सस्य सस्य ॥ १३८

असावनादराक्षेपो यदनादरवद्वचः ।

प्रियप्रयाणं रुन्धत्या प्रयुक्तमिह रक्तया ॥१३९॥

मादः सुदिनं अदिनं किं कस्य सस्य सस्य ।
 सङ्घर्षो ररे मयोदः पं अयोमा सुदे उदः ।
 स सुस्य वल्लुगः सुं कस्य सुं स ।
 अदिनं स सुस्य सस्य अयोमा ररे ॥ १३९

गच्छ गच्छसि चेत्कान्त पन्थानः सन्तु ते शिवाः ।

ममापि जन्म तत्रैव भूयाद्यत्र गतो भवान् ॥१४०॥

सङ्घर्षो मापेयस्य सस्य वल्लुगः ।
 सुदिनं अदिनं किं कस्य सुदिनं उदः ।
 मादः सुदिनं सुदिनं मापेयस्य सस्य ररे ।
 यदमा सुदिनं सुदिनं सुदिनं सुदिनं उदः ॥ १४०

इत्याशीर्वचनाक्षेपो यदाशीर्वादवर्त्मना ।
स्वावस्थां सूत्रयन्त्यैव कान्तयात्रा निषिध्यते ॥१४१॥

दे०बु० षी०ब०द०ल० ग्री० ग० ।
२० गी० ग०न०स०स० ग०न०स० ।
स०द० व०द० व०द०स० २०ग०स० ।
२०द० व०द० षी०ब०द० ग्री० २०ग०स० ॥ १०१

यदि सत्यैव यात्रा ते काप्यन्या मृग्यतां त्वया ।
अहमद्यैव रुद्धास्मि रन्धापेक्षेण मृत्युना ॥१४२॥

ग०ल० १० वृ०द०स० व०द०क० १० ।
वृ०द० ग्री० ग०न०स० २०ग०स० ।
व०द०ग० व०द० ग०न०स० २०ग०स० ।
दे०द० १०द० २०ग०स० २०ग०स० ॥ १०२

इत्येष [20a] परुषाक्षेपः परुषाक्षरपूर्वकम् ।
कान्तस्याक्षिप्यते यस्मात्प्रस्थानं प्रेमनिघ्नया ॥१४३॥

गणः श्रुतः खड्गं वदति दण्डं गुरुं मया ।
 खड्गं वदति वदति वदति वदति वदति ।
 क्विपुत्रं यो यो क्विपुत्रं यो यो ।
 नदीं क्विपुत्रं क्विपुत्रं क्विपुत्रं ॥ १२३

गन्ता चेद्गच्छतूर्णन्ते कर्णं यान्ति पुरा रवाः ।
 आर्तबन्धुमुखोद्गीर्णाः प्रयाणप्रतिबन्धिनः ॥१४४॥

गणः श्रुतः खड्गं वदति दण्डं गुरुं मया ।
 क्विपुत्रं यो यो क्विपुत्रं यो यो ।
 वदति वदति वदति वदति वदति ।
 गणः श्रुतः खड्गं वदति दण्डं गुरुं मया ॥ १२४

साचिर्व्याक्षेप एवैष यदत्र प्रतिबिध्यते ।
 प्रियप्रयाणं साचिर्व्यं कुर्वत्येकान्तरक्तया ॥१४५॥

गणः श्रुतः खड्गं वदति दण्डं गुरुं मया ।
 क्विपुत्रं यो यो क्विपुत्रं यो यो ।

མཇེའ་བོའི་བགོད་པ་ འགོག་པ་ འདི།
གྲོས་ཉིད་ ཀྱིས་ནི་ འགོག་པ་འོ།། ༡༥༣

गच्छेति वक्तुमिच्छामि मत्प्रियं त्वत्प्रियैषिणी ।
निर्गच्छति मुखाद्वाणी मा गा इति करोमि किम् ॥१४६॥

བཞུད་ཅེས་ བྱོད་དགུས་ བཇོད་ འདོད་ ཀྱང་།
བདག་ཉིད་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ཚོལ།
མ་གཤེགས་ ཅེས་པ་ ཁ་ནས་ནི།
གྱུར་བར་ གྱུར་ལ་ བདག་ ཅི་ བྱེད་ །། ༡༥༦

यत्नाक्षेपस्स यत्नस्य कृतस्यानिष्टवस्तुनि ।
विपरीतफलोत्पत्तेरानर्थक्योपदर्शनात् ॥१४७॥

མི་འདོད་ དངོས་ལ་ འབད་བྱས་པས།
འབྲས་བུ་ ལྷན་ ཅི་ལོག་ བསྐྱེད་པས།
དོན་མེད་ ཉི་བར་ བསྐྱེད་པའི་ ལྷིར།
དེ་ནི་ འབད་པས་ འགོག་པའོ།། ༡༥༧

क्षणदर्शनविघ्नाय पक्षमस्पन्दाय कुप्यतः ।

प्रेम्णा प्रयाणन्त्व ब्रूहि मया तस्येष्टमिष्यते ॥१४८॥

क्षण उवाच ब्रूवती मीमासा मुनेः पति ।

इति मया वक्ष्यते त्वं त्वं ।

मुनेः पुत्रो मया वदन् वदन् वदन् ।

वदन् वदन् वदन् वदन् ॥ १४८ ॥

अथ परवशाक्षेपो यत्प्रेमपरतन्त्र[20b]या ।

तया निषिध्यते यात्रेत्यस्यार्थस्योपसूचनात् ॥१४९॥

माद मुनेः मया वदन् मया वदन् ।

वदन् वदन् वदन् वदन् ।

वदन् वदन् वदन् वदन् ।

वदन् वदन् वदन् वदन् ॥ १४९ ॥

सहिष्ये विरहं नाथ देहादृश्याञ्जनं मम ।

यदक्तनेत्राङ्गन्दर्पः प्रहन्तुं मां न पश्यति ॥१५०॥

མགོན་པོ་ འབྲེལ་བ་ བརྗེད་པར་ བསྐྱི །
 བཀང་གཤམ་ མིག་ བསྐྱོས་ བདག་ ལ་ནི །
 འདོད་པས་ བསྐྱུན་དུ་ མི་མཐོང་བའི །
 མཐོང་མིན་ མིག་སྐྱུན་ བདག་ལ་ ལྷོལ ། ༡༣༠

दुष्करं जीवनोपायमुपन्यस्योपरुध्यते ।
 पत्युः प्रस्थानमित्याहुरुपायाक्षेपमीदृशं ॥१५१॥

འཚོ་བའི་ཐབས་ བེ་ དཀའ་བ་དག །
 ཉེ་བར་བཀོད་ནས་ བདག་པོ་ནི །
 འགྲོ་བ་ འགོག་པར་བྱེད་པའི་ ལྷིར །
 འདི་འདྲ་ ཐབས་ ཀྱིས་ འགོག་པར་བརྗེད ། ༡༣༡

प्रवृत्तैव प्रयामीति वाणी वल्लभ ते मुखात् ।
 अयतापि त्वयेदानीम् मन्दप्रेम्णा ममास्ति किम् ॥१५२॥

རོ་བོ་ བྱོད་ཀྱི་ ཞལ་ནས་ ཚོག །
 བདག་ འགྲོ་ ཞེས་ བ་ རེས་པར་བྱུང་ །

अहंरं व दसकं वं त्रिंशं ५ ।
 सः श्रुं कं वं यदं वदमं वं ॥ १५३ ॥

रोषाक्षेपोयमुद्रिक्तस्नेहनिर्यन्त्रणात्मया ।
 संरन्धया प्रियारन्ध प्रयाणं यन्निवार्यते ॥१५३॥

अहंरं वं कृशं वं स वं वं वं वं ।
 वदमं श्रुं त्रिंशं वं अहंरं वं वं ।
 वं वं वं वं वं वं वं वं ।
 वं वं वं त्रिंशं वं वं वं ॥ १५३ ॥

नाघ्रातं न कृतं कर्णे स्त्रीभिर्मधुनि नार्पितं ।
 त्वद्दिषां दीर्घिकास्वेव विशीर्णञ्जीर्णमुत्पलं ॥१५४॥

सः वं वं वं वं वं वं वं ।
 सः वं वं वं वं वं वं वं ।
 त्रिंशं वं वं वं वं वं वं ।
 वं वं वं वं वं वं वं ॥ १५४ ॥

असावनुक्रोशाक्षेपः सानुक्रोशमिवोत्पले ।

व्यावर्त्य कम तद्योग्यं शोच्यावस्थोपदर्शनात् ॥१५५॥

श्रीरुद्रैः वरुणैः सङ्घैः सङ्घैः सङ्घैः ।

देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः ।

सुन्दरैः सुन्दरैः सुन्दरैः सुन्दरैः सुन्दरैः ।

दशैः श्रीरुद्रैः दशैः दशैः ॥ १५५ ॥

अर्थो न संभृतः कश्चिन्न वि[21a]द्या काचिदर्जिता ।

न तपः संचित किचिद्रतञ्च सकलं वयः ॥१५६॥

देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः ।

देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः ।

देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः ।

देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः देवैः ॥ १५६ ॥

असावनुशयाक्षेपो यस्मादनुशयोत्तरं ।

अथाज्जुनादेव्यावृत्तिर्दशितेह गतायुषा ॥१५७॥

मरुत्पुरं अद्वैतं किं क्वं शब्दं वक्ष्ये ।
 दैव्यं श्रुत्वा यत् शब्दं तत् शब्दं वक्ष्ये ।
 अत्रोक्तं च मत्तं तत्रैव शब्दं वक्ष्ये ।
 अद्वैतं अत्रोक्तं वक्ष्ये अत्रोक्तं वक्ष्ये ॥ ३४७

किमयं शब्दं भोदः किं वा हंसकदम्बकम् ।
 रुतसूपुरसंवादि श्रूयते तन्न तोयद ॥१५८॥

अद्वैतं शब्दं श्रुत्वा तत्रैव वक्ष्ये ।
 अत्रोक्तं च मत्तं तत्रैव शब्दं वक्ष्ये ।
 अत्रोक्तं च मत्तं तत्रैव शब्दं वक्ष्ये ।
 अत्रोक्तं च मत्तं तत्रैव शब्दं वक्ष्ये ॥ १५८

इत्ययं संशयाक्षेपः संशयो यन्निवर्त्यते ।
 धर्मेण हंससुलभेनास्पृष्टघनजातिना ॥१५९॥

अत्रोक्तं च मत्तं तत्रैव शब्दं वक्ष्ये ।
 अत्रोक्तं च मत्तं तत्रैव शब्दं वक्ष्ये ।

ढाद ढेढा षे ङेढा ङ्ङेढा ङुद ष ।
 ढद ङे षे ङेढा ढढेढा ष ढे ॥ १४०

अढृततढन ढढानां द्दुष्टर ङ्ङिढधतारके ।
 ढुखेढदु ढव सतढस्ढिढनढरेण ङिढिढदुढा ॥१६०॥

षदुद ङेढे षदढ ङेढे षदु ढ ।
 ङ्ङेढे ङेढे ङ्ङुढ षढे ङुढ ङे ।
 ङुद षढेढे ङ्ङेढे ढद षेढे षढेढे ।
 ङ्ङेढे षढेढे ङुढे ङेढे षु ॥ १७०

इढि ढुखेढदुढराङ्ङिढढे ङुढान्ढेढेढदुढवढिढन ।
 तढसढान्ढदरुढढिढढेढि ङ्ङिढष्टाङ्ङेढढसढढाढिढधः ॥१६१॥

षढ षढेढे ङ्ङेढे षढे षढेढे ष ।
 ढे ङ्ङुढेढे षेढेढे षढेढे षढेढे षढेढे ।
 षढेढे षढेढे ङ्ङेढे ढढेढे ङुद ष ।
 ङ्ङेढे षढेढे ङुढे षढेढे षढेढे ॥ १७१

चित्रमाक्रान्तविश्वोपि विक्रमस्ते न तृप्यति ।

कदा वा दृश्यते तृप्तिरुदीर्णस्य हविर्मु[21b]जः ॥१६२॥

समसः उदः सवक् अदः त्रिदः त्रिः कि ॥

कसः सवक् कसः सः सवः सः सवः ।

अदः कः सवः सः ३ ३ सवः सः ।

कसः सः दवः कि कसः त्रिः सवः ॥ १६३

अयमर्थान्तराक्षेपः प्रक्रान्तोय निवर्त्यते ।

विस्मयोऽर्थान्तरस्येह दर्शनात्तत्सधर्मणः ॥१६३॥

सदः त्रिः ३ ३ कि कि सवः सवः ।

दिः त्रिः कसः सवः सवः सवः सवः ।

अः सवः कसः सः ३ ३ सवः सवः ॥

३ ३ कि कि सवः सवः सवः सवः ॥ १६३

न स्तूयसे नरेन्द्र त्वं ददासीति कदाचन ।

स्वमेव मत्वा गृह्णन्ति यतस्त्वद्धनमर्थिनः ॥१६४॥

ལྷོན་པ་པོ་ ཞེས བས་ཡང་ ཉི །
 མི་དབང ཁྱོད་ལ་ མི་བཟོད་དེ །
 བང་ལྷིར སློང་བས་ ཁྱོད་ཀྱི་ལོར །
 རང་གི་ ཉིད་དུ་ བསམས་ནས་ ལེན ། ༡༤༯

इत्येवमादिराक्षेपो हेत्वाक्षेप इति स्मृतः ।
 अनयैव दिशान्येपि विकल्पाः शक्यमूहितुं ॥१६५॥

ཅེས བ་ ལ་ སོགས་ འགོག་པ་ནི །
 ལྷོས་ འགོག་པ་ ཞེས་ བཤད་པ་སྟེ །
 ལྷོགས་ འདི་ཉིད་ཀྱིས་ བས་པར་རྟོག་ །
 བཞུན་ བ་ དག་ ཀྱང་ དབལ་བར་བྱས་ ། ༡༥༠

शेषः सोर्थान्तरन्यासो वस्तु प्रस्तुत्य किञ्चन ।
 तत्साधनसमर्थस्य न्यासो योन्यस्य वस्तुनः । १६६॥

བང་ཞིག་ དངོས་ འགའ་ རབ་བཞོད་ནས །
 དེ་ལོ་ ལྷོབ་མེད་ བས་པ་ཅན །

དངོས་པོ་ བཞུག་དག་ འགོད་པ་དེ །

དོན་བཞུག་ བཞོད་པར་ འཕེས་པར་བྱ །། ༡༤༩

विश्वव्यापी विशेषस्थः श्लेषाविद्धो विरोधवान् ।

अयुक्तकारी युक्तात्मा युक्तायुक्तो विपर्ययः ॥१६७॥

ཀུན་ཁྱབ་ ཁྱད་པར་ལ་ བཞས་ དང་ །

སྐྱར་ བ་ ཅན་ དང་ འགལ་བ་ ཅན་ །

མི་འཕྲིན་ དང་ འཕྲིན་ པའི་བདག་ །

འཕྲིན་ དང་ མི་འཕྲིན་ བརྗོད་པ་འོ །། ༡༥༠

इत्येवमादयो भेदाः प्रयोगेष्वस्य लक्षिताः ।

उदाहरणमालैषां रूपव्यक्त्यै निदर्शयति ॥१६८॥

འདི་ཡི་ དབྱེ་བ་ དེ་ལྟ་ སོགས་ །

སྐྱོར་བ་ རྣམས་ལ་ རབ་དུ་མཚོན་ །

འདི་རྣམས་ རང་བཞིན་ བསལ་བྱའི་སྤྱིར་ །

དཔེར་ བརྗོད་ ལྷོང་བ་ བསྟན་པར་བྱ །། ༡༥༢

भगवन्तौ जगन्नेत्रे सूर्यचन्द्रमसावपि ।

पश्य गच्छत ए[22a]वास्तं नियतिः केन लङ्घयते ॥१६६॥

लमणस'ल्लव' रमो'व क्कस'गु'ल्लिण ।

श्रि'स' द'द'के' ल्ल'व' य'द' ।

कु'व' व'र' सु'र'व' श्रि'द' य' ल्ल'स' ।

द'स'व'य' के' सु'य'स' र'मो'द'स' ॥ १७०

पयोमुचः परीतापं हरन्त्येते शरीरिणां ।

नन्वात्मलाभो महतां परदुःखोपशान्तये ॥१७०॥

कु'र'द'के' र'द'ि' द'ण' लु'स'उ'क' श्रि' ।

य'द'स'सु'ग'दु'द' व' र'मो'ण'व'र'श्रि'द' ।

के'व'यो' क्कस' गु'स' व'द'ण' श्र'व' सु'ण'स' ।

ग'ल्ल'क' श्रि' सु'ण'व'सु'य' के' ल्ल'द'दु'द' ॥ १७०

उत्पादयति लोकस्य प्रीतिं मलयमारुतः ।

ननु दाक्षिण्यसम्पन्नः सत्त्वस्य भवति प्रियः ॥१७१॥

མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱུང་གིས་ནི།
 འཇིག་རྟེན་དགའ་བ་སྦྱེད་བར་བྱེད།
 དུ་ལྷོ་རྒྱ་དང་ཡང་དག་ལྷན།
 ཀུན་གྱི་སྦྱིང་སྦྱུག་མ་ཡིན་ནམ། ॥ १११ ॥

जगदाह्लादयत्येष मलिनोपि निशाकरः ।
 अनुगृह्णाति हि परान् सदोषोपि द्विजेश्वरः ॥११२॥
 མཚན་མེད་བྱེད་འདི་རྩི་མ་དང་།
 ལྷན་ཡང་འགྲོ་བ་དགའ་བ་སྦྱེད།
 བཞིས་སྦྱིས་དབང་པོ་སྦྱོན་ལྷན་ཡང་།
 བཞུན་དག་རྗེས་སུ་འཇིན་བར་བྱས། ॥ ११२ ॥

मधुपानकलात्कण्ठान्निर्गतोप्यलिनां ध्वनिः ।
 कटुर्भवति कर्णस्य कामिना पापमीदृशम् ॥११३॥

རྒྱུང་རྩི་འཕྲུངས་པའི་མགྲིན་སྦྱན་ལས།
 བྱུང་བ་བྱུང་བའི་སྦྱ་དག་ཀྱང་།

རྩ་བར་ རྩལ་པ་ ཉིད་ འགྲུང་བ །
 འདོད་ལྡན་ རྣམས་ ཀྱི་ རྩིག་ འདི་ འདྲ ། ॥ १७३

अय मम दहत्यङ्गमम्भोजदलसस्तरः ।
 हुताशनप्रतिनिधिर्दाहात्मा ननु युज्यते ॥१७४॥

རྩ་རྩེས་ འདབ་མའི་མལ་སྟན་ འདིས །
 བདག་གི་ ལུས་ འདི་ གདུང་བར་བྱེད །
 རྩིག་པའི་ བདག་ ཉིད་ བསྐྱེག་ཟེ་ དང །
 འདྲ་བས་ རིགས་པ་ མ་ཡིན་ རྣམ ། ॥ १७४

क्षिणोतु काम शीतांशु. किं वसन्तो दुनोति मा ।
 मलिनाचरित कर्म सुरभेर्नन्वसाम्प्रतम् ॥१७५॥

བསིལ་ཟེར་ ཅན་གྱིས་ ཉམས་བྱེད་ མེད །
 དུསྟོང་ རི་ ཅིལ་ གདུང་ །
 རྩི་མ་ པའི་ ལས །
 དག མིན་ལྟམ ། ॥ १७५

कु[22b]मुदान्यपि दाहाय किमङ्ग कमलाकरः ।
न हीन्दुगृहेषुग्रेषु स्यगृहो मृदुर्भवेत् ॥१७६॥

गुःसुद लुक् अन् श्लेषाःसुद व ।
सुद रिःरुगुद मक्कसः उंस मीःसुद ।
ल्लःससः मल्लुद क्कससः सुव ससःव ।
श्री ससः मल्लुद स रल्लसःमीःरुगुद ॥ १७७

शब्दोपात्ते प्रतीते वा सादृश्ये वस्तुनोर्द्वयोः ।
तत्र यद्भेदकथन व्यतिरेकः स कथ्यते ॥७७॥

ल्लु रल्लुम स रसः र्नेमस सः यीस ।
रदंस र्म मल्लिसःकीः मल्लुदसः सुद स ।
रेयीः र्नेमः सल्लुदःसः मल्लुदः ।
रेकीः ल्लुम स उक्क लेसः सल्लुद ॥ १७८

धैर्यमाहात्म्यलावण्यप्रमुखैस्त्वमुदन्वतः ।

गुणैस्तुल्योसि भेदस्तु वपुषैवेदशेन ते ॥१७८॥

वङ्गं दन्तं क्विपदिं वदन्तं श्रुतं दन्तं ।
 लुप्तं वङ्गं शिवायं यत्र दन्तं श्रुतं ।
 श्रुतं दन्तं श्रुतं श्रुतं श्रुतं दन्तं ।
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं ॥ १७८

इत्येकव्यतिरेकोयं धर्मैकैकत्र वर्तिना ।
 प्रतीतिविषयप्राप्तेर्भेदस्योभयवर्तिनः ॥१७९॥

श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं ।
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं ।
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं ।
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं ॥ १८०

अभिन्नवेलां गम्भीरावम्बुराशिर्भवानपि ।
 असावङ्गनसङ्काशस्त्वन्तु चामीकरच्छविः ॥१८०॥

श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं ।
 श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं श्रुतं ।

འདི་ནི་ མིག་སྒྲུབ་ དང་ མཚུངས་ལ།
 བྱིན་ནི་ གསེར་གྱི་ མདོག་ཅན་ནོ། ། ༡༤༠

उभयव्यतिरेकोयमुभयोर्भेदकौ गुणौ ।
 काष्ण्यं पिशंगता चोभौ यत्पृथग्दर्शिताविह ॥१८१॥

གང་གྱིས་ འདིར་ནི་ གཉི་ག་ཡི།
 འབྱེད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ བག་པོ་ དང་།
 སེར་པོ་དག་ནི་ བྱ་དང་ བསྐྱབ།
 འདི་ནི་ གཉི་གའི་ ལྡོག་པ་ ཅན་ ། ༡༤༡

त्वं समुद्रश्च दुर्वारौ महासत्त्वसतेजसौ ।
 इयता युवयोर्भेदः स ज[23a]लात्मा पटुर्भवान् ॥१८२॥

བྱིན་དང་ ལྷ་མཚོ་ ཏུ་རྒྱ་རོ།
 མཏུ་སྐྱུ་ ཏེ་ང་ བཅས།
 འདི་ཡིས་ བྱིན་ གཉིས་ བྱ་དང་དེ།
 དེ་ནི་ ལྷ་བདག་ བྱིན་མཁས་སོ། ། ༡༤༢

स एष श्लेषरूपत्वात् सश्लेष इति गृह्यतां ।
साक्षेपश्च सहेतुश्च दृश्यते तदपि द्वयं ॥१८३॥

२२१३१. सु०. व०. कु०. व०. सु०. ।
सु०. व०. उ०. वे०. म०. व०. व०. ।
२२१३२. व०. उ०. २०. म०. उ०. म०. उ०. ।
म०. उ०. व०. २०. व०. व०. ॥ २२३

स्थितिमानपि धीरोपि रत्नानामाकरोपि सन् ।
तव कक्षा न यात्येव मलिनो मकरालयः ॥१८४॥

२२१३३. सु०. व०. वे०. व०. व०. ।
२२१३४. सु०. उ०. म०. व०. व०. ।
२२१३५. सु०. व०. सु०. म०. ।
२२१३६. सु०. व०. सु०. व०. ॥ २२८

वहन्नपि महीं कृत्स्नां सशैलद्वीपसागराम् ।
भर्तृभावाद्भुजगानां शेषस्त्वत्तो निकृष्यते ॥१८५॥

रींश्रींशु मर्कं वतसंययि ।
 स गजिं मस्रं दमं रकिं मर्दंशु ।
 लम रक्तेकसंशु गि हिरं शुंशु ।
 सुम म तव किं श्रिं वसं दसं ॥ १८४

शब्दोपादानसादृश्यो व्यतिरेकोयमीदृशः ।
 प्रतीयमानसादृश्योप्यस्ति सोनुविधीयते ॥१८६॥

सुं दमं रकुं वसं मर्कं वसंययि ।
 श्रिं व तव किं रदि रसंशु ।
 र्कं वसं शुं व मर्कं वसं यद ।
 यं व रं किं हिरंशुशु ॥ १८५

त्वन्मुखदुमल चेति द्वयोरप्यनयोभिदा ।
 कमलं जलसंगोहि त्वन्मुखं त्वदुपाश्रय ॥१८७॥

श्रिंशुं श्रिंशुं दं वदंशु ।
 रं श्रिंशुंशुं किं श्रिंशुं यदं ।

བསྐྱེ རྒྱལ་ས་ རྒྱེས་པ དང་ །
 རྒྱེས་ བཞེང་ རྒྱེས་ལ བཞེན་པ འོ །། ༡༢༧

མཚུ་བེལ་ལམ་སྤྱེལ་འཁོར་ལམ་ རྒྱེས་པ །
 རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །། ༡༢༨

རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །
 རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །
 རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །
 རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །། ༡༢༩

རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །
 རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །། ༡༣༠

རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །
 རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །
 རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །
 རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ རྒྱེས་པ །། ༡༣༡

त्वन्मुखम्पुण्डरीकश्च फुल्ले सुरभिगन्धिनी ।
भ्रमद्भ्रमरमम्भोजं लोलदृष्टिं मुखन्तु ते ॥१६०॥

सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः ।
सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः ।
सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः ।
सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः ॥ १७० ॥

चन्द्रोयमम्बरोत्तंसो हंसोयन्तोयभूषणं ।
नभो नक्षत्रमालीदामिदमुत्कुमुदम्पय ॥१६१॥

सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः ।
सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः ।
सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः ।
सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः सुतेः ॥ १७१ ॥

प्रतीयमानशौक्लयादिसाम्ययोर्वियदम्भसोः ।
कृतः प्रतीतशुद्धयोश्च भेदोस्मिंश्चन्द्रहसयोः ॥१६२॥

འདིར་ བོ་ ལྷ་བ་ རང་པ་ དག།
 དཀར་བ་ཉིད་ རོགས་ རྟོགས་པ་ དང་།
 མཁའ་དང་ ལྷ་ བོ་དག་པར་ ཡང་།
 རྟོགས་པར་ མཚུངས་པའི་ དབྱེ་བ་ གུས་ ॥ ༡༩༢

पूर्वत्र शब्दवत्साम्यमुभयत्रापि भेदकम् ।
 भृङ्गनेत्रादि तुल्यन्तत्साद्गुणव्यतिरेकता ॥१९३॥

ལྷ་མ་ལ་ བོ་ ལྷ་ལྷན་ མཚུངས་།
 བཀྱི་ག་ལ་ ཡང་ ཐ་དད་ དབྱེ།
 གུང་བ་ མིག་ལ་ རོགས་པ་ མཚུངས་།
 དེ་སྟེར་ མཚུངས་པའི་ རྟོགས་པ་ ཅན་ ॥ ༡༩༣

•

अरन्नालोकसहार्यमवार्यं सूर्यरश्मिभिः ।
 दृष्टिरोधकरं यूनां यौवनप्रभवन्तमः ॥१९४॥

རིན་ཚེན་ ལྷང་བས་མི་ འཕྲོག་ ཅིང་།
 ཉི་མའི་འོད་ ཀྱིས་ མི་ ལྷོག་པ་།

ལང་ཚོ་ ལས་ གུང་ ན་ ཚུང་གི།
 མུན་པས་ ལྷ་བ་འགོག་པར་གྱེད། ॥ १७८

सजातिव्यतिरेकोयन्तमोजातेरिदन्तमः ।
 दृष्टिरोधितया तुल्यं भिन्नमन्यैरदर्शयत् ॥१६५॥

མུན་པའི་རིགས་ ལས་ མན་པ་ འདི།
 ལྷ་བ་འགོག་པ་ ཉིད་ ཀྱིས་ མཚུངས།
 གཞན་དག་གིས་ མི་ ཐད་ད་ བསྟན།
 འདི་མི་ རིགས་མཐུན་ལྷོག་པ་ཅན། ॥ १७९

प्रसिद्धहेतुव्यावृत्त्या यत्किञ्चित्कारणान्त[24a]र ।
 यत्र स्वाभाविकत्वं वा । विभाव्य सा विभावना ॥१६६॥

རབ་དུ་གྲགས་པའི་ མུ་བརྗོག་ནས།
 གང་ཞིག་ མུ་ གཞན་ ཚུང་ཟད་དམ།
 གང་དུ་ རང་གི་ འོ་བོ་ ཉིད།
 ལྷོན་པ་ དེ་མི་ མྱིད་པ་ཅན། ॥ १८०

अपीतक्षीवकादम्बमसंभृष्टामलाम्बरं ।

अप्रसादितसूक्ष्माम्बु जगदासीन्मनोहरम् ॥१६७॥

स अमुदसः सुसिं पदिः ११ दस्य ।

सः सुसिं द्वि सः सेद पदिः सः सः ।

मुदसः पदः सः सुसः सुदसः पदिं क्तु ।

अस्योः पदिः पदिः ११ ॥ १७७

अनञ्जितासिता दृष्टिभ्रूनावर्जिता नता ।

अरञ्जिताहणश्चायमधरस्तव सुन्दरि ॥१६८॥

सुसः सः सुसः पदः दः सः सः सः सः ।

सः सः सः सः सः सः सः सः सः ।

सः सः सः सः सः सः सः सः सः ।

सः सः सः सः सः सः सः सः सः ॥ १७८

यदपीतादिजन्यं स्यात् क्षीवत्वाद्यन्यहेतुक ।

अहेतुकञ्च तस्येह विवक्षेत्यविरुद्धता ॥१६९॥

བཀའ་ཕྱིར་ མ་འབྲུངས་ ལ་སོགས་ རྒྱུས་ །
 རྒྱུས་ པ་ཉིད་ སོགས་ རྒྱ་གཞན་ ཅན་ །
 རྒྱ་མེད་ དག་ཀྱང་ བརྗོད་ འདོད་པ་ །
 དེ་ལ་ འདིར་ རི་ འགལ་བ་མེད་ ॥ ༡༩༩

वक्त्रं निसर्गसुरभि वपुरव्याजसुन्दरं ।
 अकारणरिपुश्चन्द्रो निर्निमित्तसुहृत्स्मरः ॥२००॥

རང་བཞིན་ རྒྱུས་ རི་ ར་ རི་ཞིས་ །
 རྗོལ་མེད་པར་ཡང་ ལུས་པོ་ མཛེས་ །
 རྒྱ་མེད་ དག་ཏུ་ རྒྱ་བ་ དག་ །
 རྒྱ་མཚན་མེད་པར་ འདོད་པ་ རྒྱོགས་ ॥ ༢༠༠

निसर्गादिपदैत्र हेतुः साक्षान्निवर्त्तितः ।
 उक्तञ्च सुरभित्वादिफल तत्सा विभावना ॥२०१॥

རང་བཞིན་རྒྱ་སོགས་ རྗོག་གིས་ འདིར་ །
 རྒྱ་ལྟི་ དངོས་སུ་ རབ་བརྗོད་ རིང་ །

हींलिस ङीद षीमस ढसस सुं वङ्गेद ।

देसुिन देङि षीद स ङङ ॥ ३०७

वस्तु किञ्चिदभिप्रेत्य तत्तुल्यस्यान्यवस्तुनः ।

उक्तिर्वाञ्छितरूपत्वात् सा समासोक्तिरिष्यते ॥२०२॥

देसिं वीं ढमद ढं वससस सुस ङस ।

देददं षङ्कदसं वदीं देसिं वीं मङ्ग ।

वसुस वदीं कुंढं वीसं वङ्गेदं सुदं व ।

देङिं वसुसं वं वङ्गेदं वदं ढदेद ॥ ३०३

[24b]पिबन्मधु यथाकाम भ्रमर फुल्लपङ्कजे ।

अप्यसन्नद्धसौरभ्यं पश्य चुम्बति कुङ्कुलं ॥२०३॥

सुदं वं दे ङुदं ढदेदं वं वङ्गेद ।

वदुं सुस ढं सुदं ङीं ढसुदस ।

हींलिस सुस वस ङीं ङद ।

सेदेम ढस सुं सुदं सुस ॥ ३०३

इति प्रौढाङ्गनाबद्धरतिलोलस्य रागिणः ।

कस्याञ्चिदिह बालायामिच्छा वृत्तिर्विभाव्यते ॥२०४॥

ठगस'हृक् सुद खेद' द'र ष' ल ।

द'ग'द'व'दे कुे द'ग'स' व'ठे'द'स'व' द'ग' ।

सु'खे' द'ग'द'वे'ग' द'ग' ल' ल'द' ।

द'दे'द' व' द'दे'ल'व' सु'द' व'द' सु'द' ॥ ३००

विशेष्यमात्रमिन्नापि तुल्याकारविशेषणा ।

अस्त्यसावपराप्यस्ति मिन्नामिन्नविशेषणा ॥२०५॥

सु'द'व'द'उ'क्' उ'स' व'द'द' उ'द' ।

सु'द' व'द' कु'स' व' स'कु'द'स' व'द'द' ल'दे' ।

सु'द'v'द' व'द'द' व'द'द' खे'द' ।

द'दे' के' व'द'द' व' द'ग' ग'द' ल'दे' ॥ ३०४

रूढमूलः फलभरैः पुष्पाञ्जनिशमर्थिनः ।

सान्द्रच्छायो महावृक्षः सायमासादितो मया ॥२०६॥

ཅ བདམ འབྲས་བུའི ཁྱེད་ལྱིས་ ཉི །
 ལྷོ་ལྷོ་སྐྱོ་སྐྱོ ཉམ་དུ་ ལྱིས་པར་བྱེད །
 ལྱིས་མ ལྱིས་པའི ལྷོ་ལྷོ་པ རྒྱེ །
 འདི་ཉི་ བདག་གིས་ ཡང་དག་ ཐོབ ༥ ༢༠༩

अनल्पविटपाभोगः फलपुष्पसमृद्धिमान् ।
 सच्छाय स्थैर्यवान्दैवादिष लब्धो मया द्रुमः ॥२०९॥

ཡལ་གའི་ ལྷོ་ལྷོ་ཉི་ མི་རྒྱུ་ལྷོ་ལྷོ །
 ལྷོ་ལྷོ་ འབྲས་བུ་ ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ །
 དམ་པའི་ ལྱིས་པའི་ བདམ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ་ལྷོ །
 ལྷོ་ལྷོ་ བདག་གིས་ ལྷོ་ལྷོ་ ལྷོ་ལྷོ ༥ ༢༠༩

उभयत्र पुमान्कश्चिद्भ्रष्टत्वेनोपवर्णितः ।
 सर्वे साधारणा धर्माः पूर्वत्रान्यत्र तु द्वयं ॥२०८॥

ལྷོ་ལྷོ་ ལྷོ་ ལྷོ་ལྷོ་ ལྷོ་ལྷོ་ ལྷོ་ལྷོ །
 ལྷོ་ལྷོ་ ལྷོ་ ལྷོ་ ལྷོ་ ལྷོ་ ལྷོ་ལྷོ །

क्लेशं क्लेशस्य प्रथमस्य उदं प्रथमं ।
 सुखं क्लेशं प्रथमं क्लेशं प्रथमं ॥ २०८

निवृत्तव्यालसंसर्गो निसर्गमधुराशय ।
 अयमम्भोनिधिः कष्टद्वालेन परिशोष्यते ॥२०९॥

सुखं क्लेशं प्रथमं क्लेशं प्रथमं ।
 सुखं क्लेशं प्रथमं क्लेशं प्रथमं ।
 सुखं क्लेशं प्रथमं क्लेशं प्रथमं ।
 सुखं क्लेशं प्रथमं क्लेशं प्रथमं ॥ २०९

इत्यपूर्वसमासोक्तिः[25a] पूर्वधर्मनिवर्तनात् ।
 समुद्रे तत्समानस्य पुंसो व्यावृत्तिसूचने ॥२१०॥

सुखं क्लेशं प्रथमं क्लेशं प्रथमं ।
 सुखं क्लेशं प्रथमं क्लेशं प्रथमं ।
 सुखं क्लेशं प्रथमं क्लेशं प्रथमं ।
 सुखं क्लेशं प्रथमं क्लेशं प्रथमं ॥ २१०

विवक्षा या विशेषस्य लोकसीमातिवर्त्तिनी ।
असावतिशयोक्ति स्यादलंकारोत्तमा यथा ॥२११॥

सुद पद सुि कि वहेदु अदेदु मरु ।
अहेम हेक मकमस अरु मय सुद प ।
सुअ दु सुद पद वहेदु प अदि ।
सुि सुि दम प अिक हे दपेर ॥ २११

मल्लिकामालभारिण्यः सर्वार्द्धीनार्द्रचन्दनाः ।
क्षोमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥२१२॥

मल्लिकामालभारिण्यः सर्वार्द्धीनार्द्रचन्दनाः ।
क्षोमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥२१२॥

चन्द्रातपस्य बाहुल्यमुक्तमुत्कर्षवत्तथा ।
संशयातिशयादीनां व्यक्त्य किञ्चिन्निदर्श्यते ॥२१३॥

ལྷ་བའི་ འོད་ནི་ ལྷ་ག་ བ་ ཉིད།
 བྱད་འབགས་ ལྷ་ན་ བཟོད་ དེ་བཞིན་དུ།
 བེ་ཚོམ་ སུལ་བུང་ ལ་སོགས་ ཀྱང་།
 གསལ་ སྤྱིར་ ལུང་ཟད་ བརྟན་བར་བུ ། ༢༢

स्तनयोर्जघनस्यापि मध्ये मर्ध्यं प्रिये तव ।
 अस्ति नास्तीति संदेहो न मेद्यापि निवर्त्तते ॥२१४॥

དགའ་མ་ བྱོད་ཀྱི་ ལུང་ བར་།
 དཔྱི་ཡི་ བར་ན་ ལྷེད་ བ་ ཉི།
 ཡོད་ བར་ མེད་ ཅེས་ བདག་གི་ ཉི།
 བེ་ཚོམ་ ད་དུང་ ལྷོག་མ་གུར་ ། ༢༢

निर्णेतु मध्यमस्तीति शक्यन्तव नितम्बिनि ।
 अन्यथानुपपत्यैव पयोधरभरस्थितेः ॥२१५॥

ཉི་དཔྱི་ཉི་ བྱོད་ ལ་ ཉི།
 ལྷེད་པ་ ཡོད་ ཅེས་ དེས་ བར་ལུས།

འོ་མ་ འཛིན་ བའི་ རྒྱུར་ བཞན་ བ །
 རྣམ་ བ བཞན་ ཏུ་ སྲིད་ མ་ ཡིན་ ॥ ३१४

अहो विशालम्भूपालभुवनत्रितयोदर ।
 माति मातुमशक्योपि यशोराशिर्यदत्र ते ॥२१६॥

རྩོད་ ཀྱི་ བྲགས་ བའི་ སྤང་ བོ་ བྱི །
 དཔག་ བས་ མིན་ ཡང་ འདིར་ འོང་ བ །
 ས་ རྩོང་ སྲིད་ བ་ བསྐྱུམ་ བྱི་ བྱི །
 འོངས་ དག་ ཡི་ མ་ འོན་ ཏུ་ ཡངས་ ॥ ३१५

अलकारान्तराणा[25b]मप्याहुरेकं परायणं ।
 वागीशमहितामुक्तिमिमामतिशयाह्वयाम् ॥२१७॥

ངག་ བྱི་ དབང་ བོས་ མཚོད་ རྒྱུར་ བ །
 སྤྲུལ་ རྒྱུང་ ཞེས་ རྩ་ བཟོད་ བ འདི །
 རྒྱུན་ བྱི་ བཞན་ བ་ རྣམས་ བྱི་ ཡང །
 བའི་ བས་ སྤྲུང་ བཞན་ རྩོད་ ཏུ་ བཟོད་ ॥ ३१७

अन्यथैव स्थिता वृत्तिश्चेतनस्येतरस्य वा ।
अन्यथोत्प्रेक्ष्यते यत्र तामुत्प्रेक्षां विदुर्यथा ॥२१८॥

सोमस ह्यक् दम मम उम मेस गृस ।
कस व मलकं दु मकस वदे कुंय ।
मदं दु कस मलकं मव देमा व ।
देके मव देमां दु देमा देमेर ॥ ३१८

मध्यन्दिनार्कसन्तप्तः सरसी गाहते गजः ।
मन्ये मार्त्तण्डगृह्याणि पद्मान्युद्धर्तुमुत्सुकः ॥२१९॥

शैव मृदु शै मस मरुदस व यी ।
मृद वं दम के मकेर महुम व ।
शै मदे सुमास मृद वदु कसस ।
मलेम वर मदेद व यिक कस कुम ॥ ३१९

स्नानुं पातुं विसान्यतुं करिणो जलगाहनम् ।
तद्वैरनिष्क्रयार्येति कविनोत्प्रेक्ष्य वण्यते ॥२२०॥

म्रुषा द्दं वदुद द्दं वदु उं द्दमा ।
 वत्रेदु सुीरं वमाःवुव कुरु वहुमाःव ।
 दे वै विवःववः सुवः सुीर वेस ।
 सुवःदमा वामवः सुीसः रवःवदुमासः वहुँद ॥ ३३०

कर्णस्य भूषणमिदं मदायतिनिरोधिनः ।
 इति कर्णोत्पल प्रायस्तव दृष्ट्या विलङ्घ्यते ॥२२१॥

वदु वैः वदमा मी र्दं व द्दमा ।
 ववोमा सुेदं वःवदी सुवः वेस दे ।
 सुेदं गु वीमाःमीसः वःव वी ।
 सुुदुवः द्दमाःवः ववोदस वः वदु ॥ ३३१

अपाङ्गभागपातिन्या दृष्टेरंशुमिरुत्पल ।
 स्पृश्यते वा नचैवन्तु कविनोत्प्रेक्ष्य कथ्यते ॥२२२॥

वीमाःवुवः कः वै सुुद सुुदःव ।
 वीमाःमी वेदंःगुीसः सुुदुवःव ।

रेण मण्णं षीणं यत्तं ष्णं दणं षण्णं ।
 देण्णं दणं दणं दणं दणं ॥ ३३३

लिम्पतीव तमोद्गानि वर्षतीवांजनं नभः ।
 इतीदमपि भूयिष्ठमुत्प्रेक्षालक्षणान्वितं ॥२२३॥

षण्णं दणं दणं दणं दणं दणं ।
 षण्णं दणं षीणं षण्णं षण्णं दणं दणं ।
 षण्णं दणं यत्तं दणं दणं दणं ।
 षण्णं दणं दणं दणं दणं ॥ ३३३

केवांचिदुपमाभ्रान्ति[26a]रिवश्रुत्येह जन्यते ।
 नोपमानं तिङन्तेनेत्यतिक्रम्याप्तभाषित ॥२२४॥

दण्णं दणं दणं दणं दणं ।
 दण्णं दणं दणं दणं दणं ।
 दण्णं दणं दणं दणं दणं ।
 दण्णं दणं दणं दणं दणं ॥ ३३८

उपमानोपमेयत्वं तुल्यधर्मव्यपेक्षया ।

लिम्पतेस्तमसश्चासौ धर्मः को नु समीक्ष्यते ॥२२५॥

दये ददं दयेऽनु श्रुते ददं किं ।

सर्वदस्य ददि कस्यं न क्लेशं दस्यं न ।

अनुददं ददं किं सव्यं ददं ।

कस्यं अदि सव्यं ददं अनुददं नु ॥ २२५ ॥

यदि लेपनमेवेष्टं लिम्पतिर्नाम कोपरः ।

स एव धर्मो धर्मो चेत्यनुन्मत्तो न भाषते ॥२२६॥

ददं नु अनुददं ददं श्रुते अदि नु ।

अनुददं कस्यं अनुददं ददं नु ।

दि श्रुते कस्यं ददं कस्यं नु नु ।

क्लेशं ददं स क्लेशं अदि नु नु ॥ २२६ ॥

कर्त्ता यद्युपमानं स्यान्न्यग्भूतोसौ क्रियापदे ।

स्वक्रियासाधनव्यग्रे नालमन्यद्वयपेक्षितुं ॥२२७॥

गण्यं च सुद व दये यैकं च ।
 सुकेशं च नदी दवद सुव नुगुन ।
 ददं गी सु सुव खीकुसं च ।
 गण्यं च सु सुव खीकुसं च ॥ ३३७ ॥

यो लिम्पत्यमुना तुल्यं तम इत्यपि शंसतः ।
 अङ्गानीति न सम्बद्धं सोपि मृग्यः समो गुणः ॥२२८॥

गण्यं च सुद व दये यैकं च ।
 सुकेशं च नदी दवद सुव नुगुन ।
 ददं गी सु सुव खीकुसं च ।
 गण्यं च सु सुव खीकुसं च ॥ ३३८ ॥

यथेन्द्रुरिव ते वक्रमिति कान्तिः प्रतीयते ।
 न तथा लिम्पतौ लेपादन्यदत्र प्रतीयते ॥२२९॥

दये च सुद व दये यैकं च ।
 सुकेशं च नदी दवद सुव नुगुन ।

देवलिङ्गं अष्टुमासं अदिं वां किं ।

अष्टुमासं वासां गणकं देवमासां वा यिं ॥ २२७

तदुपश्लेषणार्थं लिम्पतिर्द्धान्तकर्तृकः ।

अङ्गकर्मा च पुंसैवमुत्प्रेक्षित इतीष्यते ॥२३०॥

देष्टुं अष्टुमासं अदिं ददं किं ।

शुभं वा सुदं वा सुसां गृहं वासां ।

उपसंश्रुतं देवं सुसां वा यिं ।

देष्टुं सवसंश्रुतं वासां अदिं वा ॥ २३०

मन्ये श[26b]ङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादिभि ।

उत्प्रेक्षा व्यज्यते शब्दैरिवशब्दोपि तादृशः ॥२३१॥

शुभं ददं देवमासां ददं देसां ददं अदि ।

किं वासां वासां वा वासां वासां वासां ।

शुभं यिं सवसंश्रुतं वासां वासां वासां ।

वलिङ्गं वा शुभं वासां वासां वासां ॥ २३२

हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणं ।
कारकज्ञापकौ हेतू तौ च नैकविधौ यथा ॥२३२॥

सु १८० अ ०० कं १८० ० ।
००० ०००० १८० ०० सु ० सु ०००० ।
सु ० सु १८० ००० सु १८० ० ।
१८०० ००० १८० ० सु १८० ० ॥ २३२ ॥

अयमान्दोलितप्रौढचन्दनद्रुमपल्लवः ।
उत्पादयति सर्वस्य प्रीति मलयमारुत ॥२३३॥

अ००००० ००० सु १८० ००० ० ।
०० सु १८० ० ०००० ० ००० ० ।
००० १८०० सु १८० ०० सु १८० ० ००० ।
सु १८० सु १८००० सु १८००० सु १८० ० ॥ २३३ ॥

प्रतियुत्पादनयोगस्य रूपस्यात्रोपवृंहणं ।
अलंकारतयोद्घष्टं निवृत्तावपि तत्समं ॥२३४॥

दमद व क्षुद्रं वरं देवसं वरं यी ।
 रदं वरिषं श्रेयसं सुदं व रदी ।
 क्षुद्रं श्रेयं श्रुतं वै रदं वरुषं श्रेयं ।
 देवसं वरं श्रुतं वै रदं वरुषं ॥ ३३८

चन्दनारण्यमाधूय स्पृष्ट्वा मलयनिर्ज्वरान् ।
 पथिकानामभावाय पवनोयमुपस्थितः ॥२३५॥

सत्यं यं यं श्रेयं क्षुद्रं वरं ।
 रदी श्रेयं श्रेयं वरुषं वरुषं ।
 क्षुद्रं रदी रदी श्रेयं वरुषं वरुषं ।
 श्रेयं वरुषं श्रेयं श्रेयं वरुषं ॥ ३३९

अभावसाधनायालमेवम्भूतो हि मास्तः ।
 विरहज्वरसंभूतमनोश्चारोचके जने ॥२३६॥

वैश्वं श्रेयं श्रेयं श्रेयं श्रेयं ।
 रदी श्रेयं रदी श्रेयं श्रेयं श्रेयं ।

སྐྱེ་བོ་ ཡིད་འོང་ ལ་ སྲིད་པ་ །
 ཉམས་པ་ སྐྱེ་བ་ བྱེད་པར་ ལུས་ ། ३३७

निर्वर्त्ये च विकाय च हेतुत्वन्तदपेक्षया ।
 प्राप्ये तु कर्मणि प्रायः क्रियापेक्षैव हेतुता ॥२३७॥

འགྲུབ་པར་ བྱ ཏང་ ལྷས་འགྲུར་ ལ་ །
 དེ་ཉིད་ ལ་ ལྷོས་ སྐྱེ་ཉིད་ དེ་ །
 འཕྲོབ་པའི་ ལས་ ལ་ གལ་ཆེར་ ལྷི་ །
 བྱ་བ་ ལ་ ལྷོས་ སྐྱེ་ཉིད་ ཏོ་ ། ३३७

हेतुनिर्वर्तनीयस्य दर्शितः शेषयोर्द्वयोः ।
 दत्त्वो[27a]दाहरणद्वन्द्वं ज्ञापको वर्णयिष्यते ॥२३८॥

འགྲུབ་པར་ བྱེད་པའི་ སྐྱེ་ ཏག་ ལྷི་ །
 བསྟན་ཏེ་ ལྷག་ས་ བཞུགས་པོ་ ཡེ་ །
 དཔེར་ བཞུགས་ ལྷི་ བཞུགས་བྱས་ ལས་ །
 ལྷོས་པར་བྱེད་པ་ བསྟན་པར་བྱ ། ३३८

उत्प्रबालान्यरण्यानि वाप्यः संकुलपङ्कजाः ।

चन्द्रः पूर्णश्च कामेन पान्थद्वष्टिविषङ्कृत ॥२३६॥

ये'ददव' गणर' द'द'द'द' द'द'द' ।

ददव'दद' द'द'द'द'द' ।

द'द'द'द'द'द' ।

द'द'द'द'द'द'द' ॥ ३३७

मानयोग्यां करोमीति प्रियस्थाने कृतां सखीम् ।

बाला भ्रूभङ्गजिह्वाक्षी पश्यति स्फुरिताधरं ॥२४०॥

द'द'द'द'द'द' ।

द'द'द'द'द'द' ।

द'द'द'द'द'द' ।

द'द'द'द'द'द' ॥ ३३८

गतोस्तमर्को भातीन्दुर्यान्ति वासाय पक्षिणः ।

इतीदमपि साध्वेव कालावस्थानिवेदने ॥२४१॥

ཉི་མ་ ལྷ་གྲུང་ ལྷ་བ་ མཛོལ།
 འདྲབ་ཆགས་ ལྷ་མས་ ཉི་ བཀས་ ལྷ་ མོང་།
 ཞེས་ ད་ འདྲི་ ཡང་ ཏུས་ ཀྱི་ ལྷ་བས།
 ལོ་བར་བྱེད་པ་ ལེགས་ ད་ ཉིད། ॥ ३८१

।अबधैरिन्दुपादानामसाध्यैश्चन्दनाभसाम् ।

देहोष्मभिः सुबोध ते सखि कामातुरं मनः ॥२४२॥

ལོགས་མོ་ འདྲོད་ དས་ བཟློར་བའི་ ཡིད།
 ལྷ་བའི་ ཟེར་ ལྱིས་ མི་ལྷོག་ ཅིང་།
 ཅ་ལྷ་ ལུ་ ཡིས་ མི་བཟོད་པ།
 ལུས་ ཀྱི་ ཏོད་ ཀྱིས་ ལེགས་ དར་ ཏོགས། ॥ ३८२

इति लक्ष्याः प्रयोगेषु रम्या ज्ञापकहेतव ।

अभावहेतवः केचिद्व्याक्रियन्ते मनोहराः ॥२४३॥

ཞེས་ དའི་ ལྷོར་བ་ ལྷ་མས་ ལ་ ཉི།
 ཡིད་འོང་ ལེས་ བྱེད་ ལྷ་ དག་ མཚོལ།

དངོས་མེད་ ལྷོ་ བྱི་ ཡིད་ འཕྲོག་ བ།
 འགའ་ ཞིག་ རབ་ ཏུ་ བསྐྱུན་ བར་ གུ། ॥ ३༦३

अनभ्यासेन विद्यानामससर्गेण धीमतां ।

अनिग्रहेण चाक्षाणां जाय[27b]ति व्यसनं नृणां ॥२४४॥

རིག་ བ་ རྣམས་ བྱི་ མ་ བོམས་ དང་ །
 རྫོང་ ལྷན་ རྣམས་ དང་ མ་ འགྲོགས་ དང་ །
 དབང་ རོ་ རྣམས་ བྱི་ མ་ བསྐྱུན་ བས་ །
 མི་ རྣམས་ རབ་ ཏུ་ བཀའ་ བར་ གུར། ॥ ३༦༤

गतः कामकथोन्मादो गलितो यौवनज्वरः ।

क्षतो मोहश्च्युता तृष्णा कृत पुण्याश्रये मनः ॥२४५॥

འདོད་ བའི་ བཀའ་ ལྷིས་ ལྷོས་ བ་ རོང་ །
 ལང་ རོ་ ཡི་ བྱི་ རིམས་ དག་ རྣམས་ །
 རྫོངས་ བ་ ཟད་ ཅིང་ ལྷོད་ བ་ འཕྲོས་ །
 བསོད་ རྣམས་ བཀའས་ ལ་ ཡིད་ དག་ གུས། ॥ ३༦༥

वनान्यमूनि न गृहाण्येता नद्यो न योषितः ।

मृगा इमे न दायादास्तन्मे नन्दति मानस ॥२४६॥

वणसः कळः अद्वैतः सुख सः यैव ।

तु मृगः अद्वैतः सुदुःखेन खिन्न ।

द्वैतः सुखस्य अद्वैतः सुखं खिन्न ।

द्वैतः सुखस्य सौख्यं यैव सुखस्य ॥ ३८७

अत्यन्तमसदार्याणामनालोचितचेष्टित ।

अतस्तेषा विवर्धन्ते सततं सर्वसंपदः ॥२४७॥

यैवः सुखं सः सुखस्य सुखं यैव ।

अस्यस्य सः सुखस्य यैव यैव सः यैव ।

द्वैतः सुखं सुखस्य सुखं यैव ।

सुखं सुखस्य सुखस्य सुखं सुखं सुखं ॥ ३८८

उद्यानसहकाराणामनुद्भिन्ना न मञ्जरी ।

देयः पथिकनारीणां सतिल सलिलाञ्जलिः ॥२४८॥

སྐྱེད་ཚལ་ས་ཏྟ་ཀྱང་ལྷན་ས།
 སྐྱེ་མ་མ་འབྲུངས་པ་མིན་ན།
 འགྲོལ་པོ་ལྷན་ས་ཀྱི་བྱད་མེད་ནི།
 ཉིལ་བཅས་ཁྱོར་ཚུ་སྐྱོན་བྱར་འགྱུར་༥ ॥ ३༧༤

प्रागभावादिरूपस्य हेतुत्वमिह वस्तुनः ।
 भावामावस्वरूपस्य कार्यस्योत्पादनप्रति ॥२४६॥

ཡོད་དང་མེད་པའི་རང་བཞིན་གྱི།
 འབྲས་ལུ་སྐྱེད་པ་དག་ལ་འདིར།
 སྐྱོན་མེད་ལ་སོགས་རང་བཞིན་གྱི།
 དངོས་པོ་ཡི་ནི་གྱུ་ཉིད་དོ༥ ॥ ३༧༥

दूरकार्यस्तत्सहजः कार्यान्तरजस्तथा ।
 अयुक्तयुक्तकारी चेत्यसंख्याश्चित्रहेतवः ॥२५०॥

རིང་འབྲས་དེ་དང་ལྷན་ཅིག་སྐྱེས།
 དེ་བཞིན་འབྲས་མ་ཐག་སྐྱེས་དང་།

རིགས་ མིན་ རིགས་པ་ བྱེད་ ཅེས་ པ།
 མཚོར་བའི་ ལྷོ་ རྣམས་ བྱངས་ མེད་དོ། ། ༣༧༠

तेमी प्रयोगमार्गेषु गौण[28a]वृत्तिव्यपाश्रयाः ।
 अत्यन्तसुन्दरा दृष्टास्तदुदाहृतयो यथा ॥२५१॥

འདི་ དག་ ལྷོར་བའི་ ལས་ རྣམས་ ལ།
 སལ་བའི་ འཇུག་པ་ ལ་ བརྟེན་པ།
 ལིན་ཏུ་ མཚོས་པ་ དག་ མཚོར་ ལྷོ།
 དེ་ ལི་ དཔེར་བརྗོད་ རི་ ལྷོར་ན། ། ༣༧༡

त्वदपाङ्गाह्वयं जैत्रमङ्गजाखं यदंगने ।
 मुक्तदन्वतस्तेन सोप्यहं मनसि क्षतः ॥२५२॥

ལུས་ཅན་ ལྷོར་ མིག་རྗེར་ ཅེས་ པ།
 ལྷོ་བྱེད་ ལུས་སྐྱེས་ དག་ ལི་ མཚོན།
 བྱང་ དེ་ བཞུན་ ལ་ རབ་འཕངས་པ།
 དེ་ ལིས་ བདག་ ལི་ ལིད་ཀྱང་ བཅོམ། ། ༣༧༢

आविर्भवति नारीणां वयः पर्यस्तशैशव ।
सहैव विविधैः पुंसामङ्गजोन्मादविभ्रमैः ॥२५३॥

श्लेस'सु' लुस'श्लेस' गृस' सुस'सदि ।
कस'दसुस' श्ल'केस' लुस' उव' श्रिद ।
सुद'सिद' कस'स' ल' सु'स' वि ।
सोद'स' सु' क'स' सदि' क'केद' श्लेस ॥ ३५३

पश्चात्पर्यस्य किरणानुदीर्णञ्चन्द्रमण्डल ।
प्रागेव हरिणाक्षीणामुदीर्णो रागसागर ॥२५४॥

सुद' श्रिद' स'द'स'स' स'व'स' सु ।
कस'स'सदि' सु'स'के' सु'स'स'सुद ।
श्ले'स'क'स' स'द'स'स' स'स'द'स'स'स'स' ।
सु'स' स' स' क' द'गृ'स'द'स'स' स'स' ॥ ३५४

राज्ञां हस्तारविन्दानि कुञ्जलीकुरुते कुत ।
देव त्वच्चरणद्वन्द्वरागबालातपः स्पृशन् ॥२५५॥

कृ उमा त्रिंशु वसन्तं मञ्जिषा वं ।
 दसन्तं वं उं मञ्जिषा वं रं म वसन्तं ।
 म्रुत्तं वं कृत्तं म्रुत्तं वं वं ।
 वदन्तं कृत्तं वदन्तं वदन्तं उं ॥ ३१४

पाणिपद्मानि भूपानां सकोचयितुमोशते ।
 त्वत्पादनखचन्द्राणामञ्जिषः कुन्दनिर्मलाः ॥२५६॥

त्रिंशु म्रुत्तं वसन्तं मञ्जिषा वं वं ।
 वदन्तं वं म्रुत्तं वदन्तं कृत्तं म्रुत्तं ।
 म्रुत्तं कृत्तं म्रुत्तं म्रुत्तं वं वं ।
 वदन्तं कृत्तं वदन्तं वदन्तं वं ॥ ३१५

इति हेतुविकल्पस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
 इङ्गिताकारलक्ष्योर्थः सौक्ष्म्यात्सूक्ष्म इति स्मृतः ॥२५७॥

वसन्तं वं म्रुत्तं वं कृत्तं म्रुत्तं वं ।
 वसन्तं वं वदन्तं वदन्तं वदन्तं वं ।

ལྷུང་དང་ནམ་བུ་མཚོན་པའི་དོན།
 སྤྱི་ལོ་སྤྱི་མོ་ཞེས་པར་བཤད། ॥ ३१७

कदा नौ[28b]सङ्गमो भावीत्याकीर्णं वक्तुमक्षमः ।
 अवेत्य कान्तमबला लीलापद्मं न्यमीलयत् ॥२५८॥

ནམ་ཞེས་ལུ་ཅག་འགྲོགས་འགྲུར་ཞེས།
 ཚོགས་སུ་བརྗོད་པ་མ་བཟོད་པའི།
 མཚོན་པོ་རིག་ནས་སྤྱད་མེད་ཀྱིས།
 མེ་དགའི་པར་ལྷུང་པར་བྱས། ॥ ३१८

पद्मसंमिलनादत्र सूचितो निशि सङ्गम ।
 आश्वालयितुमिच्छन्त्या प्रियमंगजपीडितम् ॥२५९॥

ལྷུང་སྐྱེས་དག་གིས་གཟིང་བ་ཡི།
 མཚོན་པོ་དབྱུགས་དབྱུང་འདོད་པ་ཡིས།
 པར་ལྷུང་པར་བྱས་པ་ལས།
 འདྲིར་ནི་མཚོན་མོ་འགྲོགས་པར་བསྟན། ॥ ३१९

त्वदर्पितद्वशस्तस्या गीतगोष्ठ्यामवधत्त ।

उद्दामरागतरला च्छाया कापि मुखाम्बुजे ॥२६०॥

श्रुः यी अरुणः सरः प्रिदः यः शीमा ।

मगदः मसः मर्दः मीः कुः श्लेषः देः ।

कमलः मः मवः लीः म्रुः मः यी ।

अक्षेः मः उः यः म्रुः मः म्रुः ॥ ३७०

इत्यनुद्भिन्नरूपत्वाद्द्रत्युत्सवमनोरथः ।

अनुलङ्घयैव सूक्ष्मत्वमभूदत्राप्यवस्थितः ॥२६१॥

अदिरः यः मः मः मः लीः मः मर्दः मः ।

मगदः मः मः मगदः श्लेषः मर्दः मः मगदः ।

देः मः मः मः मः मः म्रुः मः ।

श्रुः मः म्रुः यः मः मः मः यीः ॥ ३७१

लेशो लेशेन निर्भिन्नवस्तुरूपनिगूहनं ।

उदाहरण एवास्य रूपमाविर्भविष्यति ॥२६२॥

कञ्चि कः यीस्य ददौस यो यी ।
 सप्तमत्वेन दिसःसप्तमत्वेन सप्तमत्वेन ।
 दस्य सप्तमत्वेन दिसः सप्तमत्वेन ।
 सप्तमत्वेन दिसःसप्तमत्वेन सप्तमत्वेन ॥ २७३

राजकन्यानुक्त मां रोमोद्धेदेन रक्षकाः ।
 अवगच्छेयुरा ज्ञातमहो शीतानिल वनम् ॥२६३॥

सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन ।
 सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन ।
 सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन ।
 सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन ॥ २७३

आनन्दाश्च प्रवृत्त मे कथं हृष्टैव कन्यकाम् ।
 अस्मि [29a] मे पुष्परजसा वातोद्धूतेन वृषितं ॥२६४॥

उक्तमत्वेन सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन ।
 सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन सुप्तमत्वेन ।

क्लृप्तं शेषं शतुर्वचसि शिरोषां वी ।
 द्रुपं श्रुत्वा वदन् शिवा सुवंप्रुदन् ॥ २६७

इत्येवमादौ स्थानेऽयमलकारोतिशोभते ।
 लेश*मेकेच्चिदुन्निन्दां स्तुति वा लेशतः कृतां ॥ २६५ ॥

लेखाय लक्षणां श्लेषांस्तु वी ।
 श्रुत्वा द्रुपं शिवा सुवंप्रुदन् ॥ २६७ ॥
 शिवा सुवंप्रुदन् ॥ २६७ ॥

युवेव गुणवान् राजा योग्यस्ते पतिरुर्जितः ।
 रणोत्सवे मनः सक्तं यस्य कामोत्सवाद्दपि ॥ २६६ ॥

शिवं शिवां शिवां शिवां शिवां शिवां ॥ २६६ ॥
 शिवां शिवां शिवां शिवां शिवां ॥ २६६ ॥
 शिवां शिवां शिवां शिवां शिवां ॥ २६६ ॥

वीर्योत्कर्षस्तुतिर्निन्दैवास्मिन् भावनिवृत्तये ।
कन्याया. कल्पते भोगान्निर्विद्विशोर्निरन्नरान् ॥

वर्केण रम्युषा सुद रथमणसा वस्त्रेण'स' रदिर ।
स्त्रेण स श्रुते दे अरसा स्त्रुते'स ।
सुवदुः स्त्रुते रदिर सु अरथी ।
वससा'स' दम कि वस्त्रेण'स' वस ॥ ३७७

चपलो निर्दयश्चासौ जनः किन्तेन मे सखि ।
आग.प्रमार्जनायैव चाटवो येन शिक्षिताः ॥ २६८

वर्केण स रम' वरिथ श्रुते' गुरी' सुते ।
मर मीसा' सुव वस स्त्रु'स वस्त्रमणसा ।
स्त्रुते'स' रदिर कि' वस्त्रे अर' वरथी ।
मो'सा'स' अ' दे अरसा वदम'स' उ ॥ ३७८

दोषाभासो गुणः कोपि दर्शितश्चादुकारिता ।
मान सखीजनोद्दिष्टं कर्तुं रागादशक्तया ॥ २६९ ॥

श्रुं चो श्रुं गणसंघं स च वसुधु विदस ।
 कणसं श्रुं च श्रुं च वं स वसु वस ।
 श्रुं च श्रुं च श्रुं च श्रुं च श्रुं च श्रुं च ।
 श्रुं च श्रुं च श्रुं च श्रुं च श्रुं च ॥ २७०

उद्दिष्टानां पदार्थानामनुदेशो यथाक्रम ।
 यथासख्यमिति प्रोक्तं साख्यानङ्गम इत्यपि ॥ २७०

ददं स चो स च वसु वसु वं वसु ।
 स च वं वसु वं वसु वं वसु ।
 वसु वं वं स च वं वसु वं वसु ।
 वसु वं वं वं वं वं वं वं वं ॥ २७०

[29b] भ्रूवन्ते चोरिता तन्वि स्मितेक्षणमुखद्युति ।
 क्षातुमम्भःप्रविष्टायाः कुमुदोत्पलपङ्कजैः ॥ २७१ ॥

वसु वं वं वं वं वं वं वं वं ।
 वं वं वं वं वं वं वं वं ।

गुह्यं त्र्यम्बकं वन्द्यम् ।
 वन्द्यं च त्र्यम्बकं त्र्यम्बकम् ॥ ३७१

प्रेयः प्रियतराख्यान रसवत् रसपेशल ।
 ऊर्जस्वि रूढाहकारं युक्तोत्कर्षं च तत्रयं ॥ ३७२ ॥

दमय वं शक्यं नु दमय वं वन्दे ।
 शक्यं नु वन्दे वन्दे शक्यं नु वन्दे ।
 शक्यं नु वन्दे वन्दे शक्यं नु वन्दे ।
 देवशक्तिं नु वन्दे वन्दे शक्यं नु वन्दे ॥ ३७३

अद्य या मम गोविन्द जाता त्वयि गृहागते ।
 कालेनेषा भवेत्प्रीतिस्तवैवागमनात्पुनः ॥ ३७३ ॥

शक्यं नु वन्दे वन्दे शक्यं नु वन्दे ।
 वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे शक्यं नु वन्दे ।
 वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे शक्यं नु वन्दे ।
 वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे शक्यं नु वन्दे ॥ ३७३

इत्याह युक्तं विदुरो नान्यतस्तादृशी धृतिः ।
भक्तिमात्रसमाराध्यः सुप्रीतश्च ततो हरिः ॥ २७४ ॥

दे०अ०दे० दे०अ०व० वी०दु०स० ।
मा०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० ।
दे०अ० मा०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० ।
दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० ॥ २७५ ॥

सोमः सूर्यो मरुद्भूमिव्योम होतानलो जलं ।
इति रूपाण्यतिक्रम्य त्वां द्रष्टुं देव के वयम् ॥ २७५ ॥

दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० ।
दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० ।
दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० ।
दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० दे०अ० ॥ २७६ ॥

इति साक्षात्कृते देवे राज्ञो यद्राजवर्मणः ।
प्रीतिप्रकाशनं तच्च प्रेय इत्यनुगम्यतां ॥ २७६ ॥

མངོན་སྲུང་ བྱས་ བའི་ ལྷ་ལ་ནི།
 རྒྱལ་ བོ་ དགའ་ བའི་ ལོ་ཆ་ ཡིས།
 དགའ་བ་ རབ་དུ་ བསལ་ལ་ བྱས་ བང་།
 དེ་ ཡང་ དགའ་ བར་ རྗེས་ རྟོགས་ བུ། ॥ ३१७

मृतेति प्रेत्य संगतुं यथा मे मरणम्मतम् ।
 सैवावन्ती मया[30a]लब्धा कथमत्रैव जन्मनि ॥३१७॥

ལྷི་བ་ རྗེས་བུ་ བ་རོལ་དུ།
 བང་ དང་ འགྲོགས་ སྤྱིར་ བདག་ འཆི་འདོད།
 ཨ་བཞི་དེ་ བདག་ ལོས་ བེ།
 རྗེས་ འདི་ཉིད་ ལ་ རྗེས་ བོལ་ ॥ ३१७

प्राङ्प्रोतिर्दर्शिता सेयं रतिः शृंगारतां गता ।
 रूपबाहुल्ययोगेन तदिदं रसवद्भ्रमः ॥३१८॥

དགའ་བ་ ཉིད་དུ་ རྗེས་ བསྟན་ འདོད།
 དགའ་བ་ རྗེས་ བ་ ཉིད་ བྱུང་བའི།

२८ वल्लिङ्गं क्रुशं ददं भुङ्क्वन्वसं ॥
 २९ ॥ ३७८ ॥

निगृह्य केशेष्वकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम ।
 सोयं दुःशासनः पापो लब्धः किं जीवति क्षणं ॥२७६॥

३० ॥ ३७९ ॥
 ३१ ॥ ३८० ॥
 ३२ ॥ ३८१ ॥
 ३३ ॥ ३८२ ॥

इत्यारुह्य परां कोटीं क्रोधो रौद्रात्मतां गतः
 भीमस्य पश्यतः शत्रुमित्येतद् रसवद्वचः ॥२८०॥

३४ ॥ ३८३ ॥
 ३५ ॥ ३८४ ॥
 ३६ ॥ ३८५ ॥
 ३७ ॥ ३८६ ॥

अजित्वा सार्णवामुर्वीमनिष्ट्वा विविधैर्मखैः ।
अदत्त्वा चार्थमर्थिभ्यो भवेय पार्थिवः कथम् ॥२८१॥

अर्केन वरुण सत्य स'क्रुत्वा' वैद' ।
कस'सद' अर्केन व'सुष्टु स'पुत्र'स्य ।
स्यैव स' व'केन कसस स'पुत्र'स्य ।
स'स्यैव'सु वदस्य इ'स्यैव'सु ॥ ३८१

इत्युत्साहः प्रकृष्टात्मा तिष्ठन्वीररसात्मना ।
रसस्त्ववङ्गिरमासां समर्थयितुमीश्वरः ॥२८२॥

उस स'स्यैव'सु वदस्यस्य वदस्य ।
दस'स्यैव'सु कसस्य स'पुत्र'स्य वदस्य ।
कसस्य स'पुत्र'स्य वदस्य स'पुत्र'स्य ।
स्यैव'सु वदस्य स'पुत्र'स्य वदस्य ॥ ३८२

यस्याः कुसुमशय्यापि कोमलाङ्गया रुजाकरी ।
साधिरोते कथं देवी हुताशनवती चिताम् ॥ २८३ ॥

ལྷ་ས་འཇམ་གང་ལ་བདུ་ཡི།
 མལ་སྐྱེན་དག་ཀྱང་ཅུབ་བྱེད་མ།
 ལྷ་མོ་དེ་ནི་རོ་ཁང་དག།
 སྲིབ་ཟླ་སྐྱེན་པར་རྩི་ལྟར་ཉལ། ॥ ३८३

इति कारुण्यमुद्रिकमलं[30b]कारतया स्मृतम् ।
 तथा परेषु भीमत्सहास्याद्भुतभयानकाः ॥ २८४ ॥

ཅེས་པ་སྐྱིད་རྩི་སྐྱེན་པ་ཡི།
 སྐྱེན་ཉིད་དུ་ནི་རབ་དུ་བཤད།
 དེ་བཞེན་གཞན་ཡང་མི་སྐྱེད་དང།
 བཞེད་གད་མིད་བྱུང་འཇིགས་རུང་ངོ། ॥ ३८ॣ

पायं पाय तवारीणां शोणित करस्सपुटैः ।
 कौणपाः सह नृत्यन्ति कबन्धैरन्त्रभूषणाः ॥ १८५ ॥

སྐྱེད་སེམས་བསྐྱེད་པའི་སྐྱེན་པོ་རྣམས།
 མཚོ་མེད་རོ་དང་སྐྱེན་ཅིག་དུ།

ལག་པ་ ལྷུང་པས་ རྩོད་ དགའི་ རྩལ།
 འཕྲུང་ཞིང་ འཕྲུང་ཞིང་ གར་བྱེད་དོ། ३२४

इदमम्लानमालाया लग्नं स्तनतटे तव ।
 छाद्यन्ममपुष्पैश्च नवमखपदं सखि ॥ २८६ ॥

གོགས་མོ་ མེ་དོག་ མ་རྩིངས་ས།
 རྩོད་ཀྱི་ ལུ་མའི་ རོས་ ལ་ནི།
 སེན་རྩེས་ སར་པ་ ཆགས་པ་ འདི།
 ལྷུང་གཡོགས་ ཀྱིས་ ཉི་ ལྷིབ་པར་ མཛོད། ३२५

अशुकानि प्रबालानि पुष्प हारादिभूषण ।
 शाखाश्च मन्दिराण्येषां चित्रकन्दमार्गिणः ॥ २८७ ॥

དགའ་ཚོལ་ ལྷོན་པ་ འདི་རྣམས་ ཀྱི།
 འདབ་མ་ གསར་པ་ གོས་ བཟང་ དང་།
 མེ་དོག་ དོགལ་ ལ་ སོགས་ཅན།
 ཡལ་འདབ་ ཁང་པར་ བྱར་པ་ མཚར། ३२६

इद मघोनः कुलिशं धारासंनिहितानलं ।

स्मरण यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय कल्पते ॥ २८८ ॥

ऊँ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

वसुं प्रीतिं प्रीतिं वीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

सुदं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ ३८८ ॥

वाच्यस्याग्राभ्यता योनिर्माधुर्ये दर्शितो रसः ।

इह त्वष्टरसायत्ता रसवत्ता स्मृता गिरा ॥ २८९ ॥

सुदं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

वसुं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ ३८९ ॥

अपकर्त्ताहमस्मीति हृदि ते मा स्म भूद्भयम् ।

विमुखेषु न मे खङ्गः प्रहर्तुं जातु वाञ्छति ॥ २९० ॥

- वदमा वैः माकेन च सुदेनो लेख ।
 सुदेनो ग्री ऋतुं च ददामास स सुदः ।
 वदमा योः सत्यं श्रीः सुदेनः सुदेनात्कृतम् ।
 कृतं च ददामास च ददेन सत्यम् ॥ ३००

[31a] इति मुक्तः परो युद्धे निरुद्धो दर्पशालिना ।
 पुंसा केनापि तज्ज्ञयमूर्जस्वीत्येवमादिकं ॥ २६१ ॥

लेख च सुदेनः सुदेनात्कृतं ददामास ।
 सुदेनो ग्री ऋतुं च ददामास स सुदः ।
 सुदेनो योः सत्यं श्रीः सुदेनः सुदेनात्कृतम् ।
 कृतं च ददामास च ददेन सत्यम् ॥ ३००

अथमिष्टमनाख्याय साक्षात्तस्यैव सिद्धये ।
 यत्प्रकारान्तराख्याय पर्यायोक्तन्तद्विध्यते ॥ २६२ ॥

ददेनो वैः ददामासुः स ददामास ।
 ददामासुः ददामासुः सुदेनो सुदेनः ।

कस व गलकं दमं वहेदं वं गद ।

दे के कस गदस वहेदं वं रददं ॥ ३०३

दशत्यसौ परभृतः सहकारस्य मञ्जरोम् ।

तमहं वारयिष्यामि युवाभ्यां स्वैरमास्यताम् ॥ २६३ ॥

स ५ गू ररे क्ले स कसस ।

गलकं प्रीस गसेल रदिस व वर प्रेद ।

दे के वदम मोस वहेदं वं वप्रि ।

प्रिद गदिस दल प्रीस रदुम वं वहेदं ॥ ३०३

संगमय्य सखी यूना सकेते तद्रतोत्सवम् ।

निर्वर्त्तयितुमिच्छन्त्या कयाप्यपसृतं तत ॥ २६४ ॥

प्रोमस लो क्लेस प्रकं प्रदं प्रुस कस ।

दे दम रदुस वं दमर वं यी ।

दमर क्लेकं क्लुवं दुं गलुम रददं वस ।

रमर प्रीमं दे कसं सेदं वं प्रुद ॥ ३०८

किञ्चिदारभमाणस्य कार्यं दैवबलात्पुन ।

तत्साधनसमापत्तिर्या तदाहुः समाहितम् ॥ २६५ ॥

पुं० व० अण० अ० ङीष् ० उ० ष ० ष ० ष ० ।

ऋ० ष ० षी० ङी० ऋ० ष ० ष ० ष ० ष ० ।

३० षी० ऋ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ।

३० ङी० ऋ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ॥ ३०४ ॥

मानन्तस्या निराकर्तुं पादयोर्मै नमस्यतः ।

उपकाराय दिष्ट्येदमुदीर्णं घनगर्जितं ॥ २६६ ॥

ऋ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ।

ऋ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ।

ऋ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ।

ऋ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ष ० ॥ ३०५ ॥

आशयस्य विभूतेर्वा यन्महत्त्वमनुत्त[31b]रं ।

उदात्तं नाम तम्प्राहुरलंकार मनीषिणः ॥ २६७ ॥

वसत्र च नसं किं ननु च यी ।
 केषं चो नु नुं क्लेशं च ।
 नुं किं कुं क्लेशं च यी ।
 कुं नुं ननु च क्लेशं च यी ॥ ३०७

गुरोः शास्त्रनमत्येतुं न शशाक स राघव ।
 यो रावणशिरच्छेदकार्यभारप्यविह्वलः ॥ २६८ ॥

ननु चो नुं क्लेशं च यी ।
 कुं नुं क्लेशं च यी ।
 ननु चो नुं क्लेशं च यी ।
 कुं नुं क्लेशं च यी ॥ ३०८

रत्नभिच्छिष्टु संक्रान्तैः प्रतिबिम्बशतैर्वृतः ।
 ह्यातो लङ्घ्ये चरः कृच्छ्रादाब्जनेयेन तत्त्वतः ॥ २६९ ॥

नुं क्लेशं च यी ।
 कुं नुं क्लेशं च यी ।

ལྟོ་ལྟོ་དབང་ཕྱུག་དེ་མིན།

ཨ་ཁུ་ན་གྲུ་ས་དཀའ་བས་ཤེས། ॥ ३००

पूर्वत्राशयमाहात्म्यमत्राभ्युदयगौरवं ।

सुव्यञ्जितमतिव्यक्तमुदात्तद्वयमप्यदः ॥ ३००

སྒྲ་སར་བསམ་པའི་བདག་ཉིད་ཆེ།

འདིར་ནི་མངོན་པར་འབྱོར་བས་བརྗོད་པ།

གྲུ་ཆེ་གཉིས་པོ་འདི་དག་ཀྱང།

འབད་ལྟུགས་ལ་བར་མཚོན་པ་ཡིན། ॥ ३००

अपहृतिरपहृत्य किञ्चिदन्यार्थदर्शनं ।

न पञ्चेषुः स्मरस्तस्य सहस्रं पत्रिणामिति ॥३०१॥

བརྗོད་དོར་དག་ནི་བརྗོད་གྲུ་ས་ནས།

དོན་གཞན་ཅུང་ཟད་བརྗོད་པ་སྟེ།

འདོད་པ་དག་ནི་མདའ་ལྟུགས།

མ་ཡིན་སྒྲོ་ལྟན་སྟོང་ཕྱག་ཡོད། ॥ ३०१

चन्दनं चन्द्रिका मन्दो गन्धवाही च दक्षिणः ।
सेयमग्निमयी सृष्टिशशीता किल परान्प्रति ॥३०२॥

ཅན་ རྒྱལ་ རོད་ དལ་མུ་ ཡི།
ལྷོ་ ལྷོགས་ ཅི་ཡི་ བཞེན་པ་ འདི།
མེ་ཡི་ རང་བཞེན་ ལྷོ་པ་ ལྷེ།
གཞན་གྱི་ རོད་ཅི་ བསྐལ་ ཞེས་ བྲགས་ ॥ ३०२

शैशिर्यमभ्युपेत्यैव परेष्वात्मनि कामिना ।
औष्णप्रदर्शनात्तस्य सैषा विषयनिह्नुति ॥३०३॥

འདོད་ལྷན་གྱིས་ བློ་ གཞན་ ལ་ རེ།
བསྐལ་བར་ ཁས་ ལྷངས་ བདག་ཉིད་ལ།
ཚ་བ་ ཉིད་དུ་ རབ་བཞུན་ ལྷོར།
འདི་ཅི་ ལུལ་ལ་ བཞེན་ རོད་ཅོ་ ॥ ३०३

अमृतस्यन्दि[32a]किरणश्चन्द्रमा नाम नो मतः ।
अन्य एवायमर्थात्मा विषनिष्यन्दिदीधितिः ॥३०४॥

वदुदं छि वव वदं दं वव वव ।
 वव व वव वव वव वव ।
 वव व वव वव वव वव ।
 वव वव व वव वव वव ॥ ३०७

इति चन्द्रत्वमेवेन्दोरनिवर्त्यार्थान्तरात्मना ।
 उक्तं स्मरात्तनेत्येषा स्वरूपापह्नुतिर्मता ॥३०५॥

वव व वव वव वव वव ।
 वव व वव वव वव वव ।
 वव व वव वव वव वव ।
 वव व वव वव वव वव ॥ ३०८

उपमापह्नुतिः पूर्वमुपमास्वेव दशिता ।
 इत्यपह्नुतिभेदानां लक्ष्यो लक्ष्येषु विस्तरः ॥३०६॥

वव व वव वव वव वव ।
 वव व वव वव वव वव ।

འདི་ཡིས་ བསྐྱོན་ རོར་ དབྱེ་བ་ རྣམས། །
 མཚོན་བྱ་དག་ ལ་ སྐྱེ་ཆེར་ མཚོན་ །། ༣༠༦

श्लिष्टमिष्टमनेकार्थमेकरूपान्वितं वचः ।
 तदभिन्नपदं भिन्नपदप्रायमिति द्विधा ॥३०७॥

སྐྱུར་ བ་ བཞུགས་མཚེས་ ལྷན་པའི་ ཚོག་ །
 ཏུ་མའི་ རོན་ཅན་ ཉིད་ཏུ་ འདོད་ །
 ཉི་ཚོག་ བྲ་དད་ མིན་པ་ དང་ །
 བྲ་དད་ ཚོག་ འདྲ་ རྣམ་པ་ བཞུགས་ །། ༣༠༧

असावुदयमारूढः कान्तिमान् रक्तमण्डलः ।
 राजा हरति लोकस्य हृदयं मृदुभिः करैः ॥३०८॥

ཨ་ས་འུ་དུ་ལ་ བཞུགས་ མཚོས་པ་ཅན་ །
 དཀྱིལ་འཁོར་ ལ་ ཆགས་ སྐྱུལ་པོ་ འདི་ །
 མི་ཏུ་ཀ་རས་ འདིག་ ཉེན་ སྐྱི་ །
 ཡིད་ནི་ རབ་ཏུ་འགྲོག་པར་བྱེད་ །། ༣༠༨

दोषाकरेण सम्बद्धनक्षत्रपथवर्तिना ।
राहा प्रदोषो मामित्थमप्रियं किञ्च बाधते ॥३०६॥

क्रुक्लरं लसं ल रसं गकसं स ।
अळक खेदं सुदे स रं रसुल कस ।
शुदे ल यीस किं ससग रदीं कुं ।
रसल स खेद स रं उंस स अकं ॥ ३०७

उपमारूपकाक्षे[32b]पव्यतिरेकादिगोचराः ।
प्रागेव दर्शिता श्लेषा दश्यन्ते केचनापरे ॥३१०॥

रये रं सल्लुगस उकं रसोस स रं ।
शुसं स उकं शोससं सुदे सुल स उक ।
सुं स रं सों सुं सल्लुग वीं रं ।
सल्लुग स रसल लीस सल्लुग स रं सु ॥ ३१०

अस्त्यभिन्नक्रियः कश्चिद्विरुद्धक्रियोपरः ।
विरुद्धकर्मा वास्त्यन्यः श्लेषो नियमदादापि ॥३११॥

འགའ་ཞིག་ བྱ་བ་ བྱ་དང་མིན།
 བཞུགས་པ་ བྱ་བ་ འགའ་མིན་ ཡོད།
 འགའ་བའི་ ལས་ཅན་དག་ ཀྱང་ བཞུགས།
 སྐྱུར་བ་ རིས་པ་ ཅན་ ཡང་ ཡོད། ॥ ३११

नियमाक्षेपरूपोक्तिरविरोधी विरोध्यपि ।
 तेषां निदर्शनैश्वेव रूपमाविर्भविष्यति ॥३१२॥

རིས་པ་ འགོག་པ་ བཞུགས་ བཟོད་ དང་།
 འགའ་མེད་ འགའ་བ་ ཅན་ ཡང་ ལྟོ།
 དེ་དག་ ལྷན་ས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ ཡང་།
 དཔེ་བར་ ཟོད་ དག་ལ་ བསལ་བར་འགྱུར། ॥ ३१२

वक्रस्वभावमधुराः शसन्त्यो रागमुल्लवणम् ।
 दृशो हृत्यश्च कर्षन्ति कान्ताभिः प्रेषिताः प्रियान् ॥३१३॥

འགྲོག་ཅིང་ ཡིད་འོང་ རང་བཞིན་ཅན།
 ལྷན་ས་པ་ བསལ་བ་ ལྷོན་རྩེད་མ།

खड्डेस'खस' वङ्गुय वदि' खिमा' द्द' कि ।
 खे'ङ्ग खेस' ग्गु' खड्डे' वी' द्द' ग्गु' ग्गु' ॥ ३१३

मधुरा रागवर्धिन्यः कोमला. कोकिलागिरः ।
 आकर्ष्यन्ते मदकलाः श्लिष्यन्ते चासितेक्षणा ॥३१४॥

यी'द'द' क्क'स' व' द'द'य' व' व' व' ।
 द'द'य' व'द' खे'स' व'दि' ग'द'द'स' क्क'व' उ'व' ।
 ग्गु' ग्गु' ग्गु' कि' खे'स' ग्गु' ग' ।
 द'ग'र' खे'व' खे'मा' उ'व' द'ग' य' द'ग'ग' ॥ ३१४

रागमादर्शयन्नेष वारुणोयोगवर्धितः ।
 पराभवति घर्मा'शुरङ्गजस्तु विजृम्भते ॥३१५॥

क्क' स' द'द' क्क'र' द'द'य' व' यी' ।
 द'द'र' व' र' व' द' क्क' व' व' व' ।
 क' खे'र' उ'व' द'दि' व' व' ग्गु' ग' ।
 ग्गु' स' क्क'स' द'ग' कि' क'स' व' र' क्क'स' ॥ ३१५

निस्त्रिंशत्त्वमसावेव धनुष्येवास्य वक्रता ।
शरेष्वेव नरेन्द्रस्य [33a] मार्गणत्वञ्च वर्त्तते ॥३१६॥

रल'स्रीं छिंद'ल'कें स्त्री'पं ।
गल्लु छिंद'ल' के' अस्त्रिं'वा'सो'छिंद ।
सिं द'वद' अदि'यी' स्रुक्'ठ ।
सद'अ'कृ'म'स' छिंद' ल' ग'क'स' व' यी'क ॥ ३१७

पद्मानामेव दण्डेषु कण्टकस्त्वयि रक्षति ।
अथवा दृश्यते रागिमिथुनालिगनेष्वपि ॥३१७॥

स्त्रिंद'ग्री'स' व'स्रु'द'स'ल' कें'र' स' के' ।
व'द'द'ि' प्लु'व' छिंद'ल'दे' ।
दे'क'गु'द' क'ग'स'उ'क' अ'स्त्रिं'वा'स' ल' ।
अ'स्त्रु'द'व'र' स्रु'द'व'कृ'म'स'ल'अ'द' स'स्रें'द' ॥ ३१८

महीभृद्भूरिकटकस्तेजस्वी नियतोदयः ।
दक्षः प्रजापतिश्चासीत् स्वामी शक्तिधरश्च सः ॥३१८॥

ས་འཛོལ་ཀ་ཏ་ཀ་ མང་ཞིང་ །
 བཟི་བཞིན་ལྷན་པ་ རེས་པར་དར་ །
 ལྷོད་གུའི་བདག་ བྱང་ ལྷུང་བ་ལྷོ །
 རྗེ་པོ་ནམ་པ་ འཛོལ་ ཡང་དེ ॥ ३१८

अच्युतोप्यवृषोच्छेदी राजाप्यविदितक्षयः ।
 देवोप्यविबुधो जह्ने शंकरोप्यभुजंगवान् ॥३१९॥

ཉམས་མེད་ ཡིན་ ཡང་ ཚོས་ བཞེད་ མིན་ །
 ལྷུང་ པོ་ ཡིན་ ཡང་ ཟད་ མི་ཤེས་ །
 བདེ་བྱེད་ ཡིན་ ཡང་ ལག་ འགོ་མེད་ །
 ལྷ་ ཡང་ བི་བྱ་དྲུ་ མིན་ཤེས་ ॥ ३१९

गुणजातिक्रियादीनां यद्वैकल्यदर्शनं ।
 विशेषदर्शनायैव सा विशेषोक्तिरिष्यते ॥३२०॥

ལྷུང་པར་ རབ་དུ་ བསྟན་བའི་སྤྱིར་ །
 ཡོན་དན་ རིགས་ དང་ བྱ་བ་ མོགས་ །

གང་དུ་ མ་ཚང་ཉིད་ བསྟན་པ།
 དེ་ནི་ བྱད་པར་ བཟོད་པར་ འདོད་ ། ३३०

न कठोरं न चातीक्ष्णमायुधं पुष्पधन्वनः ।
 तथापि जितमेवासीदमुना भुवनत्रयं ॥३२१॥

མེ་དོག་ བཞུ་ཅན་ དག་གི་ མཚོན།
 ཚུབ་པ་མ་ཡིན་ རྫོང་བའང་མིན།
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ཡིས་ ཉི།
 མ་གསུམ་ དག་ལས་ རྒྱལ་བར་གྱུར། ། ३३१

न देवकन्यका नापि गन्धर्वकुलसभवा ।
 तथाप्येषा तपोभङ्ग विघातु वेधसोप्यलं ॥३२२॥

འདི་དག་ ལྷ་ཡི་ བུ་མོ་ མིན།
 རི་ཟའི་ རིགས་ལས་ བྱང་བའང་ མིན།
 དེ་ལྟ་ མེད་གྱི་ ཚངས་པའི་ ཡང་།
 དཀའ་བྱུབ་ བཞེས་པ་ ལྷུབ་པར་ ཉུས། ། ३३२

न बद्धा भुक्नु[33b]टिर्नापि स्फुरितो दशनच्छदः ।
न च रक्ताभवदृष्टिर्ध्वस्तश्च द्विषतां कुलं ॥३२३॥

सिं'ग'ते' द'ग'के' स'व'ल्ल'स' 'प'द' ।
स'य' 'ग'य'स' 'ग'द' स'व'ल्ल'द' 'य' ।
स'ग' 'ग'द' द'स'द' 'स' 'स' 'ग'द' 'व'द' ।
द'ग' 'य' 'स' 'ग' 'के' 'स' 'व' 'द' 'ग' ॥ ३२३

न रथा न च मातंगा न हया न च पत्तयः ।
ह्रीणामपाङ्गदृष्ट्यैव जीयते जगतां त्रय ॥३२४॥

'प'द' 'द' 'स' 'के' 'स' 'व' 'द' 'ग' ।
द' 'स' 'ग' 'द' 'स' 'व' 'द' 'ग' 'य' ।
द' 'स' 'ग' 'द' 'ग' 'स' 'व' 'द' 'ग' ।
द' 'स' 'ग' 'द' 'ग' 'स' 'व' 'द' 'ग' ॥ ३२४

एकचक्रो रथो यन्ता विकलो विषमा हयाः ।
आक्रामत्येव तेजस्वी तथाप्यर्को जगन्नथं ॥३२५॥

ལྷོང་རྩ་ འཁོར་ལོ་གཅིག་པ་དང་།
 ལ་ལོ་པ་ ཉམས་ རྩ་མི་མཉམ།
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ གཟི་བྱིན་ཅན།
 ཉི་མས་ འགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ མཉན། ॥ ३२४

सैषा हेतुविशेषोक्तिस्तेजस्वीतिविशेषणात् ।
 अयमेव क्रमोन्येषां भेदानामपि कल्प्यते ॥३२६॥

གཟི་བྱིན་ཅན་ སོགས་ ལྷན་པར་ལས།
 འདི་ནི་ ལྷ་ཡི་ ལྷན་པར་ བཟོད།
 རིས་པ་ འདི་ཡིས་ གཞན་གྱི་ ཉི།
 དབྱེ་བ་རྣམས་ ལྷང་ བདག་པར་བྱ། ॥ ३२७

विवक्षितगुणोत्कृष्टैर्यत्समीकृत्य कस्यचित् ।
 कीर्त्तनं स्तुतिनिन्दार्थं सा स्मृता तुल्ययोगिता ॥३२७॥

བཟོད་ འདོད་ ཡོན་ ཉན་ ལྷན་འཕགས་ དང་།
 མཚུངས་པར་ ལྷས་ནས་ འགའ་ཞིག་ནི།

བཟོད་སྐྱོད་ རྣམ་ དོན་དུ་ བསྐྱབས་པ་ བང་ །

དེ་ལི་ མཚུངས་པར་ སྐྱོར་བར་ བཤད་ ། ३१७

यमः कुबेरो वरुणः सहस्राक्षो भवानपि ।

बिभ्रत्यनन्यविषयां लोकपाला इति श्रुतिम् ॥३२८॥

གཤེན་ཇི་ ལུས་ངན་ ཚུ་རྩ་དང་ །

མིག་སྐྱོང་པ་ དང་ བྱོད་ཉིད་ ཀྱང་ །

འཇིག་རྟེན་ སྐྱོང་བ་ ཞེས་པའི་ རྒྱ་ །

ཡུལ་གཞན་མེད་པར་ རྣམ་པར་ འཇོན་ ། ३१८

संगतानि मृगाक्षीणां तडिद्विलसितन्यपि ।

क्षणद्वयन्न तिष्ठ[34a]ति घनरन्धान्यपि स्वयं ॥३२९॥

རི་དགས་ མིག་ དང་ འགྲོགས་པ་ དང་ །

སྐྱོག་གི་ ཅེ་དགའ་དག་ དང་ བི་ །

སྐྱིན་གྱི་ ཚུམ་པའང་ སང་བཞིན་གྱིས་ །

སྐད་ཅིག་ བཟྱིས་པར་ མི་ བཞས་སོ་ ། ३१९

विरुद्धानाम्पदार्थानां यत्र संसर्गदर्शनं ।
विरोधसाधनायैव स विरोधः स्मृतो यथा ॥३३०॥

འགལ་ལྷོ་ ལྷུབ་བྱེད་ ལྷན་དུ་ནི།
གང་དུ་ དངོས་པོ་ འགལ་བ་ ལྷམས།
ཡང་དག་ འགྲོགས་པར་ རབ་བརྟན་བ།
དེ་ནི་ འགལ་བ་ བཤད་ དེ་ དཔེར། ॥ ३३०

कूजितं राजहंसानां वद्धते मदमञ्जुलं ।
क्षीयते च मयूराणां रुतमुत्क्रान्तसौष्ठवं ॥३३१॥

ངང་པའི་ ལྷུལ་པོ་ ལྷམས་དག་ནི།
ལྷོས་པའི་ གངས་ལྷན་ ཅ་ཅོ་ འཕེལ།
མ་བྱ་ལྷམས་ཀྱི་ ལྷན་དག་ནི།
ཡིད་འོང་ ཉིད་ངང་ བྲལ་བས་ཉམས། ॥ ३३१

प्रावृषेण्यैर्जलधरैरम्बर दुर्दिनायते ।
रागेण पुनराक्रान्तं जायते जगतां मनः ॥३३२॥

དབྱར་སྐྱེས་ རྩ་འཛིན་དག་གིས་ནི།
 བམ་མཁའ་ ཡུལ་ངན་ ལྟ་བུར་སྦྱོད།
 ཆགས་པ་ ཡིས་ ཀྱང་ འགོ་བ་ཡི།
 ཡིད་ནི་ ཀྱན་ཏུ་ ཆགས་པར་བྱུར། ॥ ३३३

तनुमध्यं पृथुश्रोणि रक्तौष्ठमसितेक्षणं ।
 नतनाभि वपुः स्त्रीणां क न हन्त्युन्नतस्तनं ॥३३३॥

རྩོད་པ་ སྐྱ་ ཞིང་ རོ་སྦྱོད་ རྩོམ།
 མཚུ་དམར་ མིག་ནི་ དཀར་པ་ མིན།
 ལྡེ་བ་ དམའ་ ཞིང་ ལུ་མ་ མཐོ།
 བྱད་མེད་ ལུས་ ཀྱིས་ སྐྱ་ མ་ བཅོམ། ॥ ३३३

मृणालबाहु रम्भोरु पद्मोत्पलमुखेक्षणं ।
 अपि ते रूपमस्माकं तन्वि तापाय कल्पते ॥३३४॥

བད་ཅའི་ ལག་པ་ རྩ་ཤིང་ བརྩ།
 བརྩའི་གདོང་ དང་ ལྷ་ཏུལ་ མིག།

བྱི་ཀྱི་གཞུགས་ཀྱིས་ བདག་ཅག་རྣམས།
 བདུང་རྣམ་ མིན་ནམ། ལུས་ཅན་མ། ॥ ३३८

उद्यानमारुतोद्धूताश्चूताश्चम्पकरेणवः ।
 उदश्चयन्ति पान्यानामस्पृशन्तोपि लोचनम् ॥३३९॥

རློད་ཚལ་ རླུང་གིས། རབ་བརློད་པ།
 རླུང་ཅས་ཀྱི་ཡི་རྣམ།
 རིག་པ་མིན་ ཡང་ འགྲོན་པོ་ཡི།
 མིག་ལ་ མཚི་མ་ཟུག་པར་བྱེད། ॥ ३३९

कृष्णाजुं नानुरक्तापि दृष्टिः कर्णा[34b]वलम्बिनी ।
 याति विश्वसनीयत्व कस्य त कलभाषिणि ॥३३६॥

ལྷན་པར་རློགས་མ་ བྱི་ཀྱི་མིག།
 བག་དཀར་རྗེས་སུ་དམར་པ་ ཡང་།
 ལྷ་བ་དག་ལྷ་ བཏེན་པ་ རི།
 སུ་ཡི་ ཡིད་བཏེན་ཉིད་ཏུ་འགྱུར། ॥ ३३६

इत्यनेकप्रकारोयमलंकार प्रतीयते ।
अप्रस्तुतप्रशंसा स्यादप्रक्रान्तेप्सितास्तुतिः ॥३३७॥

दे'ङ्ग'र'गु'र' र'द' क'स' 'प' 'के' ।
दु'स' 'ङ्ग' 'र' 'दु' 'र' 'व' 'र' 'ग' 'स' 'गु' ।
स'स' 'स' 'के' 'र' 'द' 'र' 'व' 'स' 'व' 'र' 'र' 'व' 'के' ।
स'स' 'स' 'स' 'व' 'व' 'व' 'र' 'र' 'व' 'के' ॥ ३३७ ॥

सुखं जीवन्ति हरिणा वनेष्वपरसेविनः ।
अर्थैरयत्नसुलभैर्जलदर्भाङ्कुरादिभिः ॥३३८॥

ग'र' 'र' 'स' 'व' 'र' 'र' 'द' 'र' 'स' 'र' 'र' 'र' ।
र' 'व' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' ।
र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' ।
र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' 'र' ॥ ३३८ ॥

सेयमप्रस्तुतैवात्र मृगवृत्तिः प्रशस्यते ।
राजानुवर्त्तनक्लेशनिर्विण्णेन मनस्विना ॥३३९॥

གྱུལ་པོའི་རྗེས་འབྲངས་ ཉེན་མོངས་པ།
 ཤེན་དུ་སྐྱོ་བའི་ ཡིད་ཅན་གྱིས།
 སྐབས་སུ་ མ་བབ་ཉིད་དུ་ འདིར།
 རི་དྲུགས་ སྐྱོད་ཚུལ་ འདི་དག་ བསྐྱབས། ॥ ३३७

यदि निन्दन्निव स्तौति व्याजस्तुतिरसौ स्मृता ।
 दोषाभासा गुणा एव लभन्ते ह्यत्र सन्निधिं ॥३४०॥

གལ་ཏེ་ སྐྱོད་པ་ བཞིན་ བསྐྱོད་ནས།
 སྐྱོན་ ལྟར་ སྐང་བའི་ཡིན་ཏན་ཉིད།
 གང་དུ་ ཉེ་བར་ཐོབ་གྱུར་པ།
 འདི་ནི་ རྗེས་གྱིས་བསྐྱོད་པར་ བཤད། ॥ ३ॣ०

तापसेनापि रामेण जितेयं भूतधारिणी ।
 त्वया राक्षापि सैवैयं जिता मा भून्मदस्त्व ॥३४१॥

རྩ་མ་དཀའ་ཐུབ་པ་ཡིས་ གྱུང་།
 འབྲུང་བོ་ འཛིན་མ་ འདི་ལས་གྱུལ།

दे०श्रिन० कृ०प०बो० त्रि०द०गु०श० गृ०द० ।
 अ०द०ब० त्रि०द०श्रि० कृ०प०श० ब० ब०द० ॥ ३८०

पुंसः पुराणादाच्छिद्य श्रीस्त्वया परिभुज्यते ।
 राजन्निह्वाकुर्वशस्य किमिदं तव युज्य[35a]ते ॥३४२॥

श्रि०द०गु०श्रि०द०श्रि० कृ०प०श० ब० ब०द० ॥
 अ०द०ब० त्रि०द०श्रि० कृ०प०श० ब० ब०द० ॥
 कृ०प०बो० त्रि०द०श्रि० कृ०प०श० ब० ब०द० ॥
 त्रि०द०श्रि० अ०द०ब० श्रि०द०श्रि० कृ०प०श० ब० ब०द० ॥ ३८१

भुजंगभोगसंसक्ता कलत्रं तव मेदिनी ।
 अहंकारः पराङ्गोदिमारोहति कुतस्तव ॥३४३॥

त्रि०द०श्रि० कृ०प०श० ब० ब०द० ॥
 अ०द०ब० त्रि०द०श्रि० कृ०प०श० ब० ब०द० ॥
 अ०द०ब० त्रि०द०श्रि० कृ०प०श० ब० ब०द० ॥
 अ०द०ब० त्रि०द०श्रि० कृ०प०श० ब० ब०द० ॥ ३८२

इति श्लेषानुविद्धानामन्येषां चोपलक्ष्यताम् ।
व्याजस्तुतिप्रकाराणामपर्यन्तः प्रविस्तरः ॥३४४॥

दे'ल्लर' छे'वर' खर्केव'व लस ।
श्रुत'व'तक द'म'ग'लक'द'मा'मी ।
त्रे'ल'मृ'स'व'स्रो'द'प'द' क'स'व'क'स'स ।
द'व'दु'कु'के'क'स'द'द'द'स'व' ॥ ३८८

अर्थान्तरप्रवृत्तेन किञ्चित्तत्सदृशं फलं ।
सदसद्वा निदर्शयते यदि स्यात्तन्निदर्शनं ॥३४५॥

म'ल'दे' दे'क'म'ल'क'द'हु'म'व'प'स' ।
दे'द'द'क'स'द'स'व'द'द'स'स'व'द'म' ।
ख'के'म'म'स' ख'के'म'स'क' स्रो'द'दे'व' ।
दे'के'दे'स'व'द'व'स'क'v'v'प'स' ॥ ३८९

उदयन्नेव सविता पद्मेष्वर्पयति श्रियं ।
विभावयितुमृद्धीनां फलं सुहृदनुग्रह ॥३४६॥

ཉེ་མ་ འཆར་བ་ཉིད་ཀྱིས་ ཉི །
 བརྒྱ རྣམས་ལ་ དབལ་སྟེར་བྱེད །
 ཡུན་ཚོ་གས་རྣམས་ཀྱི་ འབྲས་བུ་དག །
 ལོ་གས་ བོ་རྗེས་འཛིན་ བསྟན་པའི་སྤྱིར ། ༢༭༩

याति चन्द्रांशुभिः स्पृष्टा ध्वान्तराजी पराभवं ।
 सद्योराजविरुद्धाना सूचयन्ती दुरन्ततां ॥३४७॥

ལྷ་བའི་ཟེར་བྱིས་ རེག་བ་ན །
 ལུན་བའི་སྟེང་བ་ ལུབ་བར་འགྱུར །
 འབྲས་ལ་ལ་ཀྱལ་པོ་ དང་ འགལ་རྣམས །
 ངན་པའི་མཐར་འགྱུར་ གསལ་བར་བྱེད ། ༢༭༨

सहोक्तिः सहभावस्य कथनं गुणकर्मणा ।
 अर्थाना यो विनिमयः परिवृत्तिस्तु सा यथा ॥३४८॥

ཡོན་ཏན་ལས་རྣམས་ ལྷན་ཅིག་གི །
 དངོས་པོ་ བརྗོད་པ་ ལྷན་ཅིག་བརྗོད །

རོན་རྣམས་ བསྐོལ་བ་ གང་ ཡིན་པ།
 ཡོངས་བཞེས་ཡིན་ཏེ་ དེ་དག་ དབང་ ॥ ༣༤༤

सह दीर्घा मम[35b] श्वासैरिमाः संप्रति रात्रयः ।
 पाण्डराश्च ममैवाङ्गैः सह ताश्चन्द्रभूषणाः ॥३४५॥

དེ་ནི་ མཚན་མོ་ འདི་དག་རྣམས།
 བདག་གི་དབུགས་ དང་ ལྷན་ཅིག་རིང་།
 རྒྱ་བའི་རྒྱན་ལྷན་ས་རྣམས་ ཀྱང་།
 བདག་ལུས་ཉིད་ དང་ ལྷན་ཅིག་ རྒྱ ॥ ༣༤༥

वर्द्धते सह पान्थानां मूर्च्छया चूतमञ्जरी ।
 पतन्ति च समन्तेषामश्रुभिर्मलयानिलाः ॥३४६॥

འགོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ མིངས་ བ་ དང་།
 ལྷན་ཅིག་ རྒྱ་དའི་དོག་ པ་རྒྱས།
 དེ་དག་ མཚི་མ་ དང་ མཉམ་དུ།
 མ་ལ་ཡ་ ཡི་རྒྱུང་དག་ འབབ་ ॥ ༣༤༦

དེ་དག་ བྲགས་པ་ ཀྱ་མུད་ དཀར།
 ཡུན་རིང་དག་ཏུ་ བསྐྱབས་པ་ ལྷོགས། ॥ ३१३

आशीर्नामाभिलषिते वस्तुन्याशंसन यथा ।
 पातु वः परमज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ३५४॥

མངོན་པར་འབོད་པའི་དངོས་པོ་ལ།
 ལྷོན་པ་ལིས་བཟོད་ཅེས་བྱ། དཔེར།
 དག་ཡིད་ ལྷོད་ཡུལ་ མ་ཡིན་པའི།
 ལྷང་བ་ དམ་པས་ བྱིད་ལ། ལྷངས། ॥ ३१ॣ

अनन्वयससंदेहावुपमास्वेव दर्शितौ ।
 उपमा रूपक[36a]चापि रूपकेष्वेव कीर्तितम् ॥३५५॥

ཇིས་འགྲོ་མེད་དང་ཐོ་ཚོམ་ཅན།
 དག་ནི་དཔེ་རྣམས་ཉིད་ལ་བལྟན།
 དཔེ་ཡི་གཞུགས་ཅན་དག་ཀྱང་འདྲིར།
 གཞུགས་ཅན་རྣམས་ལ་ངེས་པར་བསྐྱབས། ॥ ३१५

उत्प्रेक्षाभेद एवासावुत्प्रेक्षावयोपि च ।
नानालकारसंसृष्टिः संसृष्टिः कथ्यते पुनः ॥३५६॥

एवङ्केवाः षः षः २६० ५८ ३ ।
एवङ्केवाः दवा मीः दसुः व ३१६ ।
षः ददः सुवः क्कसः वसुसः वः ३ ।
सुसः वः दवा ५० वङ्केवः वः सु ॥ ३५७

अङ्गाङ्गिभावसंस्थानं सर्वेषां समकक्षता ।
इत्यलङ्कारसंसृष्टौ लक्षणीया द्वयी गतिः ॥३५७॥

एवङ्केवाः एवङ्केवाः उवः ददः ३१ ।
सुवः ददः वसः उवः सुवः वः सुवः ३१६ ।
उवः वः सुवः वः सुवः सुवः वः सुवः ३१६ ।
सुवः दवा ५० वः सुवः वः सुवः ॥ ३५७

आक्षिपन्त्यरविन्दानि तव मुग्धे मुखश्रियं ।
कोषदण्डसमप्राणां किमेषामस्ति दुष्करं ॥३५८॥

མཛེས་མ་ ཁྱོད་ ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དབལ་ །
 བརྒྱ་ དག་གིས་ འགོག་པར་བྱེད་ །
 མཛེད་དང་ ལུ་བ་ སྐྱོ་ཚོགས་པ་ །
 འདི་ལ་ བྱ་ དཀའ་ ཅི་ ཞིག་ ཡོད་ ॥ ३ॣ८

श्लेषः सर्वासु पुष्पाति प्रायो वक्रोक्तिषु श्रियं ।
 भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मय ॥३५६॥

རང་བཞིན་ བཛེད་ དང་ འཁྱོག་ བཛེད་ཅེས་ །
 འག་གི་ རང་བཞིན་ བྱ་དང་ བཞིན་ །
 འཁྱོག་པོར་ བཛེད་པ་ བསམ་ཅད་ལ་ །
 སལ་ཆེར་ ལྷུང་བས་ དབལ་རྒྱས་བྱེད་ ॥ ३ॣ९

भाविकत्वमिति प्राहुः प्रबन्धविषयं गुणः ।
 भावः कवेरभिप्रायः कान्येष्वसिद्धि यः स्थितः ॥३६०॥

ལྷུན་འག་མཁའ་ བསམ་དགོངས་པ་ ལྷེ་ །
 ལྷུན་འག་ ལྷུང་པར་ བང་ བཞས་པ་ །

རབ་སྐྱོར་ ཡུལ་གྱི་ཡོན་ཏན་ཅན་ །
 དེ་ནི་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ བརྗོད་ ། ༣༥༠

परस्परोपकारित्वं सर्वेषां वस्तुपर्वणाम् ।
 विशेषणाना व्यर्थानामक्रिया [36b] स्थानवर्णनं ॥ ३६१

དངོས་པོ་ཡི་ ནི་ ཚོགས་རྣམས་ཀུན་ །
 སྐད་ཚུན་ སྐད་བར་བྱེད་པ་ ཉིད་ །
 རོན་དང་ བུལ་བའི་ བྱེད་བར་ རྣམས་ །
 མ་བྱས་ གནས་སྤུ་ བསྐྲུགས་པ་ དང་ ། ༣༥༡

व्यक्तिहक्तिक्रमबलाद्गम्भीरस्यापि वस्तुनः ।
 भावायत्तमिदं सर्वमिति त भाविकं विदुः ॥ ३६२

བརྗོད་རིམ་ ལྟོབས་ ལས་ དངོས་པོ་ ནི་ །
 ཟབ་མོ་དག་ ཀྱང་ གསལ་བ་སྟེ་ །
 དེ་ཀུན་ དགོངས་པའི་དབང་གྱུར་ ལྱིར་ །
 དེ་དག་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ རིག་ ། ༣༥༢

यच्च सन्ध्यङ्गवृत्त्यङ्गलक्षणाद्यागमान्तरे ।
व्यावर्णितमिदं चेष्टमलङ्कारतयैव नः ॥ ३६३

वाचं यत् सङ्घस्यं श्रुत्वा यत्तदात् ॥ १ ॥
अत्रापि यत्तदात् सङ्घस्यं श्रुत्वा ।
अत्रापि यत्तदात् सङ्घस्यं श्रुत्वा ।
श्रुत्वा श्रुत्वात् ॥ ३६३

पन्था स एष विवृतः परिमाणवृत्त्या संहृत्य विस्तरमनन्तमलंक्रियाणां ।
वाचामतीत्य विषयं परिवर्त्तमानानभ्यास एव विवरीतुमल विशेषान् ॥ ३६४

श्रुत्वा सङ्घस्यं श्रुत्वा श्रुत्वात् ॥ १ ॥
श्रुत्वा सङ्घस्यं श्रुत्वा श्रुत्वात् ॥ १ ॥
श्रुत्वा सङ्घस्यं श्रुत्वा श्रुत्वात् ॥ १ ॥
श्रुत्वा सङ्घस्यं श्रुत्वा श्रुत्वात् ॥ १ ॥

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यादर्शोऽर्थालङ्कारो नाम द्वितीय परिच्छेदः ॥

श्रुत्वा सङ्घस्यं श्रुत्वा श्रुत्वात् ॥ १ ॥
श्रुत्वा सङ्घस्यं श्रुत्वा श्रुत्वात् ॥ १ ॥
श्रुत्वा सङ्घस्यं श्रुत्वा श्रुत्वात् ॥ १ ॥

CHAPTER III

अव्यपेतव्यपेतात्मा व्यावृत्तिर्वर्णसहतेः ।
यमकं तच्च पादानामादिमध्यान्तगोचरं ॥१॥

वरु'ख'ळें'द' वरु'ळें' वद'ग ।
यी'गो' ङें'ग'स'व' व'ळें'र'व'की ।
ळु'र'ळु'क' दे'य'द' ग'द' व'यी ।
द'द'र' वरु' ख'स'र' ङु'र' य'य' उ'क ॥ १

एकद्वित्रिचतुष्पादयमकानां विकल्पनाः ।
आदिमध्यान्तमध्यान्तमध्याद्याद्यन्तसर्वतः ॥२॥

ग'उ'ग' ग'उ'स' ग'सु'स' व'ळें' ग'द'व'यी ।
ळु'र'ळु'क'क'स'स'गु' क'स'र'ग'की ।
सु'ग'स' वरु' ख'स'र' वरु' द'द' ख'स'र' ।
वरु'द'द' सु'ग'स' सु'ग'स'स'र' गु'क ॥ २

[37a] अत्यन्तबहवस्तेषां भेदा. समेदयोनयः ।
सुकरा दुष्कराश्चैव दर्शयन्ते तत्र केचन ॥३॥

गुणं नुं ननु वं यथां श्लेषं च ।
देवतां ननु वं यथां नुं च ।
देवतां ननु वं ननु च ।
ननु वं ननु वं ननु च ॥ ३

मानेन मानेन सखि प्रणयोभूत्प्रिये जने ।
खण्डिता कण्ठमाश्लिष्य तमेव कुरु सत्रपम् ॥४॥

सोमस्य स्य स्य स्य स्य स्य ।
सोमस्य स्य स्य स्य स्य स्य ।
सोमस्य स्य स्य स्य स्य स्य ।
सोमस्य स्य स्य स्य स्य स्य ॥ ८

मेघानादेन हंसानां मदनोमदनोदिना ।
नुन्नमानं मनः स्त्रीणां सह रत्या विगाहते ॥५॥

རང་བ་ རྣམས་ གྱི་ རླུང་ས་ འཛོམས་ བ།
 སྤྲིན་ གྱི་ སྐྱ་ ཡིས་ ལྷོས་ བྱེད་ རི།
 དགའ་མ་ དང་ བཅས་ བྱད་མེད་གྱི།
 ཁངས་ བྲལ་ཡིད་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད། ॥ ४

राजन्वत्यः प्रजा जाता भवन्त प्राप्य साम्प्रतं ।
 चतुरं चतुरंभोधिरसनोर्वीकरग्रहे ॥६॥

ལུ་གཏེར་བཞི་ཡི་ སྐྱ་རགས་ཅན།
 ས་ཡི་ལག་ དགུ་འཛོལ་ལ་ མཁས།
 བྱོད་ཉིད་ ཐོབ་ནས་ ད་ལྟ་ རི།
 སྐྱེ་དགུ་ སྐྱལ་པོ་ བཟང་ ལྡན་གུར། ॥ ७

अरण्यं कौश्रिदाक्रान्तमन्यैः सद्य दिवोकसां ।
 पदातिरथनागाश्वरहितैरहितैस्तव ॥७॥

ཀང་ཐང་ ཡིང་ཏྟ་ སྐང་པོ་དང་།
 ཏྟ་དང་ བྲལ་བ་ བྱོད་གྱི་ དགུ།

འགའ་ ཞིག་ རྣམས་དང་ གཞན་དག་ནི །
 ལྟ་ རྣམས་དག་གི་ གནས་སྲུ་ སོང་ ॥ ༧ ॥

मधुरं मधुरम्भोजवदने वद नेत्रयोः ।
 विभ्रमम्भ्रमरभ्रान्त्या विडम्बयति किञ्चिद् ॥८॥

ལུ་སྐྱེས་གཞོང་ལྷན་ མིག་དག་གི །
 རྣམ་འཕྲུལ་ ཡིད་འོང་ འདི་ལ་ རྟི །
 དཔྱིད་ཀྱི་ བྱང་བའ་རྣམ་འཕྲུལ་གྱིས །
 ཙོ་འདྲི་བྱེད་པ་ ཅི་ ཡིན་ ལྷོས ॥ ༨ ॥

वारुणो वा रणोद्दामो हयो वा स्मरदुर्धर ।
 न यतो नयतोऽन्तं नस्तदहो वि[37b]क्रमस्तव ॥९॥

འདོད་པ་ གཡུལ་དུ་ དཔའ་བ་ཡི །
 ལྷང་བོའམ་ གཟུང་དཀའ་ ཉ་ མེད་ཀྱིས །
 གང་སྤྱིར་ བདག་ཅག་ མཐར་བུས བ །
 དེ་སྤྱིར་ རྩོད་ཀྱི་ རྣམ་གཞོན་ མཚར ॥ ༩ ॥

राजितैराजितैश्चण्येन जीयते त्वाद्वशैर्नृपैः ।
नीयते च पुनस्तृप्तिं वसुधा वसुधारया ॥१०॥

वायुव ५० ३०३३ ३०३३ ३०३३ ।
३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ।
३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ।
३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ॥ १०

करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोप्येष मत्तकोकिलनिस्त्रन. ॥११॥

३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ।
३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ।
३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ।
३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ३०३३ ॥ ११

कथं त्वदुपलम्भाशा विहताविह तादृशीं ।
अवस्था नालमारोढुमङ्गनामङ्गनाशिनी ॥१२॥

བྱིད་ལ་ དམིགས་ པའི་རི་བ་ དང་ །
 མ་གྲལ་ འདི་ལ་ དེ་འདྲ་ ཡི།
 གནས་སྐབས་ ལྷས་ནི་ འཇིག་བྱེད་པས། །
 ལྷ་མེད་ འཇོགས་ ཅུས་ ཅི་ལྟར་མིན། ॥ २३

निगृह्य नेत्रे कर्षन्ति बालपल्लवशोभिना ।
 तरुणा तरुणान्कृष्टानलिनो नलिनोन्मुखाः ॥१३॥

ཡལ་འདབ་ གསར་བས་ མཛེས་པ་ཡི། །
 ལྷོན་པས་ དྲངས་པའི་ གཞོན་ཅུ་ནསས། །
 བརྗེར་ མངོན་ ལྷོགས་ ལྷང་བ་ཡིས། །
 མིག་ནས་ བརྗེད་ ལྷེ་ འགྲུགས་པར་བྱེད། ॥ २३

विशदा विशदामत्तसारसे सारसे जले ।
 कुरुते कुरुतेनेय हंसो मामन्तकामिष ॥१४॥

ལྷོས་པའི་ བཞད་ནི་ རབ་འཇུག་པ། །
 རྗེར་གྱི་ ལྷ་ལ་ དཀར་བ་ཡི། །

ངང་མོ་ འདི་ཡི་ ཅ་ཅོ་ ཡིས། །
བདག་ བློ་ མཐར་ བྱེད་ཟས་སུ་བྱེད། ॥ ༡༭

विषम विषमन्वेति मदन मदनन्दनः ।
सहेन्दुकलयपोढमलया मलयानिलः ॥१५॥

དྲི་བུལ་ ལྷ་བའི་ཆ་དག་ དང་། །
ལྷན་ཅིག་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱུང་། །
བདག་ དགའ་མི་ བྱེད་འདོད་པ་ བློ། །
མི་བཟད་དུག་གི་ རྗེས་སུ་འགོ། ॥ ༡༮

मानिनी मानिनीषुस्ते निषङ्गत्वमनङ्ग मे ।
हारिणी हारिणी[38a]शर्म तनुतां तनुतां यतः ॥१६॥

བདག་ ལྷན་མི་ འདོད་ བེངས་པ་ ཅན། །
དོ་ཤལ་དང་ལྷན་ འཕྲོག་བྱེད་མ། །
ལུས་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ དང་པ་ ཉིད། །
སྲ་གུར་ བདག་ འགྲོགས་ བདེ་རྒྱས་ མཚོད། ॥ ༡༩

जयता त्वन्मुखेनास्मानकथ न कथं जित ।
कमलं कमलकुर्वदलिमहलिमत्प्रिये ॥१७॥

सुदःश्रीः शरदं शीशः वदशः लशः सुल ।
कुःपीःसुजः सुदः सुदःवःउक ।
ददवःल्लवः वदुः शरदः शीदःलश ।
उःल्लः शीःसुलः वदशः दशदश ॥ १७

रमणी रमणीया मे पाटलापाटलाशुका ।
वारुणीवारुणीभूतसौरभा सौरभास्पदं ॥१८॥

श्रीःशरीःदंशःश्रीशः दशदः सुदःवदं ।
कुःल्लःशोः वल्लैवः सुःदःल ।
दशदःदशदः शीशःउक शीःवःउदशः शरदः ।
वदशःशीः दशदःशः दशदःवदःसु ॥ १८

इति पादादियमकमव्यपेतं विकल्पित ।
व्यपेतस्यापि वण्यन्ते विकल्पास्तत्र केचन ॥१९॥

དེ་ལྟར་ ཀང་པའི་ ཐོག་ མ་ཡི།
 རྩེ་ལྷན་ བར་ཚོད་མེད་ རྣམ་རྟོག།
 དེ་ནི་ བར་དུ་ཚོད་པ་ ཡི།
 རྣམ་རྟོག་ འགའ་ཡང་ བསྟན་བར་བྱ། ॥ १७

मधुरेणदृशां मान मधुरेण सुगन्धिना ।
 सहकारोद्गमेनैव शब्दशेष करिष्यति ॥२०॥

མ་ཉ་ཀུ་ར་ ལས་ འཁྲུངས་ ཉིད།
 ཡིད་འོང་ དྲི་བཟངས་ ལྷན་པ་ ཡིས།
 དབྱེད་ཀྱི་ ཡེ་ཆའི་ མིག་ཅན་གྱི།
 ཁེངས་པ་ ལྷ་ཡི་ ལྷག་མར་བྱེད། ॥ ३०

करोऽतिताम्रो रामाणान्तन्त्रीताडनविभ्रमं ।
 करोति सेष्यं कान्ते वा श्रवणोत्पलताडनं ॥२१॥

དགའ་མའི་ ལག་པ་ ལྷན་དུ་ དམར།
 ལྷུད་མངས་ལ་ བསྟན་ རྣམ་ འཕྲལ་ལ། *

སྤྲུལ་དོག་ ལྷན་ནམ་ མཛེལ་བོ་ལའང་ །
 ལྷ་བའི་ཡུལ་གྱིས་ བསྐྱུན་བྱེད་ ॥ ३१

सकलापोल्लसनया कलापिन्याऽनुवृत्त्यते ।
 मेघाली नर्त्तिता वातैः सकलापो विमुञ्चति ॥२२॥

ལྷུང་གྱིས་ བར་ བསྐྱུར་ སྤྲིན་གྱི་སྤེང་ །
 མཐའ་དག་ ལུ་ནི་ འཕྲོར་བར་བྱེད་ །
 དེ་རྗེས་ མཆུག་ མ་རབ་བསྐྱུང་བའི་ །
 མཆུག་རྗེ་ལྷན་པ་ བར་དག་བྱེད་ ॥ ३३

स्वयमेव गलन्मानकलि कामिनि[38b]ते मनः ।
 कलिकामथ नीपस्य दृष्ट्वा कां नु स्पृहशेशां ॥२३॥

འདོད་ལྷན་མ་ དག་ ལྷོད་གྱི་ ཡིད་ །
 ཁེངས་ཚོད་ རང་ཉིད་ ཉམས་འགྱུར་ཉི་ །
 ལྷི་བའི་ཀ་ལི་ཀུ་ མཐོང་ན་ །
 ལྷན་སྐབས་ ཅི་ལ་ རིག་འགྱུར་རམ་ ॥ ३३

आरुह्याक्रीडशैलस्य चन्द्रकान्तस्थलीमिमां ।
नृत्यत्येष लसन्नारुचन्द्रकान्तः शिखावलः ॥२४॥

ऊँ नमदिं ई यीं च्छु रेंदं ग्नी ।
षद रदिं यं किं रंकेमसः सुद वस ।
सर्देस सषदं सकेम सु रम सकेसं वदिं ।
मर्द्धम सुदं उवं रदिं मरं सुदं रें ॥ २८

उद्धृता राजकादुर्वी ध्रियतेद्य भुजेन ते ।
वराहेणोद्धृता यासौ वराहेरुपरि स्थिता ॥२५॥

मद वैमं सुदं सकेम सुदं मवसः वदिं ।
सम वस मर्द्धमं वदिं स रदिं किं ।
सुद वदिं केमस यस रमं च्छुदसं वस ।
न सुं सुदं ग्नीं यम वसं मर्द्धमं ॥ ३५

करेण ते रणेष्वन्तकरेण द्विषतां हताः ।
करेणवः क्षरद्रक्ता भान्ति सन्ध्याघना इव ॥२६॥

བཀུལ་དུ་ དག་ཡི་ ལླང་བོ་ཉམས། །
 བྱོད་ཀྱི་ ལག་པ་ མཐར་བྱེད་ཀྱིས། །
 བསྐྱེད་པའི་བྲག་ ཉི་ རབ་ཟླ་པ། །
 བྱུ་མཚམས་དག་གི་ སྤྲིན་ བཞིན་ མཛོམས། ॥ ३५

परागतहराजीव वातैर्ध्वस्ता भटैश्चमूः ।
 परागतमिव कापि परागततमम्बरं ॥२७॥

ལླང་གིས་ རི་ཡི་ཤིང་སྤྲང་ བཞིན། །
 བཞིན་གྱི་ སྤེ་ནི་ དཔའ་བོས་ བཅོམ། །
 མཐར་ཉི་ བཀ་ཤེད་ སང་བ་ བཞིན། །
 དུལ་གྱིས་ ཉམ་མཁའ་ བྲུབ་པར་གྱུར། ॥ ३७

पातु वो भगवान्विष्णुः सदा नवघनद्युतिः ।
 स दानवकुलध्वसी सदानवरदन्तिहा ॥२८॥

ཡེགས་ལྷན་ ལུ་འཛིན་ བསར་པའི་འོད། །
 ལྷ་མིན་དག་གི་ རིགས་ཉམས་བྱེད། །

ཆད་ལྷན་ རྒྱང་པོ་ མཚོག་ བཅོམ་པ།

ཁྱབ་འཇུག་ དེས་ ཁྱེད་ ཏྲག་ཏུ་ སྤྱངས། ॥ ३८

कमलेस्समकेशान्ते कमलेर्ष्याकरं मुखं ।

कमलेष्य करोषि त्व कमले[39a]वोन्मदिष्णुषु ॥२६॥

ཁྱེད་ ཀྱི་ མགོ་སྐྱ་སྤང་པ་འདྲ།

གཤོང་ནི་ བསྐྱར་ སྐྱབ་དོག་ཁྱེད།

དཔལ་གྱིས་ བཞིན་ཏུ་ རབ་གྱོམ་པ།

ཁྱེད་ ཀྱིས་ སྤྱ་ཞིག་ ཚི་མི་ཁྱེད། ॥ ३९

मुदा रमणमन्वीतमुदारमणिभूषणाः ।

मदभ्रमदृशः कर्तुमदभ्रजघनाः क्षमाः ॥३०॥

གྱུ་ཚེ་ རིན་ཚེན་ གྱེན་དང་ལྷན།

གྱུགས་པས་ མིག་ འཁོར་ རོ་རྒྱ་ན།

ཚུང་བ་ མིན་པས་ མཚོང་པོ་ ནི།

དགའ་བ་ལྷན་པ་ གྱུ་བར་བཅོད། ॥ ३०

उदितैरन्यपुष्टानामारुतैर्मै हतं मनः ।
उदितैरपि ते दूति मारुतैरपि दक्षिणैः ॥३१॥

मार्गमार्गैः कृतस्य गृह्यं वक्ष्यमाणं च ५८ ।
सुदं गृह्यं वक्ष्यं चत्तं ५८ १ ।
क्षेत्रं यैः सुमार्गं गृह्यं कृतं चत्तं ५८ ।
चत्तं यैः सुमार्गं चत्तं चत्तं ॥ ३१

सुराजितह्रियो यूना तनुमध्यासते स्त्रियः ।
तनुमध्या क्षरत्स्वेदसुराजितमुखेन्द्रवः ॥३२॥

क्षेत्रं चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं ।
चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं ।
चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं ।
क्षेत्रं चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं चत्तं ॥ ३२

इति व्यपेतयमकप्रभेदोप्येष दर्शितः ।
अव्यपेतव्यपेतात्मा विकल्पोप्यस्ति तद्यथा ॥३३॥

དེ་ལྟར་ བར་ཚོད་རྒྱང་ལྟན་གྱི།
 རབ་དུ་དབྱེ་བ་ འདི་ཡང་ བསྟན།
 བར་ཚོད་ མ་ཚོད་ བདག་ཉིད་གྱི།
 བས་ཉོག་ ཀྱང་ ཡོད་ འདི་ལྟ་སྟེ། ॥ ३३

སངས་ལོ་བུ་སྐྱེ་བ་ལས་ལྷན་པ་ལྟ་བུ་།
 སངས་ལོ་བུ་སྐྱེ་བ་ལས་ལྷན་པ་ལྟ་བུ་། ॥३४॥

ཀྱེ་ལོ་ཀྱེ་ འཕྲུང་ ཡལ་ག་ཅན།
 སྒྲ་ལ་ བལྟ་བར་ དེ་ མི་ཅུས།
 བ་ཀྱེ་ལར་ ཆགས་ བྱང་བ་ དང།
 བོགས་མོས་ བདུ་ཅན་ ཡང་ མིན། ॥ ३८

སངས་ལོ་བུ་སྐྱེ་བ་ལས་ལྷན་པ་ལྟ་བུ་།
 སངས་ལོ་བུ་སྐྱེ་བ་ལས་ལྷན་པ་ལྟ་བུ་། ॥३५॥

སྐྱིན་པ་ ཆེན་པོ་ལྟན་པའི་དུས།
 སྐྱིན་པ་ སྐྱིན་པ་ ཀྱེན་ མི་མཚོན།

གསང འཕྲོར་ དགའ་བ་ རྫོགས་བྱེད་པ།
 དུས་འདྲ་ སྤྱི་ཡིས་ བལྟ་བར་ལྷུས། ॥ ༣༡

याम यामत्रयाधीनायामया मरणं निशा ।
 यामयाम धि[39b]याऽस्वर्त्याया मया मथितैव सा ॥३६॥

ཐུན་གསུམ་ དབང་གྱུར་ རིང་བ་ཡི།
 མཚན་མོ་ ཡིས་ནི་ བདག་ཤི་ཅིག།
 གང་ལ་ བདག་ སང་ སྲོག་ གཟུང་ འགྲོ།
 དེ་ནི་ རྫོ་མེད་ བདག་གིས་ བཅོམ། ॥ ༣༦

इतिपादादियमकविकल्पस्थेदृशी गतिः ।
 एवमेव विकल्प्यानि यमकानीतराण्यपि ॥३७॥

ཅེས་ཀྱང་ དང་པོ་ རྒྱང་ལྷན་གྱི།
 ལྷུ་རྩོག་ ལྷུ་གས་ནི་ འདི་འདྲ་ ལྷེ།
 འདི་ལྷ་ མི་ན་ རྒྱང་ལྷན་གྱི།
 ལྷུ་རྩོག་ གཞན་པ་ ལྷུ་གས་ ཀྱང་ངོ་ ॥ ༣༧

न प्रपञ्चभयान्भेदाः कात्स्न्येनाख्यातुमीप्सिताः ।
दुष्कराभिमता एव वर्ण्यन्ते तत्र केचन ॥३८॥

श्लेष वसः अक्षिणस्य श्रुतः सप्तैकं ।
अथवा दमः वक्षेत् पदः शीतलेन दे ।
देवः सुदगः अक्षेत् अक्षेत् पदः ।
अथवा वैश्वानरः वक्षेत् पदः सु ॥ ३८

स्थिरायते यतेन्द्रियो न हीयते यतेर्भवान् ।
आमायतेयतेप्यभूत्सुखाय ते यते क्षयं ॥३९॥

वक्षेत् वक्षेत् दमः पदं दमः वक्षेत् पदः ।
श्रुतः श्लेषः वक्षेत् पदः शीतलेन ।
श्रुतः श्लेषः श्रुतः पदः अक्षिणस्य पदः ।
शीतलेन श्रुतः श्लेषः श्रुतः पदः ॥ ३९

सभासु राजन्नसुराहतमुर्षैर्महीसुराणां वसुराजितः स्तुताः ।

न भासुरा यान्ति सुरान्न तेगुणाः प्रजासु रागात्मसु राशिता गताः ॥४०॥

གྲུལ་པོ་འདུན་སར་ས་ཡི་ལྷ་རྣམས་ དག་གྱི་ཞལ །
 ཆང་གིས་མ་བཅོས་ནོར་གྱིས་ མཛེས་བས་རབ་བརྗོད་པའི །
 རྩོད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ རབ་གསལ་ཆགས་ བདག་སྐྱེ་དགུ་ལ །
 སང་པོ་ཉིད་གུར་ ལྷ་རྣམས་སུ་ བི་མི་འགྲོ་མིན ། ། ༧༠

तव प्रियासञ्चरित प्रमत्तया विभूषणं धार्यमिहांशुमत्तया ।
 रतोत्सवामोदविशेषमत्तया न मे फलं किञ्चन कान्तिमत्तया ॥४१॥

དམ་པའི་སྐྱོད་ལ་བག་མེད་རྩོད་ཀྱི་ དགའ་ས་ གང་ །
 དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དགའ་བས་ རྩད་པར་དུ་སྐྱོས་མ །
 རི་ཡིས་ འདིར་ནི་འོད་ལྷན་ གྱུན་རྣམས་ གཟུང་བར་འོས །
 བདག་ལ་ མཛེས་ལྷན་ཉིད་ཀྱི་ འབྲས་བུ་འགའ་ཡང་མེད ། ། ༧༡

भवाद्दशा नाथ न जानते न ते रस विरुद्धे खलु[40a]सन्नतेन ते ।
 य एव दीनाः शिरसा नतेन ते चरन्त्यलं दैन्यरसेन तेन ते ॥४२॥

མགོན་པོ་རྩོད་ལྷས་དུང་པའི་རོ་ནི་མི་མཁྱེན་དེ །
 དམན་བ་ཉིད་ དང་ མཚོག་ཉིད་ དག་ནི་ ཇིས་བར་འགལ །

གང་ཞིག་ དམན་པ་རྣམས་ ནི་ བྱིད་ལ་མགོས་ འདྲད་ཅིང་ །
 དེ་དག་ ཁོ་ན་དམན་པའི་རོ་ དེས་ མཚོག་ཏུ་ བྱུ་ །། ༧༢

लीलास्मितेन शुचिना मृदुनोदितेन व्यालोकितेन लघुना गुरुणा गतेन ।
 व्याजृम्भिते न जघने न च दर्शितेन सा हन्ति तेन गलितं मम जीवितेन ॥४३॥

རོལ་པའི་འཇུ་མ་ དགར་ དང་ ནི་ འཇུ་པོར་ ལྷ་བ་ དང་ །
 ལྷང་བྱའི་ལྷ་བ་ དང་ ནི་ ལྷི་པའི་འགོ་བ་ དང་ །
 ལྷན་ཏུ་གྲུལ་ དང་ རོ་ ལྷ་ན་དག་ ལྷོན་པ་ དེས་ །
 བལྷན་པ་ དེས་ ན་ བདག་ནི་ འཚོ་བས་ དམན་པར་བྱུར་ །། ༧༣

श्रीमानमानमरवर्त्मसमानमानमात्मानमानतजगत्प्रथमानमानं ।
 भूमानमानमत यः स्थितिमानमान नामानमानमतमप्रतिमानमानं ॥४४॥

དཔལ་ལྷན་ མི་པོར་ བརྟན་ལྷན་ གང་གིས་ བདག་ཉིད་ནི་ །
 འཚོ་མེད་ལས་དང་ མཉམ་པའི་ཚད་ལྷན་ རབ་དྲུད་པའི་ །
 འགོ་བ་རྒྱས་བྱེད་ མཚོད་ལྷན་ ཚད་མེད་ མིང་ཅན་ནི་ །
 འཇུའི་བྱེད་ ཚད་མེད་ མང་པོ་ བཀོད་ལ་ ལྷག་དག་མཚོད་ །། ༧༤

सारयन्तमुरसा रमयन्ती सारभूतमुरुसारधरा त ।
सारसानुकृतसारसकाञ्ची सा रसायनमसारमवैति ॥४५॥

सत्तुनं लुगसंते सुनंमोसं नमनं सुनंते ।
शुनंमोसं सुनंमोसं सत्तुनंमनं नमनं सुनंते ।
मल्लंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंते ।
नेसं नं सत्तुनंमोसं शुनंमोसं सुनंमोसं सुनंते ॥ ८४

नयानयालोचनयानयानया नयानयान्धान्विनयानयायते ।
न यानयासीर्जनयानयानया नयानयांस्तान् जनयानयाश्रितान् ॥४६॥

सत्तुनं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंते ।
सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंते ।
मल्लंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंते ।
सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंमोसं सुनंते ॥ ८५

[40b]रवेण भौमो ध्वजवर्त्तिवीरवेरवेजि संयत्यतुलास्त्रगौरवे ।
रवेरिवोग्रस्य पुपे हरेरवेरवेत तुल्यं रिपुमस्य भौरवे ॥४७॥

མཚོངས་མེད་ ལྷི་བའི་ མཚོན་ལྷན་ གཡུལ་དུས་སྐྱེས་ནི།
 རྒྱལ་མཚན་ལ་ གནས་ དབང་པོ་ བྱ་ཡི་ རྣམ་ཡིས་ རྩོམ།
 ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ བརྒྱན་བའི་ འཕྲོག་བྱེད་ འདི་མདུན་དུ།
 འཛིགས་ཅུང་ གཡུལ་ ལ་ དག་ནི་ལྷག་དང་ མཚོངས་བར་རིག། ༧༧

मयामयालभ्यकलामयामयामयातव्यविरामयामया ।
 मयामयार्त्तिं निशयाऽमयामयामयामयामूं करुणामयामया ॥४८॥

མཚན་མོ་ ཚད་མེད་ རྩན་ལྷན་ དབང་མེད་ ཚད་མེད་ཅིང་།
 མཐར་ ཉི་ བརྒྱུད་བྱ་ མིན་པ་ ཟད་ནད་ལ་ བརྟེན་པ།
 ཅ་ཡི་ རང་བཞིན་ ཉན་ཅན་ འབྲེལ་བའི་ ཉན་ཀྱིས་ གཟུང་།
 རྣལ་ལྷན་མ་ འདི་ ལྷིང་རྩེའི་རང་བཞིན་ འབྲེལ་མེད་ མཚོན་། ༧༨

मतांधुनानारमतामकामतामतापलब्धाग्रिमतानुलोमता ।
 मतावयत्युत्तमता विलोमतामताम्यतस्ते समता नवामता ॥४९॥

ལང་མེད་ རྩོད་ཀྱི་ རྣོ་ལ་ མཉམ་ ཉིད་ བརྒྱུག་པ་ ཉིད།
 མ་ཡིན་ ལྷ་མེད་ རྩེས་སུ་ མི་མཐུན་ འགྲོ་མ་ ཡིན།

उपोढरागाप्यबला मदेन सा मदेनसा मन्युरसेन योजिता ।
न योजितात्मानमनङ्गतापिता गतापि तापाय ममास नेयते ॥५२॥

ཨོས་བའི་ ཆགས་ བ་ ཉི་བར་གནས་ཀྱང་ བྱད་མེད་དེས། །
བདག་ཉིད་ མ་སྐྱུར་ བདག་གི་ མིག་བས་ ཁྲོ་བ་ཡི། །
རོ་དང་ སྐྱུར་དེ་ ལུས་མེད་ དག་གིས་ གཏུང་ བྱུར་ ཀྱང་། །
བདག་ མི་ འདི་སྟེད་ གཏུང་བཞི་སྐྱུར་དུ་ མ་བསྐྱུར་དོ། ॥ ༥༢

अर्थाभ्यासः समुद्रः स्यादस्य भेदास्त्रयो मताः ।
पादाभ्यासोप्यनेकात्मा व्यज्यते स निदर्शनैः ॥५३॥

ཕྱིད་རྒྱས་ ཡང་དག་སྐྱུར་བ་ ཡིན། །
འདི་ལ་ དབྱེ་བ་ གསུམ་དུ་ འདོད། །
ཀྱང་བ་ བརྒྱས་བ་ དང་ དུ་མ་ ཡི། །
བདག་ ཉིད་ དེ་དག་ དཔེས་གསལ་བུ། ॥ ༥༣

नास्थेयःसत्वया वज्यः परमायतमानया ।
नास्थेयः स त्वया वज्यः परमायतमानया ॥५४॥

श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ।
 श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ।
 श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ।
 श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ॥ ४८

नरा जिता माननया समेत्य न राजिता माननयासमेत्य ।
 विनाशिता वै भवतापनेन विनाशिता वैभवतापनेन ॥५५॥

श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ।
 श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ।
 श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ।
 श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ॥ ४९

कलापिनां चास्तयोपयान्ति वृन्दानि लापोढघनागमानां ।
 वृन्दानिलापोढघनागमानां कलापिना चास्तयोऽप[41b]यान्ति ॥५६॥

श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ।
 श्रुतेः सुः वदन् वद श्रुतेः श्रुतेः वद ।

ལྷུང་གི་ཚོགས་ ལྷུག་ བྲལ་བས་ ལྷུང་སྐྱོགས་ཀྱི།
 ཚོགས་ རྣམས་ ལྷུང་ བྲལ་བ་ ཉེད་ བྱུང་ །། ༡༦

न मन्दयाऽवर्जितमानसात्मया नमन्दयाऽवर्जितमानसात्मया ।
 उरस्युपास्तीण्णेपयोधरद्वय मया समालिङ्गघत जीवितेश्वरः ।।५७।।

འཚོ་བའི་དབང་ལྷུག་ འདྲད་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ ཁོ་མོ་ནི།
 'དམན་ཞིང་ ཁེངས་'པ་ དེས་པར་བསྐྱབས་པའི་དབང་བྱུང་མ།
 བརྗེ་བ་ ལྷུངས་པས་ བདག་ཉིད་ བྲང་གི་འོ་མ་འཛིན།
 བཞིས་པོ་ ཉེ་བར་གཏད་ རྣམས་ ཀྱན་ ཏུ་ མ་འབྱུང་དོ།། ༡༧

सभा सुराणामबला विभूषिता गुणैस्तवारोहि मृणालनिर्मलैः ।
 स भासुराणामबला विभूषिता विहारयन्निर्विश सम्पदः पुराम् ॥५८ ॥

ལྷུང་རྣམས་ འདྲན་ས་ ལྷུངས་མེད་ཁྱབ་བདག་གཞས་པ་ན།
 ཁྱོད་ཀྱི་ ཡོན་ཏན་ བད་ཅུ་ དྲི་མ་མེད་པས་ འཛོགས།
 དེ་ནི་ འོད་འབར་ ལྷོང་ བཟང་ རྣམས་ཀྱི་ ལྷུང་སྐྱོགས་ཚོགས།
 བརྗེ་བའི་ ལྷུང་མེད་རྣམས་ དང་ རྣམ་པར་ཅེ་ཞིང་སྐྱོད།། ༡༨

कलङ्कमुक्त तनुमध्यनामिका स्तनद्वयो च तदृते न हन्त्यतः ।
न याति भूतङ्गणने भवन्मुखे कलङ्कमुक्तं तनुमध्यनामिका ॥५६॥

शुभ्र'घन'श्ल'द' लुस श्ले'दु'द' वु'ग'श्रिस'स' ।
स्रि'द'ल'स' ग'ल'क'घ' सु'ल'ि'ग' स'घ'र'स' र'य'ि'श्र'ि' ।
द'दु'द'घ' लुस श्ल'क' श्ल'ि'क' ल'स'घ'ो'ल'घ' स्रि'द'ल'स'ो'ग'स' ।
घ'घ'द'घ' ल' क'ि' श्र'ि'द'स'द' श्र'ि'घ'द' द'घ'ो'स'य'i'क ॥ ५७

यशश्च ते दिक्षु रजश्च सैनिका वितन्वतेऽजोपम दशिता युधा ।
वितन्वतेजोपमदं शितायुधा द्विषां च कुर्वन्ति कुलन्तरस्विनः ॥६०॥

स्र'घ'द'ल'स'घ' ल' सु' स्रि'द'ग'्र'ि'द'स'घ'घ'द'घ'द'घ' घ'o'घ'gh'o's'घ' ।
स'r'k'o'k' k'o'k'gh'k'घ' द'घ'द'घ' d'gh'gh'o'घ'gh'o's'घ' s'o'gh'gh'gh'o's'gh'gh' ।
घ'gh'gh'gh'o's'घ' d'gh'gh'o'k' d'gh'gh'o's'घ' gh'gh'gh'o's'घ' gh'gh'gh'o's'घ'gh'gh'o's'gh'gh' ।
द'घ'gh'o's'gh'gh'o's'घ' gh'gh'gh'o's'घ' gh'gh'gh'o's'घ' gh'gh'gh'o's'घ'gh'gh'o's'घ'gh'gh'o's'घ' ॥ ७०

विभर्त्ति भूमेर्वलयं भुजेन [42a] ते भुजंगमोमा स्मरतो मदञ्चितं ।
शृणूक्तमेकं स्वयमेत्य भूधरं भुजंगमो मा स्म रतो मदञ्चित ॥६१॥

ཨྲན་ལྷན་ བདག་ལ་ ཐན་བའི་ཚོག་ གཅིག་ གསན་པར་མཛོད། །
 རྩོད་ཀྱི་ ལག་པ་ དཔལ་ དང་ ལྷན་ ཅིག་ ལག་འགྲོ་ཡིས། །
 ས་ཡི་དགྱིལ་ འཁོར་ རྣམ་ འཛོན་ དེ་སྤྱིར་ ས་གཞི་འཛོན། །
 རང་ལག་ རིག་ནས་ རྒྱགས་ བ་ རྒྱས་ བར་ ཡོངས་ མ་བྱེད། ॥ ༤༡

स्मरानलोमानविवर्धितो यः स निर्वृतिं ते किमपाकरोति ।
 समन्ततस्तामरसेक्षणे न समन्ततस्तामरसे क्षणेन ॥६२॥

འདོད་ བའི་ མེ་ གང་ ཁེངས་བས་ རབ་ བསྐྱབས་པ། །
 རྣམ་ ཅིག་ དང་མཉམ་ རྒྱས་ དེས་ བསྐྱའི་མིག། །
 རོ་མེད་ རྩོད་ཀྱི་ བདེ་བ་ དེ་དག་ མི། །
 རྒྱན་ནས་ ཉམས་པ་ ཉིད་ཏུ་ ཅིས་མི་བྱེད། ॥ ༤༢

प्रभावतो नामन वासवस्य प्रभावतो नाम नवासवस्य ।
 प्रभावतो नाम न वा सवस्य विच्छित्तिरासीत्त्वयि पिष्टपस्य ॥६३॥

མ་དུད་ རྩོད་མི་ འཛིག་རྟེན་ བདག་གྱུར་ ཚོ། །
 མཐུ་ཡོས་ མཐུ་ལྷན་ རོར་ཚན་ འདུད་བྱེད་པ། །

དེ་སྒྲིང་ གསར་པའི་ བདུང་ལྷན་ མཚོན་སྒྲིབ་ནི།
 དེས་པ་ཉིད་དུ་ ཚད་པར་ས་གྲུང་རོ།། ༤༢

परम्पराया बलवा रणानां धूलीस्थिलीव्योस्त्रि विधाय रुन्धन् ।
 परम्पराया बलवारणानां परम्परायाबलवारणानां ॥६४॥

དཔུང་གི་ མྲུང་པོ་ རྣམས་ནི་ གཞན་ དང་ གཞན།
 ལྷོབས་ལྷན་ ལྷ་སྒྲོགས་ རབ་དུ་ བརྒྱད་པ་ཡིས།
 བང་ལ་ རྒྱལ་ བསྐྱབས་ རྣམ་མཁའ་ འགོག་བྱེད་ཅིང་།
 གཡུལ་གྱི་སྒྲོབས་ བརྒྒྱག་ མཚོག་དུ་ གཞན་ལ་ བྱུག། ༤༣

न श्रद्धे वाचमलज्ज मिथ्या भवद्विधानामसमाहितानां ।
 भवद्विधानामसमाहितानां भवद्विधानामसमाहिताना ॥६५॥

ཁྱོད་ལྷ་ མཉམ་པར་ས་བཞག་ སྲིད་པར་ནི།
 རྣམ་གཉིས་ མི་མཉམ་ བན་པ་མེད་ རྣམས་ ཚོག།
 ལོག་པར་གྲུང་པ་ ལྷུང་བྱེད་ མི་མཉམ་པ།
 ལྷུང་ བགོད་ མཚུངས་ལ་ མི་དད་ རོ་ཚ་མེད།། ༤༤

सन्नाहितोमानमराजसे[42b]न सन्नाहितोमानम राजसे न ।
सन्नाहितो मानम राजसेन सन्ना हितोमानमराजसेन ॥ ६६ ॥

དག་ཡི་ མཛོས་ འཛོས་ས་ རྒྱལ་པོ་འི་སླེ་ཡིས་བདུད །
ཡམ་མས་ སན་པ་ དཔལ་ལྷོ་ མེད་མིན་སླེ །
མི་ འདུད་ ལོ་བལོས་ མཚོད་ ཐོབ་ རུལ་མེད་པ །
སྐྱེས་མཚོག་ རྗེ་པོ་དམ་པ་ མི་མཛོས་མིན ། ༤༦

सकृद्विस्त्रिंश्र योऽभ्यासः पादस्यैवं प्रदर्शितः ।
श्लोकद्वयन्तु युक्तार्थं श्लोकाभ्यासः स्मृतो यथा ॥ ६७ ॥

དེ་ལྟར་ ཀྱང་ པ་ ལན་གཅིག་དང་ །
གཉིས་དང་ གསུམ་ ཡང་ བཞུས་པ་ བརྟན །
ཚོགས་བཅད་ གཉིས་དང་ལན་ པའི་དོན །
ཚོགས་བཅད་ བཞུས་ པ་ ཡིན་ཏེ་ དཔེར ། ༤༧

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वीयमतुलाश्रिता ॥६८॥

ལྷམ་ཞིང་ སྐྱུས་ པའི་ ལག་པ་ཅན།
 སྐོགས་མིན་ རབ་ད་འཛེམས་བྱེད་པ།
 རྣམ་འཕྲིན་ བྱིད་ཀྱི་ བསྟེན་པ་ཡི།
 མི་མཚུངས་ ས་ འདི་ འཛིགས་པ་མེད། ॥ ༦༨

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
 स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वी यमतुलाश्रिता ॥६६॥

འཕྲིན་པ་ དག་ དང་ སྤལ་གྱུར་ ཅིང་།
 ལག་པ་ སྐོག་ཁང་ ཉེ་གྱུར་པ།
 རང་སྐོགས་ཀྱིས་ བདང་ དག་ཡིས་ནི།
 མི་མཉམ་ ས་ འདི་ མངོན་པར་བསྟེན། ॥ ༦༩

एकाकारचतुष्पादं यन्महायमकाह्वय ।
 तस्यापि दृश्यतेऽभ्यासः सा परा यमकक्रिया ॥७०॥

ཀང་བཞི་ རྣམ་པ་ གཅིག་པ་ བང་།
 ལྷང་ལྷན་ ཚེན་པོར་ བཛོད་པ་ ཡིན།

དེ་ལ་འང་ བརྒྱས་པ་ མཐོང་སྡེ དེ །
 རྒྱང་ལྡན་ བྱ་བ་ བཞུན་ ཡིན་ནོ །། ༥༠

समानयास मानया समानयासमानया ।
 समानया समानया समान था समानया ॥७१॥

མཉམ་མེད་ དབལ་ལྡན་ མཚུངས་མེད་མ །
 མེངས་ལྡན་ རལ་བ་ དག་དང་ནི །
 མེངས་པ་ མཉམ་ལྡན་ ཚུལ་མེད་དག །
 དོར་བའི་ཚད་ འདིས་ འགྲོགས་སུ་རྒྱག །། ༥༡

घराघराकारघरा घराभुजां भुजा मही पा[43a]तुमहीनविक्रमाः ।
 क्रमात्सहन्ते सहसा हतारयो रयोद्धुरा मानघुरावलम्बिनः ॥७२॥

འཛིན་མ་ འཛིན་པའི་རྣམ་འཛིན་ འཛིན་མ་སྡོད་རྣམས་ཀྱི །
 ལག་པ་རྣམ་བཞུན་ མི་དམན་ འཕྲལ་ལ་ དག་འཛིན་མས་པ །
 ལྷུང་བ་དང་ལྡན་ མཚོད་པའི་ བྱ་བ་ བསྡེན་པ་ ཡིས །
 ས་བཞུན་ དག་ནི་རིམ་པས་ བསྐྱར་བར་ བཟོད་ པ་ཡིན །། ༥༢

आवृत्तिः प्रतिलोम्येन पादार्धश्लोकगोचरा ।
यमक प्रतिलोमत्वात् प्रतिलोममिति स्मृतं ॥७३॥

ग० घु० कौ० स० व० उ० सु० पु० अ० उ० ।
लु० म० अ० स० व० लु० म० अ० व० ३ ।
लु० म० अ० लु० म० अ० स० व० लु० म० अ० ३ ।
लु० म० अ० स० व० लु० म० अ० लु० म० अ० ३ ॥ ७३

या मताश्च कृतायासा सायाता कृशता मया ।
रमणारकता तेऽस्तु स्तुतेताकरणामर ॥७४॥

म० अ० अ० व० वृ० सु० अ० ३ ।
३ ३ ३ व० म० मी० अ० अ० अ० अ० ३ ।
अ० अ० अ० अ० अ० अ० अ० अ० अ० ३ ।
अ० अ० अ० अ० अ० अ० अ० अ० अ० ३ ॥ ७४

नादिनोऽमंदनाधी स्वा न मे काचन कामिता ।
तामिका न च कामेन स्वाधीनादमनोदिना ॥७५॥

ལྷ་ད་ལྷ་ན་ བདག་ རང་གི་ ལྷོ།
 ལྷོས་ མིན་ འདོད་ བ་ འགའ་ ཡང་ མེད།
 དུལ་ བ་ འཛེམས་ བའི་ འདོད་ བ་ ཡིས།
 རང་དབང་ གདུང་ བ་ དག་ ཀྱང་ མེད། ॥ ༧༥ ॥

यानमानय माराविकशो नानजनासना ।
 यामुदारशताधीनामायामयमनादि सा ॥७६॥

ཡིད་ འགྲོ་ བདུད་ ལྷོང་ ལྷ་ བ་ མི་ དམན།
 བང་ ལྷིག་ དབང་ གུར་ ལྷོ་ བོ་ འཛེམས།
 བང་ ལ་ བདག་ མོང་ ལྷོ་ བོ་ བསྐྱེད།
 དབང་ གུར་ དེ་ ལ་ ལྷོན་ ལྷིས་ ལྷས། ॥ ༧༦ ॥

सा दिनामयमायामा नाधीता शरदामुया ।
 नासनाजनना शोकविरामायनमानया ॥७७॥

ལྷོན་ འདི་ ཡིས་ ལྷི་ བ་ ལྷིར་ གུར་ ཅིང་།
 ལྷོན་ མི་ ལྷིས་ མ་ དེ་ ཡིས་ ལྷི།

ཉིན་མོའི་ བང་དག་ མ་ཐོབ་ མིན།

མུང་ན་ འབྲེལ་ སླད་ ཁེངས་མ་ བྱེད། ॥ ७७

वर्णानामेकरूपत्वं यद्येकान्तरमर्घ[43b]योः ।

गोमूत्रिकेति तत्प्राहुर्दुष्कर तद्विदो यथा ॥७८॥

གལ་ཏེ་ བྱེད་ ཀྱི་ཡི་ ལོ་ བླ་སེ།

གཅིག་ ལོས་ བར་ཚོད་ གཞུགས་གཅིག་ ཉིད།

དེ་ནི་ བྱ་དཀའ་ དེ་ཉིད་ སྲིག།

བ་ལང་ གཅིན་ ཞེས་ སློ་ མེ་ དཔེར། ॥ ७८

मदनो मदिराक्षीणामपाङ्गाखोजये दय ।

मदेनो यदि तत् क्षीणमनङ्गायाञ्जलिं दधे ॥७९॥

ཆང་འབྲེའི་ མིག་ལྡན་ ལུང་མིག་གི།

མཚོན་ ཀྱིས་ འདོད་པ་ འདི་གྲུལ་ ཏེ།

གལ་ཏེ་ བདག་གུང་ སྲིག་ཟད་ ན།

འདོད་པ་ ལ་ནི་ བྲལ་མོ་ སློར། ॥ ७९

आहुरर्धभ्रमं नाम श्लोकार्धभ्रमण यदि ।
तदिष्टं सर्वतोभद्रं भ्रमण यदि सर्वतः ॥८०॥

वा॒य ११ क्खे॒ण॒स॒व॒उ॒य॒ सु॒दे॒न॒ अ॒सि॒र॒क॒ ।
सु॒दे॒न॒ अ॒सि॒र॒व॒ ले॒ख॒य॒ व॒खे॒द॒ ।
वा॒य॒ ११॒ गु॒ण॒ ११॒ अ॒सि॒र॒ व॒ क॒ ।
गु॒ण॒ ११॒ व॒खे॒द॒ व॒ ले॒ख॒य॒ अ॒सि॒र॒ ॥ ८०

मनोभव तवानीकं नोदया थ न मानिनी ।
भयादमेयामामावावयमेनोमया न ते ॥८१॥

म॒न॒ ११॒ व॒ त॒व॒ आ॒नी॒कं॒ नो॒द॒या॒ थ॒ न॒ मा॒नि॒नी॒ ।
भ॒या॒द॒मे॒या॒मा॒मा॒वा॒व॒य॒मे॒नो॒म॒या॒ न॒ ते॒ ॥८१॥
म॒न॒ ११॒ व॒ त॒व॒ आ॒नी॒कं॒ नो॒द॒या॒ थ॒ न॒ मा॒नि॒नी॒ ।
भ॒या॒द॒मे॒या॒मा॒मा॒वा॒व॒य॒मे॒नो॒म॒या॒ न॒ ते॒ ॥८१॥

सामाथामामायामासामारानायायानारामा ।
यानावारारवानायामायारामामारयामा ॥८२॥

ཅད་རིང་མིན་པའི་དགའ་མ་གང་།
 བདུད་བརྒྱུད་མ་ལྟུང་བཤོད་བརྗོད་མ།
 ལྷ་མེད་ལྷོ་བས་ལྷན་སྐྱེ་གནས་ཏེ།
 ལྷ་དང་ལྷན་ཅིག་འཛི་སྐད་དུ་འོ།། ༤༩

यः स्वरस्थानवर्णानां नियमो दुष्करेष्वसौ ।
 इष्टञ्चतुःप्रभृत्येष दश्यते सुकरः परः ॥८३॥

དབྱངས་དང་གནས་དང་ཡི་གེ་རྣམས།
 དེས་པ་གང་འདི་བྱ་དགའ་ལ།
 བཞི་ལ་སོགས་པ་རབ་བསྟན་འདི།
 གཞན་ནི་བྱ་སྟེ་དག་ཏུ་འདོད།། ༤༩

आम्नायानामाहान्त्या वाग्गीतीरोतीभीतीः प्रीतीः ।
 भोगो रोगो मोदो मोहो ध्येये धेच्छे देशे क्षेमे ॥८४॥

རིག་བྱེད་རྣམས་མཐར་སྐྱས་པའི་ཚོག།
 ལྷ་དང་ཡམས་ནད་འཛིགས་དགའ་ཡིས།

ལོངས་སྡོད་ བད་དང་ དགའ་དང་ མྲོངས་ །
 དག་བའི་ ཡུལ་དུ་ སེམས་ འདོད་ལྡང་ ॥ ༤༥

श्लितिविजितिस्थितिविहिति [44a]वृत्तरतयः परगतयः ।
 उरु रुधुर्गुरु दुधुवुः खमरिकुल युधि कुरवः ॥८५॥

ས་ལས་ རྣམ་གྲུལ་ བདེན་པ་ ལྷུབ་བྱེད་བའི་ །
 བདུལ་ རྒྱགས་ ལ་དགའ་ མཚོག་ རྟོགས་ ཀྱུ་རུ་བས་ །
 གཡུལ་དུ་ རང་གི་ དག་ཡི་ རིགས་རྣམས་ནི་ །
 ཆེ་བར་ བཀག་ཅིང་ ལྷི་བར་ འདར་བར་བྱས་ ॥ ༤༥

श्रीदीप्ती हीकीर्ती धीनीती गीःप्रीतीः ।
 पथेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे ॥८६॥

དབལ་གཟི་ རོ་ཚ་ གྲགས་ དང་ །
 ལྷོ་ལྷགས་ ཚོག་ དང་ དགའ་དག་ །
 ལྷོད་ལ་ འཕེལ་བ་ གཉིས་གང་ །
 འདི་གཉིས་ ལྷ་དབང་ལ་ མེད་ ॥ ༤༦

सामायामामाया मासा मारानायानारामा ।
यानावारारावानाया माया रामा मारयामा ॥८७॥

बद र्दं खिक्वदिं द्वादं खंमदं ।
वदुद क्रुदं खंभुदं वदुदं वदुदं ।
भुदंभेदं भुदंभेदं भुदंभेदं ।
भुदंभेदं भुदंभेदं भुदंभेदं ॥ ८७ ॥

नयनानन्दजनने नक्षत्रगणशालिनि ।
अघने गगने दृष्टिरङ्गने दीयतां सकृत् ॥८८॥

दद्वेदंभेदं गुरुदंभेदं भुदंभेदं ।
भुदंभेदं भुदंभेदं भुदंभेदं ।
भुदंभेदं भुदंभेदं भुदंभेदं ।
भुदंभेदं भुदंभेदं भुदंभेदं ॥ ८८ ॥

अलिनीलालकलतं कन्न हन्ति घनस्तनि ।
आननं नलिनच्छायनयनं शशिकान्ति ते ॥८९॥

ལུ་ལྷག་ བྱོད་ བཏོང་ ལན་བྱ་ ཡི།
 འཕྱི་ལོང་ ལུང་བ་ ལྷར་ ལྷོ་ལྷིང་།
 འདྲེན་བྱེད་ བདྲའི་བཟུགས་ བརྟན་ ཅན།
 ལྷ་ལྷར་ མཛོས་ བས་ ལུ་ མ་ བཅོམ། ॥ ༤༦

འཕྲིན་ལྷ་ལྷོ་ལྷིང་ལྷོ་ལྷིང་།
 འཕྲིན་ལྷོ་ལྷིང་ལྷོ་ལྷིང་། ॥ ༤༧

ལྷ་ལྷོ་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་།
 ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་།
 ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་།
 ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་། ॥ ༤༨

ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་།
 ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་། ॥ ༤༩

ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་།
 ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་ ལྷོ་ལྷིང་། ॥ ༥༠

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ ७१

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।
 किङ्किकाकाकुकः काको मामा मामम मामम ॥६२॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ ७२

देवानां नन्दनो देवो नोदनो वेदनिन्दिनः ।
 दिव दुदाव नादेन दाने दानवनन्दिनः ॥६३॥

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ।
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ ७३

सूरिः सुरसुरासारिसारः सारससारसाः ।
ससार सरसीः सीरी ससूरुः स सुरारसी ॥६४॥

बाभस व ह्र दन् ह्रंभैव व ।
दम्रो ह्रवसंभ्रव पदीं प्रीवंपेमासंउव ।
ऊर वी रंभ्रवं मप्येव दहैव रं ।
ववदं ग्री ह्रंभ्रवं मकेरुं रोर ॥ ७८

नून चुन्नानि नानेन नाननेनाननानि नः ।
नानेना ननु नानूनेनैनानानानिनो निनीः ॥६५॥

ददंयंशं वदमा उमां क्कमसा ग्रीं वलैव ।
वलैव ग्रीसा देसा वरं मं वउमं भैव ।
वदमा श्रैवां श्री दमव ददं दन् श्रैर ।
ह्रैवं श्रैसा भैव ह्रीमां उव देसा ॥ ७९

इति दुष्करमार्गोपि किञ्चिदादर्शितः क्रमः ।
प्रहेलिकाप्रकाराणां पुनरुद्दिश्यते गतिः ॥६६॥

དེ་ལྟར་ བྱ་ དཀའི་ལས་ལ་ ཡང་ །
 རིས་ བ་ ཟུང་ཟད་ ཀུན་ཏུ་ བསྟན་ །
 བའ་ ཚོག་ དག་གི་ རྣམ་པ་ ཡི་ །
 ལུགས་ ཀྱང་ རབ་ཏུ་ བསྟན་ བར་ བྱུ ། ༢༩

क्रीडागोष्ठीविनोदेषु तज्जैराकीर्णमन्त्रणे ।
 परव्यामोहने चापि सोपयोगा. प्रहेलिकाः ॥६७॥

ཚེད་ མོའི་ འདུན་ སར་ བཞད་ བའུ་ དང་ །
 དེ་ཤེས་ ཚོགས་ ལུ་ བསང་ ལྷ་ དང་ །
 བ་རོལ་ ཀུན་ཏུ་ མོངས་ བྱེད་ ལ་ །
 བའ་ཚོག་དག་ རི་ ཉེར་ བའི་ལྷན་ ། ༣༠

आहुः समागतां नाम गृहार्थां पदसन्धिना ।
 वञ्चि[45a]ताऽन्यत्र रूढेन यत्र शब्देन वञ्चना ॥६८॥

ཚོག་ མཚམས་ ལྷར་བས་ དོན་སྣམ་ བ་ །
 ཀུན་ཏུ་ ཚོགས་པ་ ཞེས་ བར་ བཞེད་ །

ग०११ ल० ग०ग०स०प०द०रि०क्ष० न०ग०गो०स० ।
 ग०द०तु० व०क्ष०व० क्षु०प्रि०द० श्रि०द० ॥ ७५

व्युत्क्रान्तातिव्यवहितप्रयोगान्मोहकारिणी ।
 सा स्यात्प्रमुषिता यस्यां दुर्वोधार्था पदावली ॥६६॥

क्षु०द० व० श्रि०द०तु० र०प्रु०ग०स० व० यी०स० ।
 क्षि०द०स०प्रि०द० री०स० व० ग०य० व० क्षु० ।
 ग०द० ल० री०क्ष० न०ग०स० न०ग०द०व० यी० ।
 क्षि०ग० क्षि०द० री०क्षे० व० व० व०क्षि०स० यी०क्ष० ॥ ७७

समानरूपा गौणार्थारोपितैर्ग्रथिता पदैः ।
 परुषा लक्षणास्तित्वमात्रव्युत्पादितश्रुतिः ॥१००॥

व०न०ग०स०प०द०रि०क्षे० ग०गो०द० क्षि०ग०न०ग०गो०स० ।
 व०क्षि०व०स०व० न०ग०रि० क्षि०प्रु०क्ष० व०द०रि०ग०क्षु०ग०स० ।
 क्षि०क्षे०क्षि०द० यी०क्षे०क्षि०स० री०क्षे०क्षि०ग० न०द० ।
 क्षि०क्षे०व०द०रि० क्षि०ग० री० क्षु०प्रु०क्षे०क्षि० ॥ १००

संख्याता नाम संख्यान यत्र व्यामोहकारणं ।
अन्यथा भासते यत्र वाक्यार्थः सा प्रकल्पिता ॥१०१॥

मादं तु मादस्य गुणः गुणः क्लेशः च ।
शुद्धः च मादस्य श्रेयः उक्तः तु श्रेयः ।
मादं तु मादस्य क्लेशः च मादस्य ।
शुद्धः च मादस्य क्लेशः च मादस्य ॥ १०१

सा नामान्तरिता यस्यां नान्नि नानार्थकल्पना ।
निवृता निवृतान्यार्था तुल्यधर्मस्पृशा गिरा । १०२॥

मादं तु मादस्य क्लेशः च मादस्य ।
शुद्धः च मादस्य क्लेशः च मादस्य ।
क्लेशः च मादस्य क्लेशः च मादस्य ।
शुद्धः च मादस्य क्लेशः च मादस्य ॥ १०२

समानशब्दोपन्यस्तशब्दपर्यायसाधिता ।
समूहा नाम या साक्षान्निर्दिष्टार्थापि मूढये ॥१०३॥

* क्वसंमृत्सं क्लृप्तिं चर्गात्तं च यत्सि ।
 वक्त्रवत्सं च दत्तं किं वक्त्रवत्सं च ।
 मत्तं ज्ञेयं वत्तं वत्तं वत्तं वत्तं च ।
 क्लृप्तिं वत्तं च किं क्लृप्तिं ज्ञेयं च ॥ १०३

योगमालात्मकनाम यस्याः सा परिहारिकी ।
 एकच्छन्नाश्रित व्यज्य यस्यामाश्रयगोपनं ॥१०४॥

मत्तं च क्लृप्तिं वत्तं च दत्तं किं वत्तं च ।
 दत्तं किं वत्तं वत्तं वत्तं वत्तं च ।
 मत्तं च क्लृप्तिं वत्तं वत्तं च ।
 वत्तं च वत्तं च वत्तं च वत्तं च ॥ १०८

[45b]सा भवेदुभयच्छन्ना यस्यामुभयगोपनं ।
 संकीर्णा नाम सा यस्या नानालक्षणसंकरः ॥१०५॥

मत्तं च क्लृप्तिं वत्तं वत्तं च ।
 दत्तं किं वत्तं वत्तं वत्तं च ।

གང་ལ་ མཚན་ཉིད་ ལྷ་ཚོགས་ འདྲིས་ །
 དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་ འདྲིས་ ཞེས་བུ་ ॥ ༡༠༧

एता. षोडश निर्दिष्टाः पूर्वाचार्यैः प्रहेलिकाः ।
 दुष्टप्रहेलिकाश्चान्यास्तैरधीताश्चतुर्दश ॥१०६॥

འདི་དག་ གང་ཚོག་ བཅུ་རྒྱུ་ག་ཉི་ །
 ལྷོན་གྱི་ ལྷོབ་དཔོན་རྣམས་ ཀྲིས་ བསྟན་ །
 གང་ཚོག་ ངན་པ་ གཞན་དག་ ཀྲང་ །
 བཅུ་བཞི་ དེ་དག་རྣམས་ ཀྲིས་ བརྗོད་ ॥ ༡༠༦

दोषानपरिसख्येयान् मन्यमाना वय पुनः ।
 साध्वीरेवामिधास्यामस्ता दुष्टा यास्त्वलक्षणा ॥१०७॥

ངན་པ་ མཚན་ཉིད་མེད་ གང་དེ་ །
 ལྷོན་གྱིས་ ཡོངས་བབྱང་བུ་མིན་པར་ །
 རིག་ནས་ ལྷོར་ ཡང་ བདག་ཅག་གིས་ །
 ལེགས་པ་ ཁོ་ན་ བརྗོད་པར་བུ་ ॥ ༡༠༧

न मयागोरसाभिन्न चेतः कस्मात्प्रकुप्यसि ।
अस्थानतुं दितैरेभिरलमालोहितेक्षणे ॥१०८॥

नदम गीसं व'लदं रं'सिभस ग्रीस ।
येस व भेद'लं उ'स्यनं सि ।
गकस भिदं व'नं र'दं यैसं कि ।
उ'स्येनं ग'न'दुं भिमा दसद'स ॥ १०८

कुञ्जामासेवमानस्य यथा ते वर्धते रति ।
नैव निर्विशतो नारीममरस्त्रीविडम्बिनीः ॥१०९॥

गुवु वस्येन'व' सि'दं ग्री' कि ।
दम'द व' इ'द'नं र'स्येन'गु'द व ।
र'कि भेदं वु'भे'नं उ'द'द'स ।
सि'भं सु'द'न'स' दे'द'न'सि'द ॥ १०९

दण्डे चुम्बति पद्मिन्या हंसः कर्कशकण्ठके ।
मुखं वल्गुरवं कुर्वन्पण्डेनाङ्गानि घट्टयन् ॥११०॥

ལྷ་པར་ ལོ་བྱེད་ བད་ཅན་ ལྷི།
 ངང་པ་ ཚོང་མ་ ཅུབ་པོ་ཅན།
 བཞིན་ལ་ སྐྱ་ལྷན་ སྐྱོགས་བྱེད་ཅིང་།
 ལུས་ནི་ འདར་བ་བྱེད་ཅིང་ མཆུས། ॥ ११०

ख्यातयः कनि काले ते स्फातयः स्फातवल्गवः ।
 चन्द्रे साक्षाद्भवन्त्य[46a]त्र तायवो मम धारिणः ॥१११॥

ལུ་མོ་ མཚོས་ མ་ བྱིད་ ཀང་པར།
 ཀང་བའུབ་ ལྷས་པ་ སྐྱ་ལྷན་ སྐྱོགས།
 མངོན་ལུས་ལྷིད་དུ་གྱུར་བ་ འདྲིང་།
 བདག་གི་ སྐྱོག་ནི་ བདྲན་ མ་ ཡིན། ॥ १११

अत्रोद्याने मया दृष्टा वल्लरी पञ्चपल्लवा ।-
 पल्लवे पल्लवे चार्द्रा यस्याः कुसुममञ्जरी ॥११२॥

བའ་གྱི་ ཡལ་འདབ་ ཡལ་འདབ་ལ།
 མེ་དོག་ ལྷུམ་ བའི་ དོག་པ་ཅན།

འཇམ་ལེང་ཡལ་འདབ་ ལུ་བ་ བློ།
 རྒྱུད་མེས་ཚལ་ འདིར་ བདག་གིས་ མཐོང་ ॥ ११३

सुराः सुरालये स्वैरं भ्रमन्ति दशनाच्चिर्षा ।
 मज्जन्त इव मत्तास्ते सौरै सरसि सप्रति ॥११३॥

ཚང་མ་ རྣམས་ བློ་ ཚང་ཁང་དུ།
 སྤོ་ཡི་འོད་ ཀྱིས་ ཅེ་ དགར་ འཁྲུམས།
 ད་ནི་ རྒྱུས་པར་ བྱས་ དེ་ རྣམས།
 ཚང་གི་རྫོང་ ལྱུར་ ལྱིང་བ་ བཞིན། ॥ ११३

नासिक्यमध्या परितश्चतुर्वर्णाविभूषिता ।
 अस्ति काचित्पुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥११४॥

ལྷ་ ལྷན་ དལུས་གནས་ གསལ་བྱེད་ བཞིས།
 ཡོངས་ ལྷ་རྣམ་པར་ བརྒྱན་བ་ཡི།
 ལྷོང་ ལྱུར་ འགའ་ ཡོད་ འགའ་ཞིག་ན།
 མི་ བདག་ ཡིག་ བརྒྱད་མིང་ཅན་ ཡོད། ॥ ११ॣ

गिरा स्वलन्त्या नम्रेण शिरसा दीनया दृशा ।
तिष्ठन्तमपि सोत्कम्प्य वृद्धे मां नानुकम्पसे ॥११५॥

कमःकमस रव ५ अम्रव'व' ५८ ।
ममो'वो ५५ उँद मीम ५५५ व ।
अनुमा' ५८ अ५५'हृव' व५मा'व'के ।
मक'मो हृस'सु' मी वठे'अम ॥ ११५

आदौ राजेत्यधीराक्षि पार्थिवः कोपि गीयते ।
सनातनश्च नैवासौ राजा नैव सनातनः ॥११६॥

मीम'मी व५क'म' स हृव' अम्रव ।
५८'वो'र' ५५ ह' वृस'व' हृम'स ।
स'रू ५'व' ५८' सु' अ५ ।
सुम'वो म'अ'व' सुव'अहृम' मीव ॥ ११६

हृतद्रव्यं जनं त्यक्त्वा धनवन्तं व्रजन्ति काः ।

[46b]नानामङ्गिशताकृष्टलोका वैश्या न दुर्धराः ॥११७॥

ॐस म्वा' खी वै वन्द'सुस'वस ।
 वेर'भूव'कसस ग्नि' वसो'व' वान ।
 ॐ के'वस'गु'व'वसुस २३'व ३'व २'वस ।
 व'व'व २'व'व ॐ'व २'व'व २'व ३'व ॥ ११७

जितप्रकृष्टकेशाख्यो यस्तवामूमिसाह्वय' ।
 स मामद्य प्रभूतोत्कं करोति कलभाषिणि ॥११८॥

सु'व'गु' स'खी' खी' २'सु'व'वान ।
 २'व'सु'व' ॐ' खी' ३'व'व'व'व'व' ।
 २'व'व' ३'व' व'व'व' व'व'व' ३'व' ।
 सु'व'व'व' ३'व' ॐ'व' ॐ'व'व'व' । ११८

शयनीये परावृत्त्य शयितौ कामिनौ रुषा ।
 तथैव शयितौ रागात् स्वैरं मुखमन्नुम्बताम् ॥११९॥

२'व'व'व' ३'व' ३'व' ३'व' ।
 सु'व'व' ३'व' ३'व' ३'व' ३'व' ।

ཆགས་པས་ དེ་བཞིན་ཉིད་ ཉལ་དེ །
 དལ་བྱ་ཡིས་ནི་ ཁ་དག་སྒྲོར་ ॥ ११७

विजितान्नभवद्वेषिगुरुपादहतो जन ।
 हिमापहामित्रधरैर्व्याप्तं व्योमाभिनन्दति ॥१२०॥

བྱ་ཀྱལ་ ཟས་སྦྱིས་ དག་ཡི་ནི །
 ལྷ་མའི་འོད་ཀྱིས་ བཅོམ་སྦྱོལ་ །
 ཁ་འཛོམས་ ལོགས་མིན་ འཛོན་པ་ཡིས །
 ལྱབ་པའི་མཁའ་ལ་ མངོན་པར་དགའ་ ॥ १२०

न स्पृशत्यायुध जातु न स्त्रीणां स्तनमण्डल ।
 अमनुष्यस्य कस्यापि हस्तोयं न किलाफल ॥१२१॥

ནམ་ཡང་ མཚོན་ དང་ བྱད་མེད་ཀྱི །
 ལྷ་མའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ མ་རེག །
 མི་མ་ཡིན་པ་ འགའ་ཞིག་གི །
 ལག་ནི་ འབྲས་མེད་ མིན་ཅོ་ ལོ། १२१

केन कः सह सम्भूय सर्वकार्येषु सन्निधिं ।
लब्ध्वा भोजनकाले तु यदि दृष्टो निरस्यते ॥१२२॥

सु'क्षिण' वान' दन' अर्चो'गण' व' यी'स ।
सु'व' व'स'स' उ'न' छे'व'र'के ।
वै'स' उ'न' व'स'गु' द'स'द'स'दु ।
वा'स' न' व'स'र'क' अ'र्च'न' व'र'सु'न ॥१२२॥

सहया सगजा सेना समटेयन्न चेज्जिता ।
अमात्रिको[47a]यं मूढः स्यादक्षरक्षश्च नः सुतः ॥१२३॥

स'य' वा'र' सु'त'उ'क ।
सु' अ'र' वा'स'न' व'स'सु'व'क ।
सु'र'ग'सु'न' दे'न'गु'सु ।
अ'र'के' यी'सो' यी'स' गु'न' सु'न ॥१२३॥

सा नामान्तरितामिश्रा वञ्चितारूपयोगिनी ।
एवमेवेतरासामप्युन्नेयः संकरक्रमः ॥१२४॥

རེ་ནི་མིང་དུ་ འདུས་པ་ བསྐྱེས།
 བསྐྱེས་པ་ཡི་ནི་ བརྒྱལ་ས་དང་ལྷན།
 རི་བཞིན་ཉིད་དུ་ བཞུག་ གྱི་ ཡང།
 འདྲིས་པའི་ རིས་པ་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ १२८

अपार्थं व्यर्थमेकार्थं ससंशयमपक्रमं ।
 शब्दहीन यतिभ्रष्टं भिन्नवृत्तं विसन्धिकं ॥१२४॥

རོན་ཉམས་ རོན་འགལ་ རོན་བཅུག་པ།
 རྩོམ་ཅན་ དང་ རིས་པ་ཉམས།
 ལྷན་དམན་ འལ་བསོ་ ཉམས་པ་ དང་།
 ལྷོད་ལྷོད་ཉམས་ དང་ མཚམས་ལྷོད་བྲལ། ॥ १२५

देशकालकलालोकन्यायागमविरोधि च ।
 इति दोषा दशैवैते वर्ज्याः काव्येषु स्मरिभिः ॥१२६॥

ཡུལ་དུས་སྐུ་ཅལ་ འཇིག་རྟེན་ དང་།
 ལྷང་རིགས་དག་ དང་ འགལ་བ་སྟེ།

श्लो० वतु० दे० द० श्लो० द० द० ।

श्लो० द० श्लो० द० द० ॥ २५७ ॥

प्रतिष्ठाहेतुद्वयान्तहानिर्दोषो न चेत्यसौ ।

विचारः कर्कशः प्रायस्तेन लीढेन किं फलं ॥१२७॥

द० व० व० द० द० द० द० ।

द० व० द० द० द० द० द० ।

द० व० द० द० द० द० द० ।

द० व० द० द० द० द० द० ॥ २५८ ॥

समुदायार्थशून्यं यत्तदपार्थमितीष्यते ।

तन्मत्तोन्मत्तबालानामुक्तेरन्यत्र दुष्यति ॥१२८॥

द० व० द० द० द० द० द० ।

द० व० द० द० द० द० द० ।

द० व० द० द० द० द० द० ।

द० व० द० द० द० द० द० ॥ २५९ ॥

समुद्रः पीयते सोयमहमद्य जरातुरः ।

अमी गर्जति जी[47b]मृता हरैरैरावतः प्रियः ॥१२६॥

२२६ ॥ सु०अ० ॥ २३८ ॥ सु० ॥

२२७ ॥ ३० ॥ सु०अ० ॥ २३९ ॥ सु० ॥

२२८ ॥ ३० ॥ सु०अ० ॥ २४० ॥ सु० ॥

२२९ ॥ सु०अ० ॥ २४१ ॥ सु० ॥ १३० ॥

इदमस्वस्थचित्तानामभिधानमनिन्दितं ।

इतरत्र कवि को वा प्रयुञ्जीतैवमादिक ॥१३०॥

२३० ॥ सु०अ० ॥ २४२ ॥ सु० ॥

२३१ ॥ सु०अ० ॥ २४३ ॥ सु० ॥

२३२ ॥ सु०अ० ॥ २४४ ॥ सु० ॥

२३३ ॥ सु०अ० ॥ २४५ ॥ सु० ॥ १३१ ॥

एकवाक्ये प्रबन्धे वा पूर्वापरपराहत ।

विरुद्धार्थतया व्यर्थमिति दोषेषु पठ्यते ॥१३१॥

རག་གཅིག་གས་ཀི་གྲུན་ལ་ཡང་།
 ལྷ་མ་ལྷི་མ་གཞན་འཛོམས་པ།
 འགལ་བའི་དོན་ཅན་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོན།
 དོན་འགལ་ཞེས་པར་རབ་དུ་བརྗོད། ॥ १३१

जहि शत्रुकुल कृत्स्नं जय विश्वंभरामिमां ।
 न च ते कोपि विद्वेष्टा सर्वभूतानुकम्पिनः ॥१३२॥

དགྲ་རིགས་མཐའ་དག་འཛོམས་པ་དང་།
 ལྷ་ཚོགས་ཁྲར་འདི་གྲུལ་གྲུར་ཅིག་།
 འགྲུང་བོ་ཀུན་ལ་བརྗོད་ཅན།
 རྫོད་ལ་དག་ཀི་སྲུ་ཡང་མེད། ॥ १३२

अस्ति काचिद्वस्था सा साभिषंगस्य चेतसः ।
 यस्या भवेदभिमता विरुद्धार्थापि भारती ॥१३३॥

མངོན་པར་ཆགས་ལྡན་སེམས་ལ་ནི།
 ལྷགས་དེ་འགའ་ཞིག་ཡོད་པས་ན།

माद ल् अमात्सर्त्तं र्त्तं च्छं श्रु ।

होमा ग्गुत्तं सत्तं च्छं च्छं च्छं च्छं ॥ १३३

परदारामिलाषो मे कथमार्यस्य युज्यते ।

पिबामि तरलन्तस्याः कदा नु दशनच्छदं ॥१३४॥

मात्तं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं ।

अमात्सर्त्तं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं ।

दे च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं ।

च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं ॥ १३८

अविशेषेण पूर्वोक्तं यदि भूयोपि कीर्त्यते ।

अर्थतः शब्दतो वापि तदेकार्थं मतं यथा ॥१३५॥

र्त्तं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं ।

च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं ।

मात्तं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं ।

दे च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं च्छं ॥ १३५

उत्का[48a]मुन्मनयन्त्येते बालां तदलकत्वियः ।
अम्भोधरास्तडित्वन्तो गम्भीराः स्तनयिल्लवः ॥१३६॥

श्रेण स श्रेण सुरेण सु खे क्खस ।
दे षी ळक सुदे देण वेर उक् ।
कु ळकेण सुवेण देण सुक्क स के ।
अव खे सु सुवेणस देण देणस वे ॥ १३६

अनुकम्पाद्यतिशयो यदि कश्चिद्विवक्ष्यते ।
न दोषः पुनरुक्तोपि प्रत्युतेयमलंकृतिः ॥१३७॥

हेस सु वहे खेणस सुदे वर ळस ।
साल दे ळस देणस वेण दे देण के ।
अर वेण दे अ खेणस सुक्क वेण दे ।
दे दे के सुक्क दे देणस स ळक ॥ १३७

हन्यते सा वरारोहा स्मरेणाकाण्डवैरिणा ।
हन्यत चारुसर्वाङ्गी हन्यते मञ्जुभाषिणी ॥१३८॥

འདོད་པ་ རྒྱལ་སྐྱོད་ མིན་ ཁབ་པ་ཡིས། །
 བྱད་མེད་ མཚོག་ དེ་ བཅོམ་ བར་གྱུར། །
 ཡན་ལག་གུན་མཚོས་ བཅོམ་ བར་གྱུར། །
 འཇམ་ བར་སྐྱོགས་ མ་ བཅོམ་ བར་གྱུར། ॥ 232

निष्कर्णार्थम्युक्तानि सशय जनयन्ति चेत् ।
 वचांसि दोष एवासौ ससंशय इति स्मृतः ॥१३६॥

ཇིས་པའི་དོན་དུ་ རབ་སྐྱུར་བའི། །
 ཚོག་རྣམས་ཉིད་གྱིས་ གཤམ་དེ་ན། །
 བེ་ཚོམ་སྐྱེད་བར་གྱེད་ ན་ འདི། །
 བེ་ཚོམ་ལན་ ཞེས་ རབ་དུ་བཤད། ॥ 232

मनोरथप्रियालोकरसलोलक्षणे सखि ।
 आराद्धृत्तिरसौ माता न क्षमा द्रष्टुमीदृशं ॥१४०॥

རི་འདོད་ རྒྱལ་ལ་ ལྷ་བ་ ཡི། །
 རི་ལ་ མིག་གཤོ་ བློགས་མ་དང་། །

शुभं च भद्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ।
 मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ॥ १००

ईदृशं सशयायैव यदि जातु प्रयुज्यते ।
 स्यादलकार एवासौ न दोषस्तत्र तद्यथा ॥१४१

मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ।
 मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ।
 मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ।
 मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ॥ १०१

पश्याम्यनङ्गजातङ्कलङ्घितां तामनिन्दिताम् ।
 कालेनैव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां किं नस्त्वदाशया ॥१४२॥

मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ।
 मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ।
 मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ।
 मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च मन्त्रं च ॥ १०२

कामार्त्ता घर्मसन्तप्तेत्यनिश्चयकर वचः ।
युवानमाकुलीकर्तुमिति दूत्याह नर्मणा ॥१४३॥

अदोद वस मात्रैर रस ऊ वस मादुद ।
लेस व देस मेद सुद पदे कौम ।
केद अकेस कुस व अमुमास पर के ।
सु सुद र्के कुस कुस र्के ॥ १०३

उद्देशानुगुणोऽर्थानामनुदेशो न चेत्कृतः ।
अपक्रमाभिधानन्तं दोषमाचक्षते बुधाः ॥१४४॥

अदोद वसुतु हेस सु मसुतु पर के ।
मादुद हेस वसुतु म सुस व ।
केस व कुसस पर मदके वकेद पदे ।
कुकेदु दे के मपद दे दवेद ॥ १००

स्थितिनिर्माणसंहारहेतवो जगतामजाः ।
शम्भुनारायणाम्भोजयोनयः पालयन्तु वः ॥१४५॥

འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་གནས་པ་ དང །
 ལྷུལ་དང་ འཇིག་རླུ་ མ་སྦྱིས་ བ །
 བདེ་འབྱུང་ སྲིད་མེད་ ཚུ་སྦྱིས་ ཀྱི །
 རྒྱུ་གནས་ཅན་ ལྷིས་ རྩོད་རྣམས་ སྤངས་ ॥ ༡༧༧

यत्नः सम्बन्धविज्ञानहेतुः कोपि कृतो यदि ।
 कमलङ्घनमप्याहुर्न दोष सूरयो यथा ॥१४६॥

འགྲོལ་བ་ ཇིས་བར་ཤེས་བའི་ རླུར །
 གང་ཡང་ གལ་དེ་ འབད་ ལྷུས་ན །
 ཇིས་བ འདས་ ཀྱང་ རྒྱོན་མེན་བར །
 མཁས་བ་རྣམས་ རྗི་ རྒྱུ་ལྷེ་ དཔེར ॥ ༡༧༩

बन्धुत्यागस्तनुत्यागो देशत्याग इति त्रिषु ।
 आद्यान्तावायतल्लेशौ मध्यमः क्षणिकज्वरः ॥१४७॥

གཉེན་གཏོང་བ་ དང་ ལུས་གཏོང་དང་ །
 ལྷུལ་གཏོང་ ཞེས་བ་ གསུམ་པོ་ ལ །

དང་པོ་ མཐའ་མ་ ཉེན་མོངས་ རིང་ །
བར་མ་ ལྷན་ ཅེག་ གཏུང་ བ་ རོ་ ॥ १७७

शब्दहीनमनालक्ष्यलक्ष्यलक्ष्यणपद्धतिः ।
पदप्रयोगो शिष्टेष्टो न शिष्टेष्टस्तु दुष्यति ॥१४८॥

མཚོན་བྱ་ མཚན་ ཉིད་ ལམ་ མ་ མཚོན་ །
ཚོག་སྐྱོར་ མཚོག་ བྱིས་ མི་འདོད་ བ།
ལྷན་ ཉམས་ ཡིན་ ཏེ་ མཚོག་ བློས་ དག།
འདོད་ བ་ ཉིད་ མི་ ལྷོན་ མ་ ཡིན་ ॥ १७८

[49a] अवते भवते बाहुर्महीमर्णवशकरी ।
महाराजन्नजिज्ञासौ नास्तीत्यासां गिरा रसः ॥१४९॥

ས་གཞི་ ལྷ་མཚོའི་ ལྷེ་ རགས་ཅན་ །
ལྷལ་ཚེན་ ལྷོད་ལ་ དཔུང་ བ་ ལྷུང་ །
ཞེས་ བ་ ལེས་འདོད་ མེད་ བས་ན་ །
ཚོག་ འདི་ལ་ མི་ ཉམས་ ཡོད་མིན་ ॥ १७९

दक्षिणाद्रेरुपसरन् मारुतश्चूतपादपान् ।
 कुरुते ललिताधूतप्रबालाकुरुशोभिनः ॥१५०॥

कुं यीं री लस कुं वदुं वरि ।
 कुं वीसं कुं नरिं कं वसुं री ।
 री वर कुं वं वीं कुं यी ।
 कुं वुं वरिं वं वरं वरं वरं ॥ १५०

इत्यादिशास्त्रमाहात्म्यदर्शनालसचेतसां ।
 अपभाषणवद्भाति न च सौभाग्यमुज्झति ॥१५१॥

तेस रीवस वसुं वरिं वरं वरं वरं ।
 कुं वं वरं वरं वरं वरं वरं ।
 कुं वरं वरं वरं वरं वरं वरं ।
 कुं वरं वरं वरं वरं वरं वरं ॥ १५१

श्लोकेषु नियतस्थानं पदच्छेदं यतिं विदुः ।
 तदपेतं यतिभ्रष्टं श्रवणोद्वेजनं यथा ॥१५२॥

ཚོགས་བཅད་རྣམས་ལ་ ཇེས་བའི་གནས།
 ཚོག་གི་གཞོན་མཚམས་ བལ་བསོ་རིག།
 དེ་ཉམས་གཞོན་མཚམས་ ཉམས་པ་ ལྷེ།
 ཉན་པ་ དགའ་མིན་ ལྷིད་དེ་ དཔེར། ॥ ༡༡༩

स्त्रीणां सगीतविधिमयमादित्यवशो नरेन्द्रः
 पश्यत्यक्लिष्टरसमिह शिष्टैरमेत्यादि दुष्टं ।
 कार्याकार्याण्ययमविकलान्यागमेनैव पश्यन्
 वश्यामुर्वी वहति नृप इत्यस्ति चौष प्रयोगः ॥१५३॥

བྱད་མེད་ རྣམས་ ཀྱི་ ཡང་ དག་ བཞོན་ བའི་ ཚོག་ རོ་ ཉམས་
མེད་ བ་ འདིར།
 མཚོག་ རྣམས་ དང་ འགྲོགས་ མི་ དབང་ ཉི་ མའི་ རིགས་
འདིས་ ལྷ་ བྱེད་ ལ་ རོགས་ ལྷོན།
 བྱ་ དང་ བྱ་ མེན་ མ་ ཚང་ མེད་ ལ་ ལྷང་ ཉིད་ ཀྱིས་ བི་
ལྷ་ བྱེད་ ཅིང་།
 མི་ བདག་ འདི་ ཡིས་ དབང་ བྱུང་ ས་ འཛིན་
ཅེས་ པ་ དེ་ ལྷང་ ལྷོད་ བ་ ཡོད། ॥ ༡༡༩

लुप्ते पदान्ते [49b]शिष्टस्य पदत्व निश्चित यथा ।
तथा सन्धिविकारान्तं पदमेवेति वर्ण्यते ॥१५४॥

ईःङ्ङरः क्कैमः क्कस्रः क्क्रीसः यः य ।
ङ्ङमः क्क क्कैमः क्क्रीदः क्क्रीदः यः य ।
देः वः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः ।
क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः ॥ १५५ ॥

तथापि कटु कर्णानां कवयो न प्रयुञ्जते ।
ध्वजिनी तस्य राज्ञः केतूदस्तजलदेत्यदः ॥१५६॥

देः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः ।
क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः ।
क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः ।
क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः क्कैमः ॥ १५६ ॥

वर्णानां न्यूनताधिक्ये गुरुलघ्वयथास्थितिः ।
यत्र तद्भिन्नवृत्त स्यादेष दोषः सुनिन्दितः ॥१५६॥

བཀ་དུ་ ཡི་གེ་ཆད་ ལྷག་ དང་ ।
 ལྷི་ཡང་ རི་ལྷ་བཞིན་ མི་ བཀས་ ।
 དེ་ནི་ ལྷེ་བ་ལྷོ་རྩ་ ཉམས་པ་ ལྷེ་ ।
 ལྷོ་ནི་ འདི་ ཡི་གེ་དུ་ ལྷོ་བའོ་ ॥ १५७

इन्द्रपादाः शिशिराः स्पृशन्तीत्यूनवर्णता ।
 सहकारस्य किसलयान्यार्द्राणीत्यधिकाक्षरम् ॥१५७॥

ལྷ་བའི་འོ་དེ་ལྷོ་ བསྐྱེད་བས་ ।
 རི་ག་ཅེས་ ཡི་གེ་ ཉུང་བ་ཉིད་ ।
 མ་ཉ་ཀུ་རའི་ལོ་འདབ་ བས་པ་ བ་རྣམས་ ।
 ལྷེ་མ་ཞེས་ ཡི་གེ་ ལྷག་བའོ་ ॥ १५८

कामेन बाणा निशिता वियुक्ता मृगक्षणास्वित्ययथागुरुत्वं ।
 मदनबाणा निशिताः पतन्ति मृगक्षणास्वित्ययथालघुत्व ॥१५८॥

འདོད་བས་ མདའ་རྗོན་ རི་དགས་མིག་ཅན་ལ་ ।
 རྣམ་བའ་འཕངས་ཞེས་ ལྷི་བ་ རི་བཞིན་མིན་ ।

མཚོས་བའི་མིག་ཅན་དག་ལ་སྤོས་བྱེད་ཀྱི།

མདའ་རྒྱན་རྒྱང་ཞེས་ཡང་བ་ཇི་བཞིན་མིན། ༥༥

न संहितां विवक्षामीत्यसन्धानं पदेषु यत् ।

तद्विसन्धीति निर्दिष्टं न प्रगृह्यादिहेतुकं ॥१५६॥

བསྐྱས་པ་བརྗོད་བར་མི་འདོད་ཅེས།

ཚོག་ལ་མཚམས་སྟོར་མེད་པ་གང་།

ཡ་སྤོས་ལ་སོགས་སྐྱ་མེད་པ།

དེ་ནི་མཚམས་སྟོར་བྲལ་ཞེས་བསྟན། ༥༦

मन्दानिलेन चरता अङ्गनागण्डमण्डले ।

उत्तमुद्भेदि [50a]धर्माग्भो नमस्यस्मन्मनस्यपि ॥१६०॥

མཁའ་དང་བདག་གི་ཡིད་ལ་ཡང་།

རྒྱང་གི་དལ་བྱ་རྒྱ་བ་ཡིས།

བྱད་མེད་འགམ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་ལ།

རྒྱ་གྱི་རྒྱ་རྒྱས་སེལ་བར་བྱེད། ༥༧

[मानेऽर्थे इह शीर्यते स्त्रीणां हिमन्मृतौ प्रिये ।]
 आसु रात्रिष्विति प्राक्षैरक्षातं न्यङ्गमीदृश ॥१६१॥

. |
 |

सकक सौ नदौ ल उसा नदौ नदु ।
 सप्तसप्तसप्त उप्तसप्तसप्त सैमाः श्रीः सुदे ॥ १७१

देशोऽद्रिवनराष्ट्रादिः कालो रात्रिन्दिवर्त्तवः ।
 नृत्यगीतप्रभृतयः कला कामार्थसंश्रयाः ॥१६२॥

सैः नमसाः पुण्यः नमोः लः सैः नमसाः पुण्य ।
 उक्तं सककं दुसाः दुसाः लः सैः नमसाः दुसा ।
 नदौ नदौ नदौ नदौ नदौ नदौ नदौ ।
 नदौ नदौ नदौ नदौ नदौ नदौ नदौ ॥ १७५

चराचराणां भूतानां प्रवृत्तिलोकसंज्ञिता ।
 हेतुविद्यात्मको न्यायः सस्मृतिः श्रुतिरागमः ॥१६३॥

འཇུང་པོ་ ལྷ་ དང་ མི་ལྷ་བའི།
 འཇུག་པ་ འཇིག་རྟེན་ མིང་ཅན་ནོ།
 རིགས་པ་ བཏམ་ཚོགས་ རིག་ བཏག་ཉིད།
 ཐོས་ བཅས་ བསྐྱེད་པ་ ལུང་ ཉིད་དེ། ॥ १७२

तेषु तेषु यथारूढं यदि किञ्चित्प्रवर्त्तते ।
 कवेः प्रमादाद्देशादिविरोधीत्येतदुच्यते ॥१६४॥

དེ་དེར་ ཇི་ལྟར་ བྲགས་པ་ བཞིན།
 མིན་པར་ བལ་ཏེ་ རབ་བྱུགས་ན།
 ལྷན་ངག་མཁན་པོ་ བག་མེད་ ལས།
 འདི་ནི་ ལུང་ མོགས་ འགལ་ཞེས་ བརྗོད། ॥ १७३

कर्पूरपादपास्पशीं सुरभिर्मलयानिलः ।
 कलिङ्गवनसंभूता मृगप्रायमर्तगजा ॥१६५॥

བ་སུར་ ཀླང་འཇུང་ལ་ རིག་བའི།
 མ་ལ་ལ་ ལྷང་ རི་བཟང་ཅན།

ग षीक्ष्णं यैः नमसाः श्लेषः पति ।
 श्रुतः सौ नमः किं रीः नमसाः सप्त ॥ १७४

चोलाः कालागुरुश्यामः कावेरीतीरभूमयः ।
 इति देशविरोधिण्या वाचः प्रस्थानमीदृशम् ॥ १६६ ॥

उः यः गुः घेः रीः दशः सति ।
 अः गः तः किं नमः सौः ॥
 ज्ञेयः सः प्रुयः दः नमः सः यी ।
 केषः सीः नमः सः नदीः नः श्रे । १७५

पद्मिनी नक्तमुन्निद्रा स्फुटत्यह्नि कुमुद्वती ।
 मधुहृत्फुल्लनिचुलो निदाघो[50b]मेघदुर्दिनः ॥ १६७ ॥

यद्गुः उः किं सः कः सः श्रुतः ।
 उः सः गुः श्रुतः सः सः सः ।
 दः श्रुतः किं किं उः सः सः श्रुतः ।
 सः सः गः नमः किं श्रुतः श्रुतः सः श्रुतः ॥ १७७

श्रव्यहंसगिरो वर्षाः शरदामत्तवर्हिणी ।
हैमन्तो निर्मलादित्यः शिशिरः श्ठाभ्यचन्दनः ॥१६८॥

एद वदे श्लुंके दसुनं वङ्गनं देस ।
श्लुंके के वःसुंशुंके वः श्ले ।
दसुनं श्लुंके श्ले वः दे वःश्ले ।
दसुनं के उंशुंके वःश्लुंके वः देस ॥ १६८

इति कालविरोधस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
मार्गः कलाविरोधस्य मनागुद्दिश्यते यथा ॥१६९॥

केस वः दे दे दे दे दे दे दे दे दे ।
दे दे दे दे दे दे दे दे दे दे दे दे ।
श्लुंके दे दे दे दे दे दे दे दे दे ।
दे दे दे दे दे दे दे दे दे दे दे दे ॥ १६९

वीरशृङ्गारयोर्भावौ स्थायिनौ क्रोधविस्मयौ ।
पूर्णसप्तस्वरः सोयं भिन्नमार्गः प्रवर्त्तते ॥१७०॥

दसः दः क्षिण मदिःयिन सुिनःग्री ।
 मरुतःतः सिः दः य सःकःने ।
 दसुतः मरुतः क्षिण म दिः दमःने ।
 मःदः यःदुः मःदुःमःदुः ॥ १७०

इत्थं कलाचतुःपद्यौ विरोधः साधु नीयतां ।
 तस्याः कलापरिच्छेदे रूपमाविर्भविष्यति ॥१७१॥

मःदुः मःदुः मःदुःमःदुः ॥ १७१
 मःदुः मःदुः मःदुःमःदुः ॥ १७२
 मःदुः मःदुः मःदुःमःदुः ॥ १७३
 मःदुः मःदुः मःदुःमःदुः ॥ १७४

आधूनकेशरो हस्ती तीक्ष्णशृङ्गास्तुरंगमः ।
 गुरुसानोयमेरुण्डो निःसारः खदिरद्रुमः ॥१७५॥

मःदुः मःदुःमःदुः ॥ १७५
 मःदुः मःदुःमःदुः ॥ १७६

ཨེ་རུ་འདི་སྐྱིང་པོ་སྟེ།

སྐྱིང་པོ་སྟེ་སྐྱིང་པོ་སྟེ། ॥ ११५

इति लौकिक एवायं विरोधः सर्वगर्हितः ।

विरोधो हेतुविद्यासु न्यायाख्यासु निदर्श्यते ॥१७३॥

ཅེས་པ་འདི་ནི་འཇིག་རྟེན་པ།

ཉིད་དང་འགལ་བ་ཀུན་གྱིས་སྤྲོད།

རིགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལྟན་ཚོགས་ཀྱི།

རིག་པ་དང་འགལ་བ་ལྟན་པར་བྱ། ॥ ११३

सुगतैः संस्कृताभङ्गः सत्यमेवोदितोऽपिचेत् ।

तथापि सा चकोराक्षी स्थितैवाद्यापि मे हृदि ॥१७४॥

བདེ་གཤེགས་འདུས་བྱས་འཇིག་པར་ནི།

གསུངས་པ་བདེན་མེད་དེ་ལྟ་ནའང་།

ཅ་ཀོར་ཡི་མིག་ཅན་དེ།

བདག་གི་སྐྱིང་པོ་ད་དུང་གནས། ॥ ११४

कापिलैरसदुद्भूतिः [51a]स्थान पवोपवर्णयते
असनामेव दृश्यन्ते यस्मादस्माभिर्दुद्भवाः ॥१७५॥

शेनः कुं वः कुं वः शेनः कुं वः गु ।
शुः वः वः वः वः वः वः वः ।
शेनः वः वः वः वः वः वः वः ।
शेनः कुं वः वः वः वः वः वः ॥ १७५ ॥

गतिर्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र दृश्यते ।
अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते ॥ ॥१७६॥

शेनः वः वः वः वः वः वः वः ।
शुः वः वः वः वः वः वः वः ।
शेनः वः वः वः वः वः वः वः ।
शुः वः वः वः वः वः वः वः ॥ १७६ ॥

अनाहिताग्नेयोप्येने जातपुत्रा वितन्वते ।
विप्रा वैश्वानरीमिष्टिमहिष्टाचारभूषणाः ॥१७७॥

མེ་མི་ བཞག་པ་ མ་ཡིན་ ཡང་།
 བྱ་སྐྱེས་ བྱམ་ཟེ་ མ་ཉམས་པའི་།
 ལྷོད་པས་ བརྒྱན་པ་ འདི་དག་ནི་།
 བོ་ལྷན་རྒྱ་ མཚོད་ ལྷོད་བྱེད་ ॥ ॥॥॥

असावनुपनीतोपि वेदानधिजगे गुरोः ॥
 स्वभावशुद्धः स्फटिको न संस्कारमपेक्षते ॥१७८॥

འདི་ནི་ ཚོག་ མ་བྱས་ ཀྱང་།
 ལྷ་མ་དག་ལས་ རིག་བྱེད་ བསྐྱབས།
 རང་བཞིན་ དག་པའི་ཤེས་དག་ནི་།
 འདྲ་བྱེད་ བཞག་པ་ ལྷོས་པ་མེད་ ॥ ॥॥~

विरोधः सकलोप्येष कदाचित्कविकौशलात् ।
 उत्क्रम्य दोषगणानां गुणवीथिं विगाहते ॥१७९॥

ལྷོན་ནི་ མཐའ་དག་འདི་ལ་ ཡང་།
 དེས་ འགའ་ ལྷན་ངག་མཁན་མཁས་པས།

ལྷོན་གྱི་ བྲངས་ ལས་ རབ་ འདས་ འས
 ཡོན་ ཏན་ ལས་ རྗེ་ རྣམ་ བར་ འཛོན་ ॥ ११७

तस्य राज्ञः प्रभावेन तदुद्यानानि जह्विरे ।
 आर्द्राशुकप्रवालानामास्पदं सुरशाखिनां ॥१८०॥

ལྷུ་ལ་ བོ་ རེ་ ཡི་ མཐུ་ ཡིས་ རྗེ་ །
 རེ་ ཡི་ ལྷོན་ ཚལ་ ལྷ་ རྣམས་ ལྱི་ །
 ལྷོན་ བ་ ཡལ་ འདབ་ ལོས་ ལྷུ་ བ་ །
 ལྷན་ བ་ དག་ ལྱི་ ལནས་ ལྷུ་ ལྷུར་ ॥ १२०

राज्ञां विनाशपिशुनश्चचार खरमारुतः ।
 धुन्वन्कदम्बरजसा सह सप्तच्छदोद्गमान् ॥१८१॥

ལྷུ་ལ་ བོ་ འཛོན་ བ་ ལས་ ལ་ ལྷོན་ བ་ །
 དག་ བོ་ ཡི་ རྗེ་ ལྷུར་ དག་ ལྷུ་ །
 འདབ་ བལྷན་ ལས་ འལྷུརས་ ལྷོན་ ལྷོན་ ཚེང་ །
 ལ་ དལྷ་ ཡི་ ལྷུ་ ལ་ དང་ འལྷོ་ ལས་ ॥ १२१

दोलातिप्रेरणत्रस्त[51b]बधूजनमुखोद्गतं ।
कामिनां लयवैषम्याद्भेयं रागमवर्धयत् ॥१८२॥

सिंहास'गुहा' र'म'सु'स' सु'ग'स'स' ।
सु'स' सु'स'स' स'स' स'स'स' ।
सु'स' स'स'स'स' स'स' स'स'स' ।
सु'स'स'स'स' स'स' स'स'स'स' ॥ १८२ ॥

ऐन्दवादर्चिर्षः कामी शिशिरं हृष्यवाहनं ।
अबलाविरहकृशविह्वलो गणयत्ययं ॥१८३॥

सु'स'स' स'स'स'स' स'स' स'स'स' ।
सु'स'स'स' स'स'स'स' स'स' स'स'स' ।
सु'स'स'स'स' स'स'स'स' स'स' स'स'स' ।
सु'स'स'स'स' स'स'स'स' स'स' स'स'स' ॥ १८३ ॥

प्रमेयोप्यप्रमेयोसि सकलोप्यसि निष्कलः ।
एकस्त्वमप्यनेकोसि नमस्ते विश्वमूक्तये ॥१८४॥

नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ।
 नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ।
 नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ।
 नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ॥ १८५ ॥

यथाभावात् पापदुष्कृतानां पत्नी पाञ्चालकन्यका ।
 स्वर्णानामप्रणोक्त्यास्मीदृशो हि विधिरीदृशः ॥ १८६ ॥

नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ।
 नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ।
 नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ।
 नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ॥ १८७ ॥

गण्डाभ्यांलक्रियास्त्रिंशः मार्गाः सुकरदुष्कराः ।
 गुणा द्वाव्याञ्च काव्यानामिति संक्षिप्य वर्तितः ॥ १८८ ॥

नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ।
 नानुसन्ध्यायः अन्तः नानुसन्ध्यायः ।

झुङ्ग'दवा'कृष्ण'गौ' अङ्ग'द' अङ्ग' ।

ने अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' ॥ १८ =

व्युत्पन्नबुद्धिरमुना विधिदर्शितेन

मार्गेण दोषगुणयोर्वशवर्तिनीभिः ।

वाग्भिः कृताभिसरणो मदिरक्षणाभि

ध्न्यो युवेव रमते लभते च कीर्त्तिम् ॥ १८७

झुङ्ग'पुत्र' वङ्ग'पद' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' ।

अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' ।

अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' ।

अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' ॥ १८८

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यालंकारे दुष्करदोषविभागो नाम

तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ॥

लेख' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' ।

अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' अङ्ग' ॥

CORRIGENDA

Chap I 17^b वर्यनै. for व*र्यनै , 27^o ཡུ་ཤུ་སའི་ for ཡུ་ཤུ་སའ་ ,
 39^a साम्या (') for शाम्या in Tib. transliteration , 85^a विद्यते for *क्षुन ,
 86^b भवाद्दश for भवाद्दश , 98^b स्तनन्त्यो for स्तनन्त्यो .

Chap. II 14^a रये for रये , 37^b मारो for मारो , 40^o स्पर्श for
 स्पर्श , 45^a मौक्ष for मौक्ष ; 66^b नखाचिषः for नखाचिष , 77^a इदमार्द्र for इद-
 मारद्र , 9 नतिते for नतिते , 86^a राजहंसो for राजहंसा , 86^o वक्त्रा for वक्त्रा ,
 86^b क्षुन for क्षुन , 91^a निर्दहति for निदहति and निर्दय for निदयं ,
 125^a नीरु for नीरु , 142^b मालु for मालु , 182^b मनुक्षु
 for मनुक्षु ; 206^a सोयं for सायं , 207^a छेन for छेन , 233^b उरुन for
 उरुन , 234^a षष्टि for दृष्ट , 237^a विकार्ये for विकार्य , 279^b क्षुन for
 क्षुन ; 282 रगवन्त्र for रसत्त्वत्र , 287^a सुनय for सुनय , 306^b दक्षिता
 for दक्षिता ; 312^a रयेन यजेन for रयेन यजेन , 313^b मालु वरुक्षेन for
 मालु वरुक्षेन .

Chap III. 17^a हिन for हिन ; 19^o वर्यन्ते for वर्यन्ते , 13^a स्पृशेद्दशा
 for स्पृशेद्दशा . 31^a क्षुन for क्षुन , 39^o क्षु for क्षु , 54^a वर्ज्य for वर्ज्य ,
 63^b रयु for रयु , 69^a सुन for सुन , 80^o गुन for
 गुन , 83^a रयु for रयु , 158^o वाणा for वाणा , 184^a विश्वमूर्त्तये
 for विश्वमूर्त्तये . 185^a पारङ्गुपुत्राणां for पारङ्गुपुत्राणां .